कृपया ध्यान दें

- 1. यदि आप साधना सामग्री मंगवाना चाहते हैं।
- 2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
- 3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।

तो आप जोधपुर कार्यालय के फोन नम्बरों पर सम्पर्क करें

8890543002

साधकों को सभी सामग्री स्पीड पोस्ट से भेजी जाती है। अतः साधना सामग्री मंगाने के लिए सामग्री की न्यौछावर राशि के साथ डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खाते में जमा करवा दें तथा जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण, अपना पूरा पता पिनकोड एवं फोन नम्बर के साथ हमें उपरोक्त नम्बर पर वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे, जिससे आपको साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त हो सकेगी।

बैंक खाते का विवरण

खाते का नाम	: नारायण मंत्र साधना विज्ञान
बैंक का नाम	: स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड	: SBIN0000659
खाता नम्बर	: 31469672061

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

1 वर्ष सदस्यता 405/- — शिव यंत्र एवं माला 405 + 45 (डाक खर्च) = 450

1 वर्ष सदस्यता 405/- — लक्ष्मी यंत्र एवं माला 405 + 45 (डाक खर्च) = 450

आनो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वत:

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

।। ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः।।

जीवन में शिवत्व अर्थात् सम्पूर्णता प्राप्ति हेतु : माँ गौरी-महालक्ष्मी सा.

जटिल से जटिल कार्य की सहज सिद्धि हेतु : वज्र प्रस्तारिणी साधना

भाग्योदय में आ रही सभी अड़चनों को दूर करने हेतु : भाग्योदय साधना

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद
पूजनीया माताजी
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक
श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक
राजेश कुमार गुप्ता

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

साधनाएँ

ENGLISH

विशेष

स्तोत्र

आयुर्वेद

आयुर्वेद

प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
श्री अरविन्द श्रीमाली
द्वारा
नारायण प्रिण्टर्स
नोएडा
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय :
हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से
प्रकाशित

मूल्य (भारत में)
एक प्रति 40/-
वार्षिक 405/-

सम्पर्क
सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368
नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039
WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अत: उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अत: इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अत: पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

ऋग्वेद रूपं सामार्थ वैद्य, एज्यं परेवं भवतां सदैव।
औदार्यचिन्त्यं औजस्यमूर्तिं; निखिलेश्वरत्वं सततं प्रणम्यम्।

हे गुरुदेव! आप ऋग्वेद के साक्षात् प्रतिमूर्ति हैं, सामवेदीय अर्थों में वैद्य हैं, आप परममूर्ति और यज्ञ स्वरूप हैं। ओजस्वी होते हुए भी उदार चिन्तन युक्त हैं, निखिल रूप में आप सिद्धों, साधकों और शिष्यों द्वारा सतत् वन्दनीय और अभिनमनीय हैं।

दीक्षा

किसी महात्मा के पास एक व्यक्ति नित्य ही जाता रहता था। उसका एक ही आग्रह था, कि उसे ईश्वर से साक्षात हो जाए। वह नित्य नियम से जाता, बैठता और अपनी जिज्ञासा प्रकट करता। शनै:-शनै: उसे कुछ हताशा और खीझ होने लग गई, कि-यों नहीं उसे ईश्वर से साक्षात हो रहा, जबकि वह गुरुदेव के आश्रम रोज ही जाता था। उनके दर्शन भी करता था और भजन-कीर्तन में बढ़-चढ़कर भाग लेता था। प्रारम्भ में तो उसने प्रकटत: कुछ नहीं कहा, किन्तु गुरु तो गुरु ही होते हैं, वे उसके मनोभावों को भलीभांति पढ़ ही रहे थे। जब उसके चेहरे से विक्षोभ प्रकट ही होने लगा, तो एक दिन उन महात्मा ने उसे बुला कर पूछ ही लिया, कि वह खिन्न क्यों रहता है। उत्तर में वह व्यक्ति फट पड़ा और बोला–''यदि आप जैसे महात्मा के सान्निध्य में रहकर भी मैं ईश्वर का साक्षात नहीं कर सकता, तो मेरा आपके पास आने का अर्थ ही क्या?'' उत्तर में वे महात्मन् मुस्कुराए और उसे अपने साथ नदी तक चलने को कहा। वह व्यक्ति प्रसन्न हो गया, कि आज संभवत: मुझे कोई दीक्षा मिलेगी और मैं ईश्वर के दर्शन कर लूंगा। नदी के तट पर पहुंच कर उन महात्मा ने उस व्यक्ति को भी अपने साथ नदी में उतरने को कहा और बीच धारा में पहुंचने पर उसका सिर बलात् पानी के भीतर दबा दिया तब कुछ क्षण बाद छोड़ दिया। व्यक्ति ने ऊपर निकल कर हांफते-हांफते पूछा–''आपकी इस क्रिया का क्या अर्थ?'' उत्तर में उन्होंने उस व्यक्ति से पूछा–''जब तुम पानी के भीतर थे, तब तुम्हारे मन में क्या भाव था?'' व्यक्ति ने उत्तर दिया–''काश! मुझे किसी भी तरह श्वास लेने का अवसर मिल जाए।'' तब महात्मा ने कहा–''जिस दिन तुम्हें इतनी छटपटाहट ईश्वर के लिए पैदा हो जाएगी, उसी दिन तुम उसके साक्षात्कार का उपाय भी प्राप्त कर लोगे।'' गुरु दीक्षा के माध्यम से गुरु अपने शिष्य के मन में भी आलोड़न-विलोड़न का तीव्र दबाव देते हैं और जिसके मन में ईश्वर प्राप्ति की लालसा होती है, वह एक झटके से अपना सिर उठा कर ईश्वर का साक्षात कर ही लेता है। आग्रह सत्य है, तो उस चैतन्य सत्ता की पावनता शुद्ध वायु की तरह प्राप्त होगी ही जिस प्रकार श्वास-प्रश्वास। यही दीक्षा की क्रिया का रहस्य है। जिसने दबाव सहा, वही तो दीक्षा के मर्म में प्रवेश कर सका। दीक्षा द्वारा गुरु छटपटाहट ही पैदा करते हैं।

नव और प्रकृति–क्या सम्बन्ध है, इन दोनों के बीच?
क्या प्रकृति का मानव-जीवन पर कोई प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष प्रभाव है?
इस प्रकार के अनेकों प्रश्न हमारे सामने हैं, और इन प्रश्नों का
उत्तर ज्ञात करने के लिए आवश्यक है,
कि पहले जाना जाय, प्रकृति कहते किसे हैं?

आत्मिक आनन्द की ओर

अगर आप समझते हैं, कि प्रकृति का अर्थ मात्र पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, पर्वत, नदी, सागर अथवा हिमालय ही है, तो आप गलत सोचते हैं, क्योंकि ये सब प्रकृति नहीं है, अपितु सर्वत्र व्याप्त परब्रह्म प्राणश्चेतना के विभिन्न स्वरूप हैं। जिस प्रकार प्रत्येक मानव इस प्राणश्चेतना से पूरित है, उसी प्रकार पेड़-पौधे, पशु और यहाँ तक कि पत्थर और हिमालय जैसे ऊँचे पर्वत भी इस प्राणश्चेतना से ही अभिभूत हैं।

प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को पहली बार स्पष्ट किया था 'आद्य शंकराचार्य' ने, जब उनके समक्ष यही प्रश्न रखे गये हैं–

– क्या प्रकृति और साधक एक हैं?

– क्या इन दोनों में कोई भेद है?

– क्या इनमें कोई गहरा सम्बन्ध है?

भगवतपाद आद्य शकराचार्य ने अपने ग्रंथ 'शंकरभाष्य' में उल्लेख किया है, कि प्रकृति से तात्पर्य है–नैतिक, आध्यात्मिक तथा मानवीय मूल्य। जीवन के विचार, चिंतन तथा धारणा को ही प्रकृति की संज्ञा दी गई है।
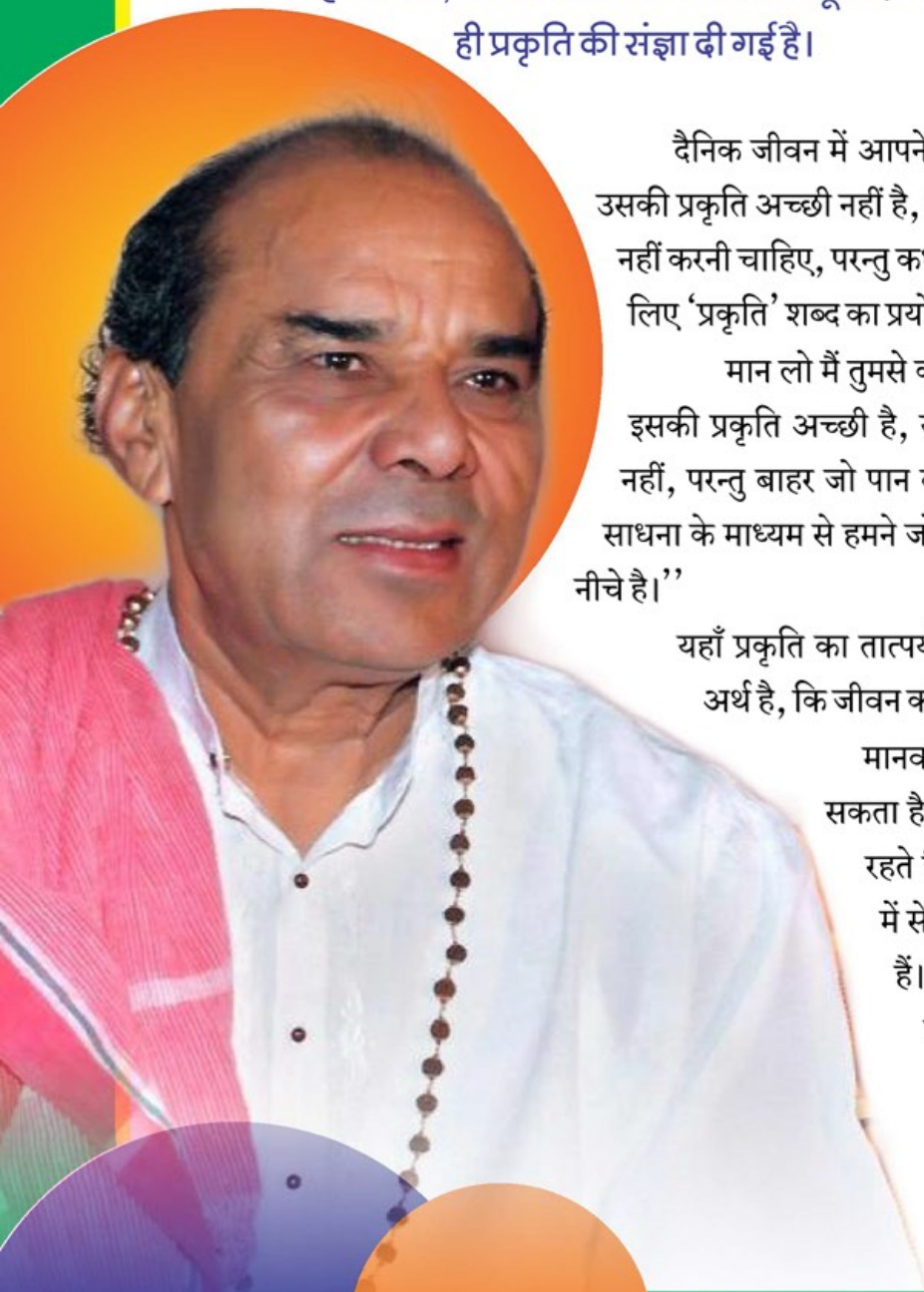
दैनिक जीवन में आपने किसी को जरूर कहते हुए सुना होगा, कि उसकी प्रकृति अच्छी नहीं है, इसलिए तुमको उससे बोलचाल एवं मित्रता नहीं करनी चाहिए, परन्तु कभी आपने विचार किया, कि किसी व्यक्ति के लिए 'प्रकृति' शब्द का प्रयोग क्यों किया जाता है?

मान लो मैं तुमसे कहूँ–''तुमको इस व्यक्ति से मिलना चाहिए, इसकी प्रकृति अच्छी है, यह समझदार है, व्यर्थ किसी से लड़ता भी नहीं, परन्तु बाहर जो पान वाला है, उसकी प्रकृति सर्वथा विपरीत है। साधना के माध्यम से हमने जो स्तर प्राप्त किया है, वह उस स्तर से काफी नीचे है।''

यहाँ प्रकृति का तात्पर्य पेड़-पौधे नहीं, अपितु इस शब्द का गूढ़ अर्थ है, कि जीवन को आप किस रूप में लेते हैं।

मानव जाति को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहले हैं वे व्यक्ति, जो हमेशा निद्रा में डूबे रहते हैं। अधिकांश मनुष्य इसी प्रकृति के हैं, तुम में से भी अधिकतर चौबीस घंटे नींद में डूबे रहते हैं। तुम चलते हो, खाते हो, देखते हो, परन्तु ये सभी कार्य निद्रावस्था मं ही करते रहते हो...

ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि तुमको ज्ञात ही नहीं, और न ही तुम में यह जानने की इच्छा ही है कि भविष्य में तुम्हारे जीवन में क्या घटित होने वाला है?

—क्या है जीवन का उद्देश्य?

—क्या है जीवन का महत्त्व?

—क्या है जीवन का वास्तविक चिंतन?

इन प्रश्नों पर हम कभी विचार ही नहीं करते।

व्यक्ति जीवन-पथ पर चलता रहता है, और उसके समीप से हजारों लोग गुजरते रहते हैं, परन्तु वह एक निद्रा में अपनी राह चलता रहता है, बिना यह जाने, कि इस पथ पर उसके हमसफर कौन हैं।

मनुष्य राक्षस वृत्तियों से इतना प्रभावित हो जाता है, कि उसे इस बात का भी भान नहीं रहता, कि किससे कैसा व्यवहार करना चाहिए, उसके क्या आदर्श होने चाहिए, क्या विचार होने चाहिए?

इस प्रकार के जीवन को शास्त्रों में 'भ्रम' तथा 'माया' कहा गया है, और 'दुर्गा सप्तशती' में कहा गया है—

या देवी सर्वभूतेषु निद्रा रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

सम्पूर्ण मानव जाति माया के आवरण में आबद्ध सुप्तावस्था में स्थिर है। इसी कारण सभी निराधार उद्देश्यों को ही पूर्ण करने की होड़ में लगे हैं, ऐसा जीवन वास्तव में लक्ष्यहीन है, तथा पूर्णतः माया से आबद्ध है।

इसलिए धन और निद्रा दोनों को ही माया कहा गया है। इस संसार में व्यक्ति के विचार उसके स्वार्थ के ही प्रतिबिम्ब हैं, और इसी कारणवश जीवन के वास्तविक चिंतन को वह पकड़ नहीं पाता, नहीं जान पाता, कि मानव-जीवन का क्या तथा कितना महत्व है।

जरा विचार करें—''क्या हमारे जीवन का लक्ष्य, उद्देश्य निद्रा में लीन रहना ही है?''

बिना उद्देश्य के, बिना किसी चिंतन के हम एक जीवन के बाद दूसरा जीवन भ्रम के वशीभूत हो व्यतीत कर देते हैं, परन्तु जिस क्षण हम अपने-आप को माया से परे करते हैं, तो प्रकृति से जुड़ जाते हैं, जितना हम सांसारिक भ्रमों से दूर होते जाते हैं, उतना ही अपने को प्रकृति के निकट पाते हैं... और यही मार्ग है तंत्र का।

'ईश्वर को भी प्रकृति का वास्तविक स्वरूप बताया गया है, क्योंकि वह माया से परे हैं। इसी कारण ईश्वर सान्निध्य प्राप्त करने का अर्थ है—भ्रमों से, माया से मुक्ति। इसका तात्पर्य यह है, कि 'माया' तथा 'प्रकृति' दो भिन्न-भिन्न शब्द हैं।

जहाँ भी माया है वहाँ 'मीन' है, मीन का अर्थ है—अहं और घमंड। ऐसे चिंतन के वशीभूत हो व्यक्ति सोचता

है, कि वही सबसे शक्तिशाली है... कौन मेरा क्या बिगाड़ सकता है।

वह सोचता है... जिस दिन मेरे पास धन आयेगा, उस दिन देखूंगा कि कौन मेरे सामने टिक पाता है... आज मेरे पास कुछ नहीं है, तो क्या? कभी न कभी तो मैं अवश्य ही सभी कुछ प्राप्त कर लूँगा।''

तुम अपने-आप को झूठी सांत्वना देते हो, कि आज तुम्हारे पास सुख नहीं है, परन्तु एक दिन ऐसा आयेगा, जब तुम अवश्य ही सुख-समृद्धि प्राप्त कर लोगे। यदि कोई व्यक्ति अपनी स्त्री से संतुष्ट नहीं हो पाता, तो वह पर-स्त्री से सुख की आकांक्षा करता है, और अगर वह भी उसे सुख नहीं दे पाती, तो वह वेश्या के पास चला जाता है।

मात्र कुछ क्षणों के विषय-सुख के लिए वह इतना नीचे गिर जाता है... और इस प्रकार का निम्न जीवन जीते हुए वह मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, क्यों वह सुखों को खोजता है माया में।

माया से रहित जीवन की ओर पहला कदम है मन में यह विचार उठना, कि मुझे कहीं शांति से जाकर बैठना चाहिए।

एक ध्यान कक्ष बनाया ही इसलिए जाता है, कि उसमें बैठे व्यक्ति तक कोई शोर, कोलाहल न पहुँचे, तथा वहाँ शांति से बैठ कर व्यक्ति कुछ क्षण चिंतन कर सके–वह कौन है और क्यों है? इतना सोचना मात्र भी, माया से एक इंच परे हटना है, क्योंकि इसी अवस्था में यह ज्ञात होता है, कि तंत्र का लक्ष्य और जीवन का उद्देश्य है–तीसरे नेत्र का खुलना तथा छठी इंद्रिय का जागरण, जो व्यक्ति इस चिंतन को प्राप्त नहीं करता, वह सदैव मायाजाल में ही फंसा रहता है। इसी कारण व्यक्ति उस समय तक साधक, पूजक, तांत्रिक नहीं बन सकता, जब तक कि वह प्रकृति से एकात्मयता नहीं स्थापित कर लेता।

साधक बनने की ओर पहला कदम है–अपनी सम्पूर्ण वृत्तियों का त्याग। वह इसलिए, क्योंकि शास्त्रों में कहा गया है–शिष्य बनने की प्रक्रिया मृत्यु के समान है... मृत्यु!.... अहं की मृत्यु, वासनाओं की मृत्यु तथा घमंड की मृत्यु।

'तैत्तरियोपनिषद' में कहा गया है–''जिस क्षण व्यक्ति अपने वास्तविक स्वरूप को जानने का प्रयत्न करने लगता है, उसी क्षण वह माया से दूर होना प्रारम्भ कर देता है, यही तरीका है प्रकृति से एकरूप होने का, अपना सही स्वरूप जानने के लिए बाह्य: किसी से सहायता की आवश्यकता नहीं।''

नींद और मृत्यु एक दूसरे के प्रतिरूप ही हैं। मृत्यु चिरनिद्रा ही तो है, परन्तु मृत्यु से पूर्व जीवित रहते हुए भी हम इस निद्रा में लीन रहते हैं, और अपनी कल्पनाओं के जाल में खोये-खोये जीवन यों ही बिता देते हैं।

मानव अपना पूर्ण जीवन छल, झूठ, पाप के दल-दल में व्यतीत कर देता है, और जब वह जीवन के अंतिम क्षणों में पहुँचता है, तब
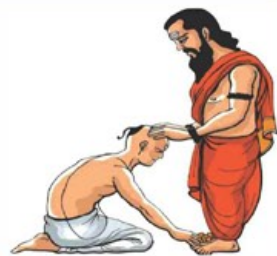
उसे पश्चात्ताप होता है, कि उसने अपना पूरा जीवन नष्ट कर दिया तथा अपने-आप को कभी पहिचानने का प्रयत्न नहीं किया, तभी उसे एहसास होता है, कि पत्नी, बच्चे, धन-दौलत... कुछ भी तो उसका नहीं!!

एक बार किसी ने मुझसे पूछा-''साधक का प्रकृति से क्या सम्बन्ध है?''

इसका उत्तर है-''बिना प्रकृति से एकरूप हुए व्यक्ति साधक नहीं बन सकता, और जब तक तुम सांसारिक मायाजाल से दूर नहीं हो जाते, तब तक प्रकृति के निकट नहीं पहुँच सकते। सामान्यत: मानव के पास उसकी कल्पनाओं के अतिरिक्त कुछ और नहीं होता, और वास्तव में माया ही हमारी कल्पनाओं का आधार है।''

गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं-''अर्जुन! जब तुम अपनी अंत:प्रज्ञा जाग्रत कर स्थितप्रज्ञ हो जाओगे, तो तुम्हारे सभी भय दूर हो जायेंगे, तब तुम जान सकोगे, कि तुम्हारे सामने कुछ नहीं है, और जो भी तुम्हारे समक्ष खड़े हैं, उनसे तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है, तभी तुम यह युद्ध कर सकोगे, जीत सकोगे।''

तुम्हारे सामने भी एक युद्ध है-जीवन का युद्ध। इस युद्ध में अट्ठानवे प्रतिशत लोग हार जाते हैं, क्योंकि उनके साथ कृष्ण जैसा कोई व्यक्तित्व नहीं, जो उन्हें मार्गदर्शन दे सके, गीता के उपदेश दे सके।

श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं-''अपना गांडीव उठाओ।''

-''कैसे उठाऊं गांडीव? कैसे चलाऊं बाण? मेरे सामने मेरे पितामह खड़े हैं, जिन्होंने बचपन से मुझे अपनी गोद में उठाया है।''

-''गोद में उठाया है, तो क्या? ये वास्तव में तेरे पितामह नहीं। इस जीवन में से पहले ये एक सौ पच्चीस बार तेरे पितामह बन चुके हैं, पच्चीस बार तेरे बेटे बने होंगे, पच्चीस बार तेरे पिता... पच्चीस बार शत्रु... अगर यह युद्ध तुम्हें जीतना है, तो स्थितप्रज्ञ बनना होगा, और अगर हारना ही है, तो तुम्हारी इच्छा।''

मैं भी तुम्हें यही तथ्य समझा रहा हूँ कि यह जीवन महाभारत के युद्ध के समान है, हजारों शत्रु तुमसे युद्ध करने में तल्लीन हैं, इन सबको तुम्हें पराजित करना है। आशा है मेरे शब्दों के गूढ़ अर्थ को तुम समझ पा रहे होंगे।

जीवन के इस युद्ध में तुम्हें इसी जन्म में विजय प्राप्त करनी होगी-जिस क्षण यह विचार तुम्हारे मस्तिष्क में स्थान पा लेगा, तुम इस युद्ध में विजय हासिल करने की क्षमता प्राप्त कर लोगे।

ये सब सगे-सम्बन्धी, धन-दौलत, ऐश्वर्य और सुख मात्र भ्रम हैं। अपने चारों ओर तुम जिस मृगमरीचिका को देखते हो, उससे तुम्हें कोई लाभ नहीं होने वाला। अधिकतर व्यक्ति निद्रावस्था में ही स्वप्न देखते हैं, परन्तु तुम तो जागते हुए भी दिवास्वप्नों में खोये रहते हो। ये स्वप्न, ये कल्पनायें कभी सत्य नहीं हो सकतीं। अगर ऐसा होता, तो आज विश्व के हर व्यक्ति के पास कार होती,
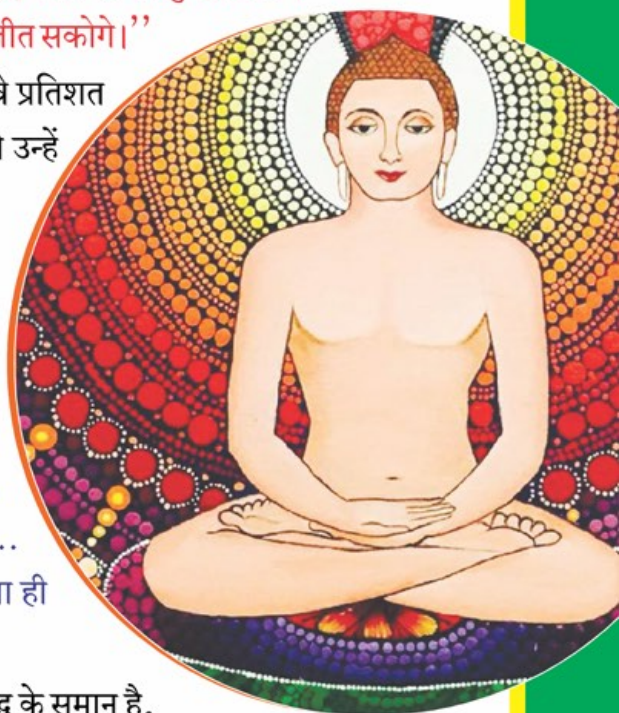
जबकि वास्तविकता यह है, कि एक अरब लोगों में केवल पचास लाख गाड़ियाँ हैं, तो क्या यह मात्र स्वप्न नहीं है, कि तुम दो-दो कारों की कामना कर रहे हो?

—इसलिए मैं कहता हूँ, कि तुम जागते हुए भी सो रहे हो।

—तुम्हारी दो आँखें अवश्य खुली हैं, परन्तु तीसरी आँख अर्थात् दिव्य चक्षु बंद है। जब भी तुम कुछ क्षण खाली होते हो, तो स्वप्न लोक में खो जाते हो। हजारों-लाखों मनुष्य इस प्रकार दिवास्वप्नों में खोकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

अमेरिका में व्यक्ति कई-कई बार विवाह करता है और हर बार तलाक लेता है। वह सोचता है, कि अगली बार अवश्य ही उसे वैवाहिक सुख प्राप्त होगा, परन्तु सत्य यह है, कि अगर उसे सुख की ही आकांक्षा थी, तो पहले विवाह द्वारा ही प्राप्त कर लेता। जिसे वह असली सुख समझता है, वह मात्र उसकी कल्पना है।

इसी प्रकार तुम भी अपना जीवन भ्रम में जी कर व्यर्थ व्यतीत कर रहे हो, इस प्रकार के जीवन में कोई नवीनता नहीं है, इस अवस्था में पहुँचने के लिए कोई विशेष प्रयत्न, कोई परिश्रम नहीं करना पड़ता, क्योंकि भ्रम तो मात्र कल्पना की ही एक उपज है।

मानव शरीर को जलाने के बाद केवल एक मुट्ठी राख बचती है, यही तुम्हारे शरीर का असली मूल्य है। जिस प्रकार का चिंतन अभी तुम्हारे मन में चल रहा है, वह तुम्हें निरन्तर मृत्यु की ओर धकेल रहा है।

जब तुम यह जानोगे, कि तुम्हें जीवन के उस पथ पर चलना है, जो कि प्रकृति, ईश्वर, ब्रह्म की ओर ले जाता है, तब तुम्हारे जीवन से माया का आवरण अपने-आप ही हट जायेगा... और जितना अधिक तुम प्रकृति के समीप जाओगे, उतने ही तुम साधक बन पाओगे, इसीलिए प्रकृति और साधक को समानार्थक बताया गया है।

अगर तुम समझते हो, कि आरामदायक मखमल के गद्दे पर बैठ तुम ईश्वर के नाम पर जाप कर सकोगे, तो तुम्हारा यह सोचना गलत है, तुम ऐसा अवश्य कर सकते हो, परन्तु इससे तुम्हें लाभ क्या होगा?

जब तुम सांसारिक सुखों से विमुक्त होकर, प्रकृति से एकरूपता स्थापित कर लोगे, तभी ब्रह्म से साक्षात्कार कर पाओगे, और तभी तुम जान पाओगे, कि जीवन वास्तव में क्या है।

बुद्ध भी अपने पुत्र, पत्नी, परिवार का त्याग कर ही दिव्यता का बोध प्राप्त कर सके थे। तभी उनकी छठी इंद्रिय, उनका सहस्रार जाग्रत हुआ और उन्होंने इस परम सत्य को जाना।

—मनुष्य प्रकृति के साथ एकात्मयता स्थापित कर सकता है।

—अपने शरीर में ही प्रकृति को उतार सकता है।

जब उन्हें दिव्य ज्ञान, बुद्धत्व की प्राप्ति हुई, तब अपने राज्य में वापिस लौटै और वे सबसे पहले अपने महल में पहुँचे। साधारण वस्त्र पहने जब उन्होंने

अपने महल में प्रवेश किया, तो सामने अपनी पत्नी यशोधरा तथा अपने पुत्र राहुल को पाया।

यशोधरा ने कहा–''तुम आ गये सिद्धार्थ! बहुत हर्ष हुआ, आओ मेरे पास बैठो।''

बुद्ध ने कहा–''कौन सिद्धार्थ?''

–''मैं तो एक भिक्षुक हूँ तथा भिक्षा मांगने आया हूँ। मैं आया हूँ यह देखने के लिए, कि मेरे मन में तुम्हारे प्रति अभी भी कोई भाव तो नहीं। मैं जानता चाहता हूँ, कि मैंने कितना अपने-आप को समझा है, कितना मैं अंदर उतरा हूँ। अगर मैंने सत्य को जाना है, अगर मैंने अंत: प्रज्ञा को पूर्ण जाग्रत किया है, तो मेरे मन में यह भाव नहीं आयेगा, कि तुम मेरी पत्नी हो। एक दिन तो मृत्यु के साथ यह भाव समाप्त होना ही है, तो क्यों न मैं इसे अभी, इसी क्षण समाप्त कर दूँ।''

मैं समझता हूं, कि बुद्ध प्रकृति और यशोधरा माया स्वरूपा थीं। दोनों एक-दूसरे के सामने खड़े थे, परन्तु बुद्ध की स्थिति प्रज्ञता पर उसका कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं हुआ।

उन्होंने सोचा–''इन भावनाओं का एक न एक दिन तो अंत होना ही है। आज नहीं, तो बीस वर्ष बाद मेरी मृत्यु होगी तथा मेरे शरीर को अग्नि में समर्पित होना ही पड़ेगा, तब यशोधरा और राहुल दोनों रोयेंगे और दु:खी होंगे। यह तो एक दिन होगा ही, तो क्यों न मैं इन सांसारिक बंधनों को आज से ही समाप्त कर दूं।''

बुद्ध ने वास्तव में ज्ञान चक्षुओं को खोल कर अपना जीवन व्यतीत किया। जो व्यक्ति ऐसी जाग्रत अवस्था में नहीं है, वह मायाजाल में जकड़ा रहता है, परन्तु जिस क्षण वह अपनी आत्मा जाग्रत करने की क्रिया प्रारम्भ करता है, जिस क्षण वह साधना के मार्ग को चुनता है, उसका वास्तविक निर्मल स्वरूप स्पष्ट होकर उभरता है।

ठीक इसी प्रकार तुम अपनी असली प्राकृतिक छवि को जाग्रत कर सकते हो, और यही छवि तो ब्रह्म की है, जिसका साक्षात्कार कर तुम अखण्ड आनन्द और शांति प्राप्त कर सकते हो। इस प्रकार तुम अपने लक्ष्य, ज्ञान एवं बुद्धत्व को प्राप्त कर सकते हो, और यह सत्य है, कि हर कोई बुद्ध बन सकता है।

परन्तु ऐसा चिंतन प्राप्त करने के बाद भी हो सकता है, कि तुम श्मशान में पहुंच जाओ, मृत्यु कोई नई चीज नहीं है। जो हमेशा निद्रावस्था में जीते हं, मृत्यु तो उसकी भी होती है, इसलिए आत्म-जागरण के बारे में सोचने मात्र से कुछ नहीं होगा। तंत्र और छठी इंद्रिय के बारे में पढ़ने मात्र से तुम आत्म-साक्षात्कार नहीं कर पाओगे, उसे प्राप्त करने के लिए तो तुमको ही कुछ करना होगा।

मैं समझता हूँ, कि जब तुम कहते हो, कि तुम योगी अथवा साधक हो, तो यह मात्र प्रवंचना है। तुम अगर कहते हो, कि तुम शिष्य हो, तो तुम्हें ज्ञात होना चाहिए, कि साधक से अगली अवस्था शिष्य बनने की है। शिष्य बनने के लिए यह आवश्यक है, कि तुम्हें ठोकर लगे, क्योंकि ऐसा होने पर ही तुम्हारी तंद्रा भंग होगी, ठोकर लगने पर ही तुम सचेत होओगे, पर यह नहीं कहा जा सकता, कि

जीवन में कब तुम्हें यह ठोकर लगे।

अर्जुन को चालीस साल की उम्र तक ठोकर नहीं लगी, परन्तु इकतालीसवें वर्ष कृष्ण ने उसे झकझोरा–''जो ये सांसारिक बंधन तुम देख रहे हो, ये सब मिथ्या हैं। तुम्हें अपने सम्बन्धियों को मारना ही पड़ेगा, इनकी मृत्यु तो निश्चित है ही, तुम नहीं मारोगे, तो कोई और मारेगा।''

बुद्ध को भी ठोकर लगी। एक दिन वह अपने नगर में अपने रथ से गुजर रहे थे, तो उन्होंने एक हृष्ट-पुष्ट जवान व्यक्ति को देखा। कुछ देर बाद उन्होंने एक और आदमी को देखा, जो बिल्कुल असहाय, कमजोर तथा वृद्ध था।

सिद्धार्थ ने सारथी से पूछा–''यह कौन है?''

सारथी ने कहा–''यह एक वृद्ध व्यक्ति है?''

सिद्धार्थ ने कभी भी ऐसा कमजोर, बूढ़ा व्यक्ति नहीं देखा था। उन्होंने इक्कीस साल की उम्र तक अपना पूरा जीवन अपेन महल के ऐश्वर्य और सुख में व्यतीत किया था। यह पहला अवसर था, जबकि वे अपने महल से बाहर आये थे।

आश्चर्य से भरे स्वर में उन्होंने फिर प्रश्न किया–''वृद्ध से तुम्हारा क्या तात्पर्य है?''

सारथी बोला–''उम्र की अधिकता तथा रोगों से शरीर ढलने के कारण व्यक्ति वृद्ध हो जाता है... जो भी युवा है, वह एक न एक दिन अवश्य वृद्ध होगा।''

''तो क्या मैं भी बूढ़ा हो जाऊंगा।''–सिद्धार्थ ने हतप्रभ हो पूछा।

–''अवश्य।''

रथ आगे बढ़ चला और कुछ ही दूरी पर कुछ लोग एक शव को कंधों पर उठाये लिए जा रहे थे।

सिद्धार्थ ने पूछा–''यह क्या है?''

सारथी बोला–''कोई मर गया है, उसी का शरीर है यह।''

–''इसे कहाँ ले जा रहे हैं?''

–''जलाने के लिए।''

–''क्यों?''

–''क्योंकि यह बूढ़ा हो गया था और अब मर गया है।''

सिद्धार्थ ने आश्चर्य से पूछा–''तो क्या मरने के बाद व्यक्ति को जला देते हैं?''

–''हाँ! जला देते हैं, और कोई तरीका है ही नहीं।''

–''जब मैं मर जाऊंगा... तो?''

–''तो क्या? सांसारिक परम्परा के अनुसार आपकी

देह को भी जला देंगे।''

बुद्ध को ठोकर लगी। उसी क्षण उन्होंने प्रतिज्ञा की–''मैं इस प्रकार नहीं मरूँगा, मैं अपने जीवन को यों ही व्यर्थ नहीं जाने दूँगा, मैं जीवित रहूँगा, जाग्रत अवस्था प्राप्त करूँगा तथा सबको प्राप्त कराऊंगा।''

उस एक ठोकर से ही बुद्ध को चेतना प्राप्त हुई ओर उसी का परिणाम है, कि आज भी संसार के इक्कीस देशों में बौद्ध धर्म जीवित है तथा बुद्धत्व अमर है, और यह सब हुआ केवल एक व्यक्ति के प्रयासों से, जिसे ठोकर लगी और जिसने जाग्रत अवस्था को प्राप्त किया।

इस अवस्था को प्राप्त करने का एकमात्र उपाय है, गुरु द्वारा कठोर परीक्षा। हो सकता है, कि तुम्हें जीवन में ठोकर लगे... और गुरु चाहते हैं, कि ऐसा शीघ्र ही हो, क्योंकि तभी शिष्य पहिचान पायेगा, कि उसके जीवन का वास्तविक लक्ष्य, वास्तविक उद्देश्य है–कुण्डलिनी जागरण।

गुरु चाहते हैं, कि शिष्य दिव्यता के इस मार्ग पर अग्रसर हो... और तुम इस पथ पर पहुँचोगे, तो तुम्हें अपने-आप एहसास होगा, तुम्हें स्वयं में संतोष होगा, कि तुम इस पथ पर खड़े तो हो, औरों को तो इस पथ का ज्ञान भी नहीं। इस पथ पर बुढ़ापा तुम्हें तंग नहीं करेगा, मृत्यु तुम्हारे निकट आने का साहस नहीं करेगी, तथा तुम्हारा जीवन श्मशान में जाकर खाक नहीं हो जायेगा। इस क्रिया, इस पथ को तंत्र कहते हैं, जिसकी सहायता से मनुष्य प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर एकात्मय हो जाता है।

–और जब वह प्रकृति के मूल स्वरूप को जान लेता है, तब वह साधक बन जाता है, तब वह शिव बन जाता है... और सद्‌गुरु ऐसा ही शिष्य को आशीर्वाद देते हैं, जिससे वह सही अर्थों में साधक बन सके, प्रकृतिमय बन सके, शीघ्र ही उसको ठोकर लगे और वह जाग्रतावस्था प्राप्त करे।

गुरु ही सफलता का स्रोत

इस संदर्भ में एक और प्रश्न उभर कर सामने आता है। यह तो हम जान ही गये, कि साधक और प्रकृति एक है, किन्तु–

भौतिक जगत में रहते हुए हम किस प्रकार प्रकृति को आत्मसात कर सकते हैं?

इस प्रश्न का उत्तर 'वायु पुराण' से प्राप्त किया जा सकता है। मैंने तुम्हें बताया, कि तुम निद्रावस्था में ही पड़े रहते हो। तुम्हारे सभी क्रियाकलाप इसी अवस्था में चलते रहते हैं–ठीक उसी व्यक्ति की भाँति, जो कि एक स्वप्न को सत्य मान कर उसमें भाग लेता है।

स्वप्न में व्यक्ति देखता है, कि वह उड़ रहा है, कभी कुछ कर रहा है। प्रतिदिन वह नया स्वप्न देखता है, और कभी तो इतना भयानक, कि उसका सारा शरीर पसीना-पसीना हो जाता है, और अचानक वह डर के मारे चीख पड़ता है...

जब स्वप्न लोक एक मिथ्या
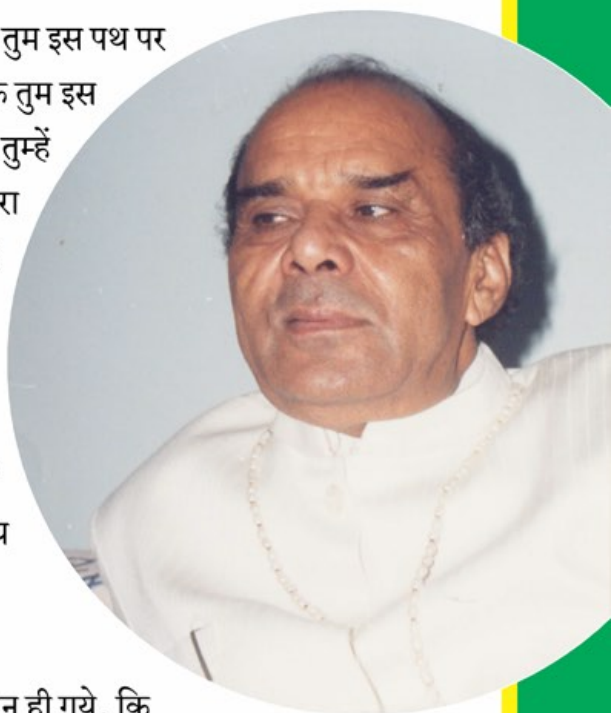
जगत है, तो फिर तुम्हारा शरीर उससे प्रभावित क्यों होता है?

पर प्रभाव तो अवश्य होता है, क्योंकि जैसे ही तुम आँखें खोलते हो, तो पाते हो, कि तुम्हारा शरीर कांप रहा है और तुम्हारे कपड़े पसीने में भीगे हुए हैं इसका तात्पर्य यह है, कि स्वप्न अच्छा हो या बुरा, तुम अवश्य ही उसमें भाग लेते हो, और अगर मैं तुमसे पूछूँ कि तुम क्यों इतने परेशान हो, तो तुम कहोगे, कि तुम सो रहे थे और तुमने एक स्वप्न देखा... यही तो मैं तुम्हें कह रहा हूँ, कि तुम इस क्षण भी सो रहे हो और स्वप्न लोक में खोये हो।

उपरोक्त प्रश्न आध्यात्मिक और भौतिक जगत की भिन्नता पर आधारित है, कहा गया है–

।। जागर्ति वै तत् जगत्।।

अर्थात् ''जाग्रत व्यक्ति ही जगत में रह सकता है।'' जगत का अर्थ है–दुनिया, इसका एक और अर्थ है–जाग्रत अवस्था। इससे तात्पर्य यह है कि, निद्रा में लीन व्यक्ति जगत में नहीं रह सकता।

इस दुनिया के लिए एक और शब्द है– 'संसार'। संसार शब्द दो शब्दों के संयोग से बना है–सम्+सार; इसका अर्थ है, कि जो अवस्था मेरी प्रकृति के अनुरूप है, वही संसार है। अगर मैं कामुक हूँ, तो सुन्दर स्त्री को देखना मुझे अच्छा लगेगा, चूंकि स्त्री सौन्दर्य मेरी प्रकृति के अनुरूप है, इसीलिए वही मेरे लिए संसार है। संसार में और भी वस्तुएँ हो सकती हैं, परन्तु व्यक्ति को उसी में प्रसन्नता अनुभव होती है, जो कि उसकी प्रकृति के समरूप है, इसलिए उसे मात्र उसी वस्तु में सार की अनुभूति होती है। इस प्रकार 'सम' यानि अनुकूलता, तथा 'सार' यानि पूर्णता मिलकर उस व्यक्ति के लिए संसार बनते हैं।

परन्तु यहाँ मैंने संसार शब्द का नहीं, अपितु 'जगत' शब्द का प्रयोग किया है। दोनों का शाब्दिक अर्थ दुनिया ही है, परन्तु संसार–भ्रम, माया, निद्रा की अवस्था है, तथा जगत–जाग्रत अवस्था का परिसूचक है।

तुम अभी संसार में हो और मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं, कि तुम्हें ठोकर लगे, जिससे कि इस निद्रावस्था से तुम जाग सको... और ठोकर तुम्हें तभी लगेगी, जब तुम्हारी कोई अत्यंत प्रिय वस्तु तुम से दूर हो जायेगी, मिट जायेगी... तभी तुम्हें सत्यता का आभास होगा।

मैंने अभी बुद्ध के जीवन की एक घटना का उल्लेख किया। जब वे पहली बार महल से गये... तो संसार में वे लिप्त थे, परन्तु लौटे तो जगत में थे।

दूसरे शब्दों में पहले तो वे स्वप्न में माया के अभीभूत हो जीते रहे, परन्तु बाद में वे जाग गये और उन्होंने यह दूसरी अवस्था तब प्राप्त की, जब उन्हें ठोकर लगी। बीस वर्ष तक वे निद्रावस्था में थे, और जब उन्हें ठोकर लगी, तो उन्हें एहसास हुआ, कि वे एक मृगमरीचिका के पीछे दौड़ रहे हैं। उसी क्षण उन्होंने अपने

पुत्र, अपनी पत्नी और सभी भौतिक सुखों का परित्याग कर दिया।

उनके पास भी सुन्दर पत्नी, अद्वितीय धन-वैभव, मान-सम्मान सब कुछ था। वास्तव में उनके पास वह सब कुछ था, जो कि एक व्यक्ति की इच्छा होती है, पर ज्यों ही सत्य उनके सामने उजागर हुआ, उन्होंने उसी क्षण सब कुछ त्याग दिया। उन्हें ठोकर लगी और वे निद्रा से जाग गये, जबकि तुम लोगों को तो अभी तक अपने जीवन में ठोकर भी नहीं लगी।

तुमने देखा होगा, कि दरवाजों एवं खिड़कियों को अगर कई सालों तक खोलें नहीं, तो उनमें जंग लग जाता है, और फिर कितना ही जोर लगायें, पर वे खुलने से इन्कार कर देते हैं, और तब एक बहुत ही शक्तिशाली व्यक्ति की आवश्यकता पड़ती है, जो कि उन दरवाजों पर लगातार चोट कर सके, और जब धीरे-धीरे जंग छूटता है, तो वे दरवाजे खुल जाते हैं और हवा का एक शीतल एवं सुगन्धित झोंका उनमें प्रवेश कर पाता है।

तुमने भी अपनी आत्मा के द्वारों को पिछले पन्द्रह बीस सालों से बंद कर रखा है... और आज उनमें जंग लग गया है। गुरु को निरन्तर इन पर पाद-प्रहार करते रहना पड़ेगा, वे जानते हैं, कि ये द्वार बहुत मजबूत हैं, और उन्हें खोलते वक्त उनके पैरों में चोट लग सकती है। उन्हें पता है, कि ये बड़ी ही मुश्किल से खुलेंगे... पर फिर भी अगर वे सफल रहे, तो उनका... मेरा सौभाग्य ही होगा।

पता नहीं जब तुम्हारी आत्मा के द्वार खुलेंगे, तो तुम अपने-आप को गौरवान्वित अनुभव करोगे अथवा नहीं, पर निश्चय ही वह क्षण गुरु के लिए स्वर्णिम क्षण होगा, जब तुम अपनी निद्रा से जाग जाओगे, क्योंकि गुरु के जीवन का एकमात्र लक्ष्य अपने शिष्यों को सत्य से परिचित करवाना होता है।

निश्चित ही इस गहरी निद्रा से उठकर तुम वास्तविक आनन्द को अनुभव कर सकोगे। इस समय तुम माया से आबद्ध हो, और जब भी तुम्हें कोई स्वप्न दिखाता है, तो तुम खुश हो जाते हो। अगर गुरु तुमसे कहें-''चिंता न करो, आने वाला समय अत्यंत अनुकूल है, मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ...'' तुम इन शब्दों को सुनकर अत्यंत प्रसन्न हो जाते हो।

अगर गुरु के पास जाओ और कहो-''मेरी पत्नी अत्यधिक बीमार है।''

स्वाभाविक है गुरु यही कहेंगे-''चिंता की कोई बात नहीं, वह जल्दी ही ठीक हो जायेगी।''

वे यह नहीं कह सकते, कि वह मर जायेगी, क्योंकि वे जानते हैं, तुम क्या सुनना चाहते हो।

हालांकि गुरु तुम्हें झटका दे सकते हैं और तुम्हें इस गूढ़ निद्रा से जगा सकते हैं, पर अगर वे ऐसा करते हैं, तो तुम उनके पास नहीं जाओगे। तुम कहोगे कि ये गुरु तो बेकार हैं, और इनके पास जाने से कोई लाभ नहीं, क्योंकि अगर हम उनके सामने कुछ परेशानी रखेंगे, तो वे कहेंगे, कि तुम और बीमार हो जाओगे।

-और यह सत्य भी हो सकता है, हो सकता है, कि तुम अगले पांच

साल बीमार रहो, पर तुम सत्य के गरल को सहन नहीं कर पाते, और जैसे ही गुरु सत्य कहेगा, तो तुम बोलोगे–''गुरु जी! ऐसे अशुभ वचन न बोलिये...'' और फिर तुम उनके पास कभी नहीं जाओगे।

इसलिए गुरु को विवश हो कहना पड़ता है–''सब ठीक हो जायेगा।''

उनको ये शब्द इसलिए कहने पड़ते हैं, क्योंकि तुम लोगों को भ्रम में रहने की आदत सी हो गई है, तुम में सत्य को झेलने की क्षमता नहीं है, तुम ठोकरों की चोट को सहन नहीं कर सकते। केवल वह व्यक्ति जो हर संघर्ष, हर स्थिति सहर्ष स्वीकार करता है, जो दृढ़ संकल्पयुक्त होता है, वही इन ठोकरों की चोट को झेल पाता है।

ऐसा व्यक्ति हर प्रकार की मुसीबतें झेल सकता है, और दूसरों के जीवन को तब्दील करने की क्षमता भी रखता है, समस्त ब्रह्माण्ड उसके कदमों तले रहता है, और राजा भी ऐसे संन्यासी के समक्ष सिर झुकाता है।

राजा कहता है, कि वह उसकी हर इच्छा पूरी करने को तैयार है, पर संन्यासी उत्तर देता है–''हटो! मेरे पांव छोड़ो, तुम मुझे क्या दे सकते हो?''

केवल एक वास्तविक संन्यासी, योगी ही ऐसा कह सकता है, तुम नहीं। वह इसलिए, क्योंकि तुम अभी इस लायक नहीं। केवल वह व्यक्ति जिसने अपनी आत्मा को पहिचान लिया, जिसने अपने तीसरे नेत्र को जाग्रत कर लिया, वही समस्त ऐश्वर्य त्याग कर भी पूर्ण आनन्दमय रह सकता है।

मैंने कहा, कि तुम स्वयं नींद से नहीं उठ सकते। सभी महान पुरुष, चाहे वह तुलसी हों, सूर हों, बुद्ध हों अथवा महावीर हों, सभी ने पहले कठिनाइयाँ झेली और ठोकर खाई... पर ठोकर खाने के बाद वे और मजबूत होकर उठे। वे भी हमारी तरह सामान्य मनुष्य ही थे। वे कोई जन्म से ही महान नहीं थे, असल में तुम में और बुद्ध में कोई अंतर नहीं। शायद तुम भी एक दिन उन जितनी ऊंचाइयों को छू पाओ... पर इसके लिए पहले तुम्हें बहुत सी परेशानियाँ झेलनी पड़ेंगी।

यदि गुरु तुम्हारी परीक्षा लेने हेतु तुम्हें परेशानियों एवं कठिनाइयों में झोंकता है, और अगर तुम्हें यह सब कुछ बुरा लगता है, तो यकीन मानो तुमसे दुर्भाग्यशाली तो कोई है ही नहीं, क्योंकि पहले तो गुरु प्राप्त होना ही बहुत कठिन है–तुम्हें धूर्त साधु, धोखेबाज और चालबाज बहुत मिल जायेंगे, पर वे गुरु नहीं हो सकते। गुरु तो वास्तव में वे हैं, जो शिष्यों को ठोकर मारकर उन्हें नींद से जगात हैं, जो समाज की रूढ़ियों पर बिजली बन कर टूटते हैं, जो शिष्य को बताते हैं, कि जिस तरह का जीवन वह जी रहा है, वह आत्मसाक्षात्कार का सही पथ नहीं है।

तुम साधना करते हो,आध्यात्मिक साहित्य पढ़ते हो, गुरु में विश्वास रखते हो, गुरु का मार्गदर्शन और सामीप्यता निरन्तर प्राप्त करते हो, तुम में और दूसरे लोगों में बहुत अंतर है। उन्हें यह भी पता नहीं, कि वे कहाँ खड़े हैं, जबकि तुमने अपना पथ चुन भी लिया। जहाँ तुम इस पथ पर

अग्रसर होने को तत्पर हो, वहीं वे नींद में ही कहीं भी चले जा रहे हैं, ठीक एक फेंके हुए दिशाहीन पत्थर की तरह।

अगर तुम इस पथ पर बढ़ ही चुके हो, तो तुम्हें निरन्तर आगे ही बढ़ना है। गुरु हरदम तुम्हारे पीछे खड़े रहेंगे.... और जिस क्षण भी तुम रुकोगे, वे तुम्हें आगे धकेल देंगे और प्रेरित करते रहेंगे।

और गुरु तुमसे पूछेंगे–''क्या मैं तुम्हें आगे धकेलता रहूँ?''

अगर तुम उनके धक्कों को सहन नहीं कर सकते, तो वे रुक जायेंगे। अगर तुम सोते हुए ही अपनी सारी जिन्दगी बिता देना चाहते हो, तो गुरु के प्रयासों का कोई लाभ नहीं होगा, और तब वे भी घर में बैठकर, आराम से कोई पुस्तक पढ़ सकते हैं... पर वास्तविकता यह है, कि गुरु को अपने शिष्यों के बीच में बैठकर ही वास्तविक आनन्द आता है। उनके जीवन का कर्त्तव्य, लक्ष्य और आकांक्षा सब कुछ शिष्यों के लिए समर्पित होता है।

मैंने एक बार कहा था, कि बुद्ध, कृष्ण के कई सौ सालों बाद उत्पन्न हुए थे। अगर हम ध्यान से देखें, तो पायेंगे कि पच्चीस सौ वर्षों का एक चक्र निरन्तर चलता रहता है। कृष्ण और बुद्ध के समय में भी इतने ही वर्षों का अंतर था, और आज जब बुद्ध को गुजरे हुए ठीक पच्चीस सौ वर्ष हो चुके हैं, तो चैतन्यता की एक नई लहर, एक नया व्यक्तित्व इस संसार में उभरेगा। तुम्हारे जीवन का असली सौभाग्य तब है, जब तुम उन्हें पहिचान सको, उन्हें गुरु रूप में पा सको, क्योंकि तभी तुम अपने जीवन को प्रकाशयुक्त बना सकोगे।

अगर कोई तुम्हारे सामने हाथ फैलाता है, तो वे गुरु हो ही नहीं सकते, गुरु तो वे होते हैं, जो कि शिष्यों को परेशानियाँ देकर, उनकी परीक्षा लेते हैं। कबीर ने एक जगह कहा है–

गुरु कुम्हार शिष कुम्भ है, गढ़ि गढ़ि काढ़े खोट।
भीतरि भीतरि सहजि करि, बाहरि बाहरि चोट।।

जिस प्रकार एक कुम्हार बाहर से चोट करता हुआ एवं अन्दर से सहारा देता हुआ मटका तैयार करता है, ठीक उसी प्रकार गुरु भी शिष्य को अपना आध्यात्मिक बल देकर, उसे कठोर परीक्षाओं में से गुजारता है, ताकि शिष्य अत्यधिक उच्च स्तर तक पहुँच सके, क्योंकि जब तक मिट्टी को इन सब परेशानियों से नहीं गुजारा जाता, वह शीतल एवं मधुर जल का कलश नहीं बन सकती, वह मिट्टी का लौंदा ही रहती है...और तुम भीअभी मिट्टी के लौंदे ही हो।

अगर तुम में प्रहार सहन करने की क्षमता है, तो तुम निश्चय ही दीपक अथवा कलश बन जाओगे, अगर नहीं तो तुम्हारा शरीर एक दिन अपनी पहिचान भुला देगा और मिट्टी में ही मिल जायेगा।

समस्त चराचर विश्व पंच तत्त्वों से ही निर्मित हुआ है–भू, जल, अग्नि, वायु, आकाश। भू तत्त्व का अर्थ है–मिट्टी, और मिट्टी में मिल

जाना ही हर व्यक्ति की नियति है।

असल में तुम जो कुछ भी अपने शरीर में देखते हो, वह बाहरी और भौतिक संसार का ही प्रतिबिम्ब मात्र है। जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूँ, कि हर व्यक्ति केवल वही देखना पसंद करता है, जो कि उसकी प्रकृति से मेल खाता है। एक कामी पुरुष केवल सुन्दर स्त्रियों को ही देखना पसंद करता है, वह और किसी चीज में दिलचस्पी लेता ही नहीं। इसी तरह एक लालची दुकानदार ग्राहकों को लूटने पर प्रसन्न होता है, क्योंकि उसकी खुशी धन में ही निहित है।
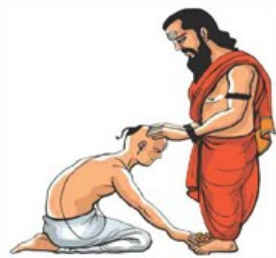
वायु पुराण में स्पष्ट शब्दों में उल्लिखित है–प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह पांच साल का हो अथवा अस्सी साल का, तब तक वह मात्र एक मिट्टी का लौंदा है, जब तक कि एक कुम्हार उसे दीपक अथवा कलश न बना दे, और एक अनुभवी कुम्हार को भी पता होता है, कि यह मिट्टी कैसी है और कितना प्रहार सहन कर सकती है, उसे पता है कि रेत से कलश नहीं बनाया जा सकता।

मानव मात्र एक मिट्टी का लौंदा है, तभी तो जब विश्वामित्र ने त्रिशंकु को स्वर्ग में ले जाना चाहा, तो इन्द्र ने उसे रोक दिया।

इन्द्र ने कहा–''मानव अपने बाह्य शरीर के साथ स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता, क्योंकि वह मिट्टी है.. ओर उसमें पाप की दुर्गन्ध के अलावा कुछ नहीं है।''

यह वास्तविकता है, क्योंकि अगर हम मानव शरीर को चीर-फाड़ कर देखें, तो हमें अन्दर मांस, मल, मूत्र, मज्जा के सिवा कुछ नहीं मिलेगा। इस शरीर में और कुछ है भी क्या? जब ऐसा है, तो हम इस शरीर के लिए क्यों इतने चिंतातुर रहते हैं, क्यों इस शरीर के सौंदर्य के मद में डूबे रहते हैं? अगर तुम्हें कोई शक है, तो एक लाश के पास कुछ घंटे उपरान्त जाकर देखो, तुमको उसमें से दुर्गंध आती हुई प्रतीत होगी, या दो-चार दिन स्नान नहीं करो, तब भी यही स्थित हो जायेगी–फिर तुम्हारे शरीर में ऐसा क्या है, जिस पर तुम इतना घमण्ड करते हो?

इसलिए मैं कहता हूँ, कि तुम जो कुछ भी देखते हो, देखने की इच्छा करते हो, और जिन वस्तुओं को देखकर तुम प्रसन्न होते हो, उन सबका तुम्हारे जीवन में कोई महत्व नहीं है। इस समय सिर्फ तुम वही देखना पसन्द करते हो, जो तुम देखना चाहते हो, अगर मैं कोशिश करके तुम्हें नींद से जगा कर जीवन का वास्तविक आनन्द बताना भी चाहूँ, तब भी तुम उसे एहसास नहीं कर सकते... और वह इसलिए, क्योंकि अभी तुममें वह पात्रता नहीं आई है।

वास्तविक आनन्द को प्राप्त करने के लिए तुम्हें अध्यात्म में प्रवेश करना ही पड़ेगा, और आध्यात्मिक जगत तक तभी पहुँचोगे, जब भौतिक जगत की सीमाएँ लांघ जाओगे।

इस लांघने का अर्थ है–''पापों को शरीर से समाप्त करना, कुण्डलिनी जागरण द्वारा।''

यह शक्ति तुम्हारे शरीर में ही विद्यमान है सुप्तावस्था में, और इसी शक्ति को जाग्रत करना 'कुण्डलिनी जागरण' कहलाता है। व्यक्ति आध्यात्मिक जगत में केवल कुण्डलिनी जागरण की सहायता से ही प्रवेश कर सकता है। इसी जागरण क्रिया का एक अंश है–तृतीय नेत्र अथवा आज्ञा चक्र का खुलना। कुण्डलिनी, सहस्त्रार यानि मस्तिष्क में जाकर अवस्थित होती है, और इसी को छठीं इंद्रिय जागरण कहा जाता है। इस शक्ति का जागरण केवल गुरु-कृपा द्वारा ही सम्भव है, तथा इसके लिए अनेकों कड़ी परीक्षाओं से गुजरना पड़ता है।

तब व्यक्ति न केवल आध्यात्मिक उत्थान की ही ओर अग्रसर होता है, अपितु उन अठारह सिद्धियों को भी प्राप्त कर लेता है, जिनका उल्लेख शास्त्रों में मिलता है। मैं तुम्हें यही आशीर्वाद प्रदान करता हूँ, कि तुम नींद से जाग सको वास्तविक आनंद को अनुभव कर सको प्रकृति से एकात्मयता स्थापित करते हुए जीवन के अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त कर सको।

आशीर्वाद... आशीर्वाद.... आशीर्वाद.....

पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी)

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

जिस तरह आज शिक्षा बढ़ती जा रही है, जागरूकता बढ़ती जा रही है, उसी दर से मानवीय मूल्यों में वृद्धि नहीं हो रही है। यही कारण है कि आज पति और पत्नी दोनों पढ़े-लिखे और शिक्षित होने के बावजूद भी एक दूसरे से प्रेम पूर्ण संबंध दीर्घ काल तक बनाये नहीं रख पाते हैं।

शहरी जीवन में घरेलू तनाव एक आम बात सी हो चुकी है, पति कुछ और सोचता है तो पत्नी कुछ और। पति-पत्नी एक गाड़ी के दो पहिये होते हैं, दोनों में असंतुलन हुआ तो असर पूरे जीवन पर पड़ता है और आपसी क्लेश का विपरीत प्रभाव बच्चों के कोमल मन पर पड़ता है, जिससे उनका विकास क्रम अवरुद्ध हो जाता है। यदि पति-पत्नी में आपसी समझ न हो तो आये दिन नित्य क्लेश की स्थिति बनी रहती है। इस प्रकार के घरेलू कलह का दोष किसी एक व्यक्ति को नहीं दिया जा सकता।

अतः इस यंत्र का निर्माण ही इस प्रकार से हुआ है, कि मात्र इसके स्थापन से वातावरण में शांति की महक बिखर सके, संबंधों में प्रेम का स्थापन हो सके और लड़ाई-झगड़ों से मुक्ति मिले तथा परिवार के प्रत्येक सदस्य की उन्नति हो।

यंत्र स्थापन विधि

किसी मंगलवार के दिन इस यंत्र को दूध मिश्रित जल से स्नान कराने के पश्चात प्रातःकाल अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें। नित्य प्रातः यंत्र पर कुंकुम व अक्षत चढ़ाएं तथा दिन दिनों तक नित्य 3 माला मंत्र जप करें फिर माला किसी शिव मंदिर में चढ़ा दें।

।। ॐ क्लीं क्लेश नाशय क्लीं ऐं फट्।।

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

गृहक्लेश निवृत्ति यंत्र

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/-, Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

नारायण मंत्र साधना विज्ञान जोधपुर

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001

8890543002 0291 2432209, 0291 2432010, 0291 2433623, 0291 7960039

मंगला गौरी दिवस – 19.07.22

माँ गौरी स्वरूप

महालक्ष्मी साधना

जीवन में शिवत्व अर्थात् सम्पूर्णता जो कि शिव भाव एवं लक्ष्मी भाव दोनों से युक्त हो... शिव आराधना के साथ शिव की शक्ति गौरी की साधना करना नितांत आवश्यक है। गौरी पूजन केवल स्त्रियों के लिए ही नहीं पुरुषों के लिए भी आवश्यक है...

जब तक किसी वस्तु के मूल को उसके बीज स्वरूप को नहीं पकड़ते हैं
तब तक उस कार्य में पूर्णता नहीं आ सकती है।
क्योंकि बीज अर्थात् मूल ही आधार है उस कार्य को तेजी
से विकसित करने का,
जिस प्रकार कुण्डलिनी जागरण में साधक सबसे पहले मूलाधार में अर्थात् मूल में,
कुण्डलिनी रूप में छिपी शक्ति को जाग्रत करता है और फिर एक -एक चक्र को जाग्रत करता हुआ
सहस्रार तक पहुँचता है, तभी उसकी कुण्डलिनी पूर्ण रूप से जाग्रत हो पाती है।

ठीक इसी प्रकार जब आदि शक्ति उत्पन्न हुई तो उन्होंने तीन स्वरूप प्रकट किए महाकाली, महासरस्वती और महालक्ष्मी। यह महालक्ष्मी स्वरूप, मूल रूप में तो आदि शक्ति का गौरव स्वरूप है जो कि सारे संसार का पालन करती है। इसलिए जब शिव की पूजा की जाए तो उस समय शिव के इस चैतन्य स्वरूप जिसे पार्वती कहते हैं, गौरी कहते हैं, दक्षा एवं हिम पुत्री विभिन्न रूपों में जाना जाता है, पूजा करना आवश्यक है।

हर गौरी साधना

श्रावण मास भगवान शिव का मास कहा गया है।
और इस मास में ही यदि हम गौरी की साधना भी महालक्ष्मी स्वरूप में करते हैं तो हमें शीघ्र सफलता मिलती है
क्योंकि शिव और शक्ति दोनों की साधनाएं एक ही समय हो जाती है।
और ध्यान देने योग्य बात है कि श्रावण मास में ही 19.07.22 से मंगला गौरी व्रत प्रारम्भ होते हैं
अतः दिये गये विशेष विधान से इसे अवश्य सम्पन्न करना चाहिए

गौरी पूजन स्त्रियों के लिए तो विशेष महत्व का है ही लेकिन उसी प्रकार पुरुष साधकों के लिए, इसके महालक्ष्मी स्वरूप की साधना, जीवन में महालक्ष्मी को इस विशिष्ट स्वरूप में पूर्ण रूप से प्राप्त करने की साधना है।

क्योंकि जहां गौरी अपने पूर्ण स्वरूप के साथ है वहां शिव भी वास करते हैं, वहां साहस रूपी भगवान कार्तिकेय और वैभव रूपी गणपति अवश्य ही विराजमान रहते हैं। अत: इस साधना को सम्पन्न करने से तीन अन्य देवों की साधना का सुफल प्राप्त होता है। जहां भगवान गणपति हैं, वहां ऋद्धि-सिद्धि तो अवश्य उपस्थित रहेंगी ही।

इस वर्ष श्रावण मास में 19.07.22 से मंगला गौरी व्रत प्रारम्भ हैं अत: प्रत्येक साधक चाहे वह शैव अथवा वैष्णव हो, गृहस्थ अथवा संन्यासी, विवाहित हो अथवा अविवाहित, पुरुष हो अथवा स्त्री, उसे गौरी के इस महालक्ष्मी स्वरूप को जिसे त्रैलोक्य मोहन स्वरूप कहा गया है साधना अवश्य ही करनी चाहिए, क्योंकि भगवान शिव ने भी स्वयं गौरी के महालक्ष्मी स्वरूप की साधना इस दिन सम्पन्न की थी।

साधना विधान

इस दिन प्रातः साधक स्नान कर, शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण करे और प्रसन्न मन से कामना पूर्ति की प्रार्थना के साथ अपने पूजा स्थान में प्रवेश करे अपने सामने शिव और पार्वती का संयुक्त चित्र रखे।

पूजा स्थान में सुगन्धित पुष्प लाकर रखें तथा अपने सामने एक बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर ताम्र पात्र में पुष्पों का आसन देकर 'त्रैलोक्य मोहन गौरी महायंत्र' स्थापित करे। सबसे पहले साधना में संकल्प ले और विनियोग करें। गौरी यंत्र का पूजन चंदन और पुष्पों से करना है। तदन्तर आठ लक्ष्मी चक्र स्थापित करे। ये लक्ष्मी चक्र गौरी के आठ शक्तियों के प्रतीक स्वरूप हैं। ये शक्तियां हैं–ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा और महालक्ष्मी।

इन आठों को आठ दिशाओं में स्थापित करना है और इनके मंडल के मध्य विराजमान गौरी का ध्यान करना है। अब साधक शिव पूजा भी सम्पन्न करे तथा पंचाक्षरी शिव मंत्र 'नमः शिवाय' का 108 बार उच्चारण करें।

विनियोग

अस्य श्री गौरी मंत्रस्य अजऋषिः निचृदगायत्री छन्दः गौरी देवता ह्रीं बीजं,
स्वाहा शक्तिः मम अखिलकार्य सिद्ध्ये महालक्ष्मी प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः।

अब अपने हृदय में अपनी कामनापूर्ति की प्रार्थना करते हुए,
पुनः गौरी स्वरूपा महालक्ष्मी का ध्यान कर इस त्रैलोक्य मोहन महालक्ष्मी मंत्र का जप प्रारम्भ करें–

मंत्र

।। ऐं ह्रीं श्रीं आद्यलक्ष्मी महागौरी शिवशक्ति ह्रीं नमः ।।

यहाँ यह बात ध्यान रखें कि गौरी साधना में स्फटिक माला से मंत्र जप किया जाता है।

इस दिन इस मंत्र की ग्यारह माला जपना अनिवार्य है (साधक इस श्रावण मास में प्रत्येक सोमवार को भी इस सिद्ध यंत्र की पूजा अवश्य करें) फिर आठों लक्ष्मी चक्र एक लाल कपड़े में बांधकर शिवालय में अर्पित कर देना चाहिए।

जो साधक वशीकरण साधना में इच्छुक हों, वे इस मंत्र का सवा लाख जप कर मधु, घी, शर्करा के साथ कमलगट्टे के बीज मिलाकर हवन करें। जो साधक इच्छित विवाह की कामना करते हैं वे अशोक वृक्ष की लकड़ियों पर घी और चावल मिलाकर यज्ञ सम्पन्न करें। पुलस्त्य-संहिता में तो यहां तक लिखा है कि जो साधक इस प्रकार का मंत्र अनुष्ठान और यज्ञ अनुष्ठान आदरपूर्वक करता है उसे लक्ष्मी छोड़ती नहीं और उसमें वशीकरण की शक्ति आ जाती है।

साधना सामग्री 600/-

शिवोऽहम शिवोऽहमं

विश्वेश्वर महादेव शिव

स्वरूप है,
कल्याण स्वरूप होने से शंकर है,
मंगलप्रद होने से
अमंगलों के विध्वंसक
और प्रलयंकर है

उपनिषदों के प्रारंभ में ब्रह्म के संबंध में जिज्ञासा प्रकट करते हुए प्रश्न पूछा गया कि 'किं कारणं ब्रह्म' अर्थात् जगत का कारण जो ब्रह्म है, वह कौन है? आगे चलकर ब्रह्म के स्थान पर रुद्र और शिव शब्द का प्रयोग किया गया है। 'एकोहि रुद्र स: शिव' अर्थात् जो जगत पर शासन करते हैं वे रुद्र भगवान एक ही हैं, वे प्रत्येक जीव के भीतर स्थित हैं, समस्त जीवों का निर्माण कर पालन करते हैं और प्रलय में सबको समेट लेते हैं। अर्थात् यह जगत पूर्ण रूप से रुद्र स्वरूप ही है, एक ही रुद्र से अणु परमाणु रूप में जीव आत्मारूप में कोटि-कोटि रुद्र उत्पन्न हुए जो रुद्र में ही विलीन हो जाते हैं।

नारायण उपनिषद में भगवान शिव को अनेक नामों से प्रणाम किया गया है।

शिवाय नम:, शिवलिङ्गाय नम:, भवाय नम:, भवलिङ्गाय नम:, शर्वाय नम:, सर्वलिङ्गाय नम:, बलाय नम:, घलप्रधनाय नम: इत्यादि एवं अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्य: सर्वेभ्य: सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यो:। ईशान सर्वविद्यानामीश्वर: सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्म शिवो मे अस्तु सदा शिवोम्। नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतयेऽम्बिकापतये उमापतये पशुपतये नमो नम:।

इसीलिए भगवान रुद्र के संबंध में कहा गया है कि भगवान शिव ही इन्द्र इत्यादि देवताओं की उत्पति हेतु, वृद्धि हेतु अधिपति और सर्वग्य हैं, वे परमदेव सबको सद्बुद्धि से संयुक्त करें। इस संसार में कर्म फल देने के लिये सृष्टि होती है। व्यक्ति अपने जीवन में नाना प्रकार के सुख और दुख भोगता हुआ अंतत: पूर्ण सृष्टि में विलीन हो जाता है। इसलिए भगवान शिव को प्रलय का देव कहा गया है जो व्यक्ति के जीवन में सब दु:खों को हर लेते हैं, इसलिए वे हर हैं और प्रार्थना में भी कहा जाता है - हर-हर महादेव अर्थात जो हरण करने वाले हैं, वे ही तो महादेव है। अव्यक्त और व्यक्त दोनों ही रूपों में शिव को जाना जाता है, इसीलिए शिव सगुण भी हैं और निर्गुण भी हैं। निर्गुण रूप में वे लिंगाकार रूप में और सगुण रूप में विभिन्न रूपों में सर्वपूज्य है।

शिव शब्द का अर्थ है कल्याण, शिव ही शंकर है, 'शं' का अर्थ है कल्याण, 'क' का अर्थ है करने वाले अर्थात् शंकर ही कल्याणकारी देव हैं, ब्रह्म ही शिव है, सृष्टि की उत्पत्ति और पूर्णता शिव में ही है। ऐसे देवाधि देव से संबंधित कुछ प्रयोग नीचे दिये जा रहे हैं जिन्हें श्रावण मास में सम्पन्न करने से साधक को पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। इन प्रयोगों को श्रावण मास में या किसी भी सोमवार को सम्पन्न किया जा सकता है।

जीवन का सौभाग्य

सोमवार 18.07.22

पारदेश्वर शिवलिंग साधना

साधना विधि

इस साधना को किसी भी सोमवार से प्रारंभ किया जा सकता है। इसके लिए आपके पास मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित पारद शिवलिंग होना आवश्यक है।

सर्वप्रथम अपने सामने किसी पात्र में पारद शिवलिंग को स्थापित करें। दोनों हाथ जोड़कर ध्यान करें –

ध्यायेन नित्यं महेशं रजतगिरि निभं चारु चन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्वलांगं परशु मृगवरा भीति हस्तं प्रसन्नं।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्र कृत्तिं वसानं विश्वाद्यं
विश्ववन्द्यं निखिल भय हरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं।
इवं ध्यानं समर्पयामि श्री पारदेश्वराय नमः।

आवाहन–पुष्प लेकर भगवान पारदेश्वर का आवाहन करें–

आवाहयामि देवेशं आदि मध्यांत वर्जितं
आधारं सर्वलोकानां आश्रितार्थ प्रदायिनम्।
ॐ पारदेश्वराय नमः इदं आवाहनं समर्पयामि नमः।

आसन

विश्वात्मने नमस्तुभ्यं चिदम्बर निवासिने
रत्नसिंहासनं चारु ददामि करुणानिधे।
इदं आसनं समर्पयामि ॐ पारदेश्वराय नमः।

पाद्य

नमः शर्वाय सोमाय सर्व मंगल हेतवे
तुभ्यं सम्प्रददे पाद्यं पारदेश कलानिधे
ॐ पाद्यं समर्पयामि।

दो आचमनी जल चढ़ावें।

अर्घ्य

अर्घ्य समर्पयामि नमः ॐ पारदेश्वराय नमः।

किसी पात्र में थोड़ा जल लें और शिवलिंग पर चढ़ावें।

आचमन

आचमनीयं जलं समर्पयामि श्री पारदेश्वराय नमः।

स्नान

गंगा क्लिन्न जटा भारं सोम सोमार्द्ध शेखरं,
नद्या मया समानीते स्नानं कुरं महेश्वरः।
स्नानं समर्पयामि श्री पारदेश्वराय नमः।

शिवलिंग को शुद्ध जल से स्नान कराएं।

पयः स्नान समर्पयामि श्री पारदेश्वराय नमः।

दूध से शिवलिंग को स्नान कराएं।

दधि स्नानं समर्पयामि श्री पारदेश्वराय नमः।

दही से शिवलिंग को स्नान कराएं।

घृत स्नानं समर्पयामि श्री पारदेश्वराय नमः।

घी से शिवलिंग को स्नान कराएं।

मधु स्नानं समर्पयामि श्री पारदेश्वराय नमः।

मधु से शिवलिंग को स्नान कराएं।

शर्करा स्नानं समर्पयामि श्री पारदेश्वराय नमः।

शक्कर से शिवलिंग को स्नान कराएं।

शुद्ध जल से स्नान कराकर शिवलिंग को पोंछ दें। पुष्प, अक्षत लेकर निम्न उच्चारण करते हुए शिवजी पर चढ़ाएं।

ॐ भवाय नमः ॐ जगतपित्रे नमः ॐ रुद्राय नमः
ॐ कालान्तकाय नमः ॐ नागेन्द्रहाराय नमः
ॐ कालकण्ठाय नमः ॐ त्रिलोचनाय नमः
ॐ पारदेश्वराय नमः।

इसके बाद किसी पात्र में पांच बिल्व पत्रों पर कुंकुम, अक्षत रखकर भगवान पारदेश्वर पर अर्पित करें –

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधं।
त्रिजन्म पाप संहारं बिल्व पत्रं शिवार्पणं।।

किसी पात्र में गाय का कच्चा दूध व पानी मिलाकर रख लें तथा निम्न मंत्र को बोलते हुए शिवलिंग पर प्रत्येक मंत्रोच्चार के साथ एक आचमनी जल 1 घंटे तक चढ़ावें।

।। ॐ शं शम्भवाय पारदेश्वराय सशक्तिकाय नमः।।

श्रावण मास के चारो सोमवार यह प्रयोग सम्पन्न करें। इस साधना को सम्पन्न करने के बाद भगवान पारदेश्वर की अमोघ शक्ति एवं उनके दिव्य स्वरूप का लाभ प्राप्त होता है तथा मनोवांछित कार्य पूर्ण होते हैं।

साधना सामग्री–600/-

महामृत्युंजय साधना

पूर्ण रक्षा, आपत्ति उद्धार एवं भयनाश हेतु अमोघ तांत्रोक्त साधना

भगवान महामृत्युंजय शिव का रूप हैं, जिनकी साधना कर साधक समस्त रोगों, आकस्मिक दुर्घटनाओं असामयिक मृत्यु आदि के योगों पर पूर्ण विजय प्राप्त कर सकता है। दु:साध्य रोगों के निवारण हेतु भी यह प्रयोग सफल होते देखा गया है।

इस प्रयोग को करने के लिए महामृत्युंजय यंत्र और रुद्राक्ष माला की आवश्यकता होती है। प्रात: शुद्ध होकर साधना में सफलता के लिए गुरुदेव से प्रार्थना करे –

योगीश्वर गुरोस्वामिन् देशिकस्वरत्मनापर,
त्राहि त्राहि कृपा सिन्धो, नारायण परत्पर।
त्वमेव माता च पिता. . .

इसके बाद गणपति का स्मरण करें –

विघ्नराज नमस्तेऽस्तु पार्वती प्रियनन्दन,
गृहाणार्चामिमां देव गन्धपुष्पाक्षतै: सह।
ॐ गं गणपतये नम:

सामने थाली पर कुंकुम से ॐ व स्वस्तिक बनाएं। ॐ पर महामृत्युंजय यंत्र एवं स्वस्तिक पर कोई भी शिवलिंग स्थापित करें। दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें –

ॐ मम आत्मन: श्रुति समृति पुराणोक्त फल प्राप्ति निमित्तं अमुकस्य (नाम) शरीरे सकल रोग निवृत्तिं पूर्वकं आरोग्य प्राप्ति हेतु महामृत्युंजय मंत्र जप करिष्ये।

जल को भूमि पर छोड़ें व महामृत्युंजय का ध्यान करें –

मृत्युञ्जय महादेव सर्वसौभाग्यदायकं
त्राहि मां जगतां नाथ जरा जन्म लयादिभि:।

इसके बाद ॐ ह्रौं जूं स: प्रसन्न पारिजाताय स्वाहा मंत्र बोलते हुए एक-एक कर 108 बिल्व पत्र यंत्र पर चढ़ाएं, आरोग्य प्राप्ति की कामना करें, फिर रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र की 3 माला जप करें –

मंत्र

ॐ ह्रौं ॐ जूं स: ॐ भूर्भुव: स्व: त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् स्व: भुव: भू: ॐ स: जूं ॐ ह्रौं ॐ

यह विशिष्ट सम्पुट युक्त मंत्र है, श्रावण मास में यह मंत्र जप साधना तो अवश्य सम्पन्न करें और भगवान शिव का अभिषेक अवश्य करें। जब भी किसी प्रकार की भय कारक स्थिति बने अथवा परिवार में कोई व्याधी आये तो उपरोक्त मंत्र का एक माला जप करने से पीड़ा से मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

आगे के सोमवारों में यह साधना करने के उपरांत सामग्री को किसी शिव मंदिर में अर्पित कर सकते हैं।

यह रोग निवारण तथा अकाल मृत्यु निवारण का अचूक विधान माना जाता है तथा हजारों साधकों का अनुभूत प्रयोग है कोई भी व्यक्ति श्रद्धापूर्वक इसे अपनाकर अभीष्ट लाभ प्राप्त कर सकता है।

जो साधक स्वयं न कर सकें उनको चाहिए कि किसी योग्य ब्राह्मण से यह अनुष्ठान सम्पन्न करायें यों भी इस घात प्रतिघात भरे युग में प्रत्येक व्यक्ति को अग्रिम रक्षार्थ 'महामृत्युंजय पूजा' अवश्य सम्पन्न कर लेना चाहिए।

साधना सामग्री यंत्र + माला- 550/-

पाशुपतास्त्रेय साधना

सोमवार 01.08.22

साधनाओं में पूर्ण सिद्धि व भाग्योदय के लिए

महाभारत के युद्ध से पूर्व श्रीकृष्ण ने अर्जुन को सलाह दी थी, कि वह महाभारत में विजयी होना चाहता है, वह यदि कौरवों की असंख्य सेना पर सफलता पाना चाहता है, वह मृत्यु को जीतना चाहता है, और वह यदि जीवन में पूर्ण सफलता के साथ भाग्योदय चाहता है, तो भगवान शिव की पाशुपतास्त्रेय साधना के अलावा और कोई ऐसी साधना नहीं है, जो कि जीवन में पूर्णता दे सके।

पाशुपतास्त्रेय साधना के विषय में विश्वामित्र जैसे दुर्धर्ष ऋषि ने एक स्वर में स्पष्ट किया है, कि पाशुपतास्त्रेय साधना प्राप्त करना ही जीवन का सौभाग्य है। भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए, उनसे समस्त साधनाओं में सिद्धि और सफलता प्राप्त करने का वरदान प्राप्त करने के लिए यही प्रयोग श्रेष्ठ और श्रेयस्कर है।

1. ग्रह संयोगों एवं स्वयं के कर्म दोषों से साधनाओं में सिद्धि मिलते रह जाती है, उन सभी का प्रभाव भगवान पशुपति की कृपा से समाप्त हो जाता है, और अगले वर्ष भर के लिए कर्म दोषों व ग्रह नक्षत्रों का विपरीत प्रभाव लगभग नगण्य हो जाता है, जिससे किसी भी साधना में सफलता असन्दिग्ध हो जाती है।
2. भगवान शिव मोक्ष प्रदायक देवता हैं, इस साधना के प्रभाव से साधक का परलोक सुधर जाता है।
3. साधक को जीवन में कहीं पर भी असफलता, अपमान या पराजय नहीं देखनी पड़ती।
4. भगवान शिव भाग्य के अधिपति देवता हैं। जिन का भाग्योदय नहीं हो रहा हो या जिनका भाग्य कमजोर हो अथवा जीवन में कर्म भली प्रकार से सम्पन्न नहीं हो रहे हों, उन्हें अवश्य भगवान शिव की यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए।
5. इस साधना को यदि पूर्ण श्रद्धा और भक्ति के साथ सम्पन्न किया जाए, तो भगवान शिव के अत्यंत भव्य दर्शन भी साधक को प्राप्त होते हैं, जिससे साधक के सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं।

इस साधना में नर्मदेश्वर शिव लिंग की मुख्य रूप से आवश्यकता होती है। इसको बेल पत्र का आसन देकर किसी पात्र में स्थापित कर निम्न ध्यान मंत्र करें -

ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजत गिरि निभं चारु चन्द्रावतंसं,
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशु मृग वराभीति हस्तं प्रसन्नं।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममर गणैर्व्याघ्र कृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यंविश्ववन्द्यंनिखिल भय हरं पंच वक्त्रं त्रिनेत्रं।।

अब अपने सिर पर एक पुष्प रखें तथा नर्मदेश्वर शिवलिंग के सामने भी एक पुष्प रखकर अपने और शिव के परस्पर प्राण संबंध स्थापित करते हुए निम्न उच्चारण करें।

पिनाक-धृक् इहावह इहावह, इह तिष्ठ इह तिष्ठ,
इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निधतत्रस्व,
यावत् पूजां करोम्यहं। स्थानीयं पशुपतये नमः।

इसके बाद रुद्रयामल तंत्र के अनुसार रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करें -

।। ॐ हर, महेश्वर, शूलपाणि, पिनाक धृक, पशुपति,
शिव महादेव ईशान नमः शिवाय।।

यह सम्पूर्ण प्रकार की सफलता देने वाला मंत्र है और इसके माध्यम से पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है। शास्त्रों में इसे अष्टाष्ट मंत्र या अष्ट शिव मंत्र कहते हैं जो अपने आपमें अद्वितीय है। प्रयोग समाप्ति के बाद आरती करें। बाद में रुद्राक्ष माला व नर्मदेश्वर शिवलिंग को पूजा स्थान में स्थापित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 600/-

स्वस्थ देह से स्वस्थ मन और स्वस्थ मन से
स्वस्थ चित्त यही तो जीवन है

रोगमुक्ति - रुद्र प्रयोग

प्रयोग विधि

रोगनाश के लिए भगवान रुद्र की साधना सर्वोपरि है। उसके लिए विशिष्ट सामग्री का होना आवश्यक है, जिससे कि पूर्णरूप से साधना को सम्पन्न किया जा सके। इसमें प्रयुक्त होने वाली सामग्री है –

1. प्राण–प्रतिष्ठित एवं मंत्र सिद्ध ज्योतिर्मय शिव यंत्र, मधु रुपेण रुद्राक्ष एवं रोगनाशक गुटिका।
2. पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठें।
3. सफेद या पीले आसन पर बैठें।
4. प्रात: 5 बजे से 8 बजे के मध्य इस प्रयोग को करें या फिर रात्रि 8.30 से 12.00 बजे के मध्य करें।
5. सोमवार को यह साधना करें। किसी भी सोमवार को इसे सम्पन्न कर सकते हैं।
6. अपने सामने बाजोट के ऊपर सफेद वस्त्र बिछाकर, किसी थाली में कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर शिव यंत्र को स्थापित कर दें व धूप दीप जला दें। फिर पूजन आरम्भ करें –

ध्यान–दोनों हाथ जोड़कर भगवान रुद्र से रोगनाश के लिए तथा सुख–सौभाग्य प्राप्ति के लिए प्रार्थना करें –

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं,
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीति हस्तं प्रसन्नं।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतिममरगणैर्व्याघ्रवृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्व वन्द्यं निखिल भयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं।

आवाह्न

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: आवाहन समर्पयामि।।

आसन

देवता को बिठाने के लिए आसन के रूप में पुष्प रखें।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।।

स्नान–स्नान के लिए शिव यंत्र पर जल चढ़ायें।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: स्नानीयं जलं समर्पयामि।

गंध, चन्दन या कुंकुम, अक्षत, पुष्प समर्पित करते हुए निम्न मंत्र बोले –

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: गंधं समर्पयामि।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: अक्षतान् समर्पयामि।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां पुष्पाणि समर्पयामि।

नैवेद्य–नैवेद्य के ऊपर जल प्रदक्षिणा करते हुए, रुद्र गायत्री मंत्र बोलें –

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्र: प्रचोदयात्।

इसके बाद भोग लगायें –

ॐ उमा महेश्वराभ्यां नम: नैवेद्यं निवेदयामि नाना ऋतुफलानि च समर्पयामि।

इसके बाद निम्न मंत्र का लगभग पांच मिनट तक उच्चारण करते हुए शिव यंत्र पर एक छोटी चम्मच से जल चढ़ाते रहें।

मंत्र : ।। ॐ सर्वरोगहराय रुद्राय ह्रौं क्रीं फट्।।

शिव यंत्र पर चढ़ाये हुए जल को किसी पात्र में एकत्र कर लें तथा इसे रोगी के सिर पर तीन बार घुमाकर जल को किसी पवित्र वृक्ष की जड़ में चढ़ा दें। शिव यंत्र को अपने पूजा कक्ष में सवा माह तक स्थापित रखें, इसके पश्चात् शिव यंत्र, गुटिका एवं मधुरुपेण रुद्राक्ष को नदी में प्रवाहित कर दें या किसी शिव मंदिर में चढ़ा दें। इस साधना को करने वाले साधक को सभी प्रकार के रोग से मुक्ति प्राप्त होती है यदि इसे स्वस्थ व्यक्ति सम्पन्न करें, तो समस्त रोगों से सुरक्षा प्राप्त होती है।

साधना सामग्री पैकेट – 550/-

शिव आरती

कर्पूर गौरं करूणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

जय शिव ॐकारा, भज शिव ॐकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धांगी धारा।।1।।

ॐ हर हर हर महादेव....

एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसासन गरूडासन वृषवाहन साजे।।2।।

ॐ हर हर हर महादेव....

दो भुज चारू चतुर्भुज दशभुज अति सोहै।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे।।3।।

ॐ हर हर हर महादेव....

अक्षमाला वनमाला मुंडमाला धारी।
त्रिपुरानाथ मुरारी करमाला धारी।।4।।

ॐ हर हर हर महादेव....

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक गरूडादिक भूतादिक संगे।।5।।

ॐ हर हर हर महादेव....

कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र त्रिशूल धर्ता।
सुखकर्ता दुखहर्ता सुख में शिव रहता।।6।।

ॐ हर हर हर महादेव....

काशी में विश्वनाथ विराजे नंदी ब्रह्मचारी।
नित उठ ज्योत जलावत महिमा अति भारी।।7।।

ॐ हर हर हर महादेव....

ब्रह्मा विष्णु सदा शिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर ॐ मध्ये तीनों ही एका।।8।।

ॐ हर हर हर महादेव....

त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावे
कहत शिवानन्द स्वामी इच्छाफल पावे।।9।।

ॐ हर हर हर....
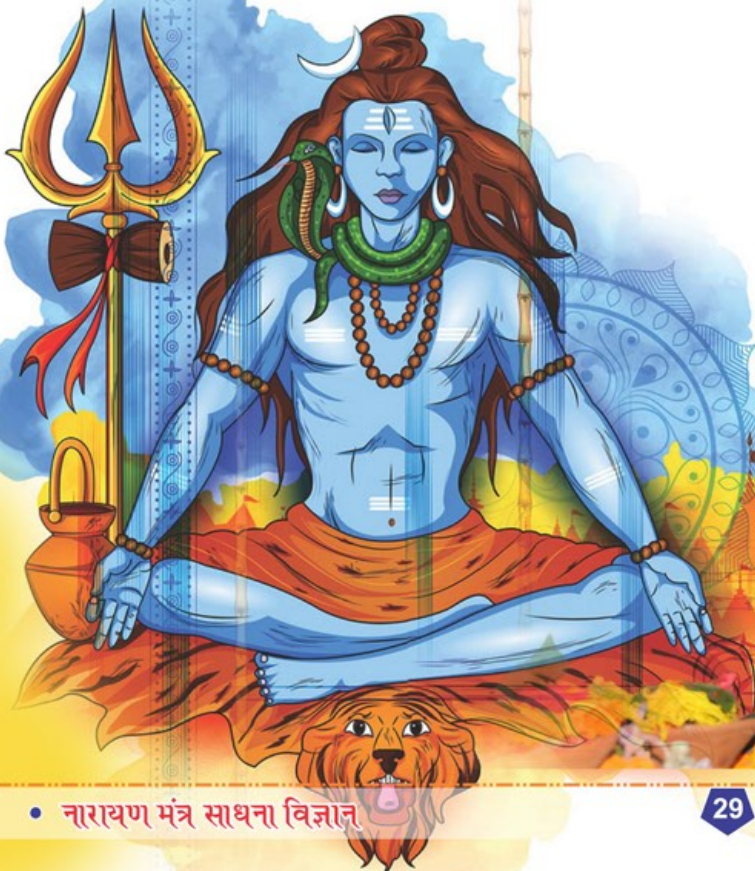
13.07.22

गुरु पूर्णिमा

स्तोत्र शक्ति

प्रभु खिंचे हुए, बंधे हुए चले आयेंगे

गुरु आह्वान स्तोत्र

स्तोत्र स्वयं में मंत्र स्वरूप होते हैं–
इस तथ्य से प्रत्येक साधक परिचित हैं किंतु मंत्रों की अपेक्षा एक अन्य विशिष्टता होती है किसी भी स्तोत्र में कि जहां मंत्र वर्णों का विशिष्ट संयोजन होता है वहीं किसी भी स्तोत्र में एक लयबद्धता भी होती है तथा इसी लयबद्धता के कारण यह सहज स्वाभाविक हो जाता है कि साधक के हृदय के भाव पूर्णता से प्रस्फुटित हो सकें।
हृदय के भाव प्रस्फुटित हो सकें,यही तो समस्त साधनाओं का भी मर्म है।
मात्र स्तोत्र पाठ से ही जीवन में कई प्रकार की अनुकूलताएं प्राप्त हो जाती हैं।

यह गुरु पूर्णिमा का दिन शिष्य के जीवन में श्रेष्ठतम दिवस होता है
क्योंकि जो शिष्य गुरु की कृपा और शरण प्राप्त कर लेता है वह जीवन में भय रूपी मृत्यु से मुक्ति पा लेता है

क्योंकि कहा गया है कि कोई भी शिष्य कितनी ही शक्तियाँ प्राप्त कर ले लेकिन गुरु कृपा के बिना उसे पूर्णता नहीं प्राप्त हो सकती। सद्गुरु की शक्ति का प्रवाह शिष्य के अहम भाव समाप्त कर उसी के स्वभाव को जाग्रत कर देता है।

यह दिन गुरु साधना को सम्पन्न करने का श्रेष्ठ दिन है और जहां गुरुदेव की साधना की जाए वहां यह आवश्यक है कि उनका सम्पूर्ण गरिमा व पवित्रता के साथ आह्वान भी किया जाए। गुरु शब्द के साथ देव शब्द जोड़ने का अर्थ ही यही है कि गुरुदेव, व्यक्ति की संज्ञा से आगे बढ़ देवत्व की विशिष्टतम स्थिति होते हैं।

शिष्यगण, पूज्यपाद गुरुदेव का आह्वान यथोचित विधि से कर सकें इस हेतु इस अंक में जिस गुरु आह्वान-स्तोत्र की प्रस्तुति की जा रही है वह एक दुर्लभ स्तोत्र है।

इस स्तवन के पाठ अथवा श्रवण मात्र से गुरुदेव सूक्ष्म रूप में उपस्थित होते ही हैं, यह एक अनुभव जन्य प्रमाण है अनेकानेक साधकों व शिष्यों का, अतः इस स्तवन का पाठ अत्यंत भावविह्वलता, शुद्धता एवं विगलित कंठ से करें।

प्रयोग विधि

जब कभी भी इस स्तवन का पाठ करने का भाव मन में उमड़े तब शुद्ध वस्त्र धारण कर उत्तरमुख हो आसन पर बैठें, वातावरण को धूप अगरबत्ती के द्वारा सुगंधमय कर लें तथा अपने समक्ष किसी बाजोट पर वस्त्र बिछाकर पुष्प की पंखुड़ियों को गुरुदेव के लिए आसन के रूप में स्थापित करें।

सामूहिक अथवा व्यक्तिगत गुरु-पूजन/गुरु-साधना के अवसर पर इस स्तोत्र का पाठ गुरुदेव का यथोचित विधि से पूजन करने के उपरान्त करें, मध्य में अथवा प्रारम्भ में नहीं-ऐसा सिद्धाश्रम गुरु-पूजन क्रम में उल्लिखित है।

मात्र परीक्षण के रूप में, किसी कौतूहल या किसी भी प्रकार से अगरिमामय रूप में इस स्तवन का पाठ करना सर्वथा वर्जित है। आगे इस स्तवन को जिस प्रकार से पूज्यपाद गुरुदेव ने स्पष्ट किया है, उसी रूप में प्रकाशित किया जा रहा है-

पूर्ण सतान्यै परिपूर्ण रूपं
गुरुर्वै सतान्यं दीर्घो वदान्यम्।
आविर्वितां पूर्ण मदैव पुण्य
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्।।1।।

त्वमेव माता च....................

न जानामि योगं न जानामि ध्यानं
न मंत्रं न तंत्रं योगं क्रियान्यै।
न जानामि पूर्णं न दैहं न पूर्वं
गुरुवै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्।।2।।

त्वमेव माता च....................

अनाथो दरिद्रो जरा रोग युक्तो
महाक्षीण दीनं सदा जाड्य वक्त्रः।
विपत्ति प्रविष्टं सदाऽहं भजामि
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्।।3।।

त्वमेव माता च....................

त्वं मातृ रूपं पितृ स्वरूपं
आत्म स्वरूपं प्राण स्वरूपं।

मैं अनाथ और दरिद्र हूँ, जरा और रोग से ग्रस्त हूँ, मैं बिल्कुल आश्रयहीन हूँ तथा स्पष्ट रूप से बोल भी नहीं पाता हूँ, निरन्तर विपत्तिग्रस्त हूँ। आपकी आराधना करता हूँ, हे गुरुदेव! आपकी शरणागत हूँ, आप मेरी रक्षा करें....

चैतन्य रूपं देवं दिवन्त्रं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्।।4।।

त्वमेव माता च....................

त्वं नाथ पूर्णं त्वं देव पूर्णं
आत्म च पूर्णं ज्ञानं च पूर्णम्।
अहं त्वा प्रपद्ये सदाऽहं भजामि
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्।।5।।

त्वमेव माता च....................

मम अश्रु अर्ध्यं पुष्पं प्रसूनं
देहं च पुष्पं शरण्यं त्वमेवम्।
जीवोऽ वदां पूर्ण मदैव रूपं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्।।6।।

त्वमेव माता च....................

आवाहयामि आवाहयामि
शरण्यं शरण्यं सदाहं शरण्यं।
त्वं नाथ मेवं प्रपद्ये प्रसन्नं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्।।7।।

त्वमेव माता च....................

न तातो न माता न बन्धुर्न भ्राता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न वित्तं न वृत्तिर्ममेवं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्।।8।।

त्वमेव माता च....................

आबध्य रूपं अश्रु प्रवाहं
धीयां प्रपद्ये हृदयं वदान्ये।
देहं त्वमेवं शरण्यं त्वमेवं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्।।9।।

त्वमेव माता च....................

गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्।
एको हि नाथं एको हि शब्दं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्।।10।।

त्वमेव माता च....................

कान्तां न पूर्वं वदान्यै वदान्यं
कोऽहं सदान्यै सदाहं वदामि।
न पूर्व पतिर्वै पतिर्वै सदाऽहं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्।।11।।

त्वमेव माता च....................

न प्राणो वदार्वै न देहं नवाऽहै
न नेत्रं न पूर्व सदाऽहं वदान्यै।
तुच्छं वदां पूर्व मदैव तुल्यं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्।।12।।

त्वमेव माता च....................

पूर्वो न पूर्व न ज्ञानं न तुल्यं
न नारि नरं वै पतिर्वै न पत्न्यम्।
को कत् कदा कुत्र कदैव तुल्यं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्।।13।।

त्वमेव माता च....................

गुरुर्वै गतान्यं गुरुर्वै शतान्यं
गुरुर्वै वदान्यं गुरुर्वै कथान्यम्।
गुरुमेव रूपं सदाऽहं भजामि
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्।।14।।

त्वमेव माता च....................

आत्रं वतां अश्रु वदैव रूपं
ज्ञानं वदान्यै परिपूर्ण नित्यम्।
गुरुर्वै व्रजाहं गुरुर्वै भजाहं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम्।।15।।

त्वमेव माता च....................

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।

गुरु ही गति है, गुरु ही शक्ति है, गुरु ही स्तुति योग्य है, गुरु ही कथा योग्य है, गुरु ही दर्शन योग्य है, उनका ही मैं सदा स्मरण करता हूँ, उन्हीं की शरणागत चाहता हूँ....

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम् देव देव।।16।।

त्वमेव माता च....................

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त, पूर्ण स्वरूप वाले निश्चित रूप से जो सत् चित् स्वरूप हैं, अखण्ड स्वरूप हैं, संसार में आविर्भत होने वाले सबसे अधिक पुण्यवान हैं, ऐसे दिव्य गुणों से परिपूर्ण गुरुचरणों की मैं शरण ग्रहण करता हूँ....।।1।।

योग क्या है, मैं नहीं जानता हूँ, न मैं ध्यान को जानता हूँ, न मंत्र-तंत्र आदि क्रियाओं को ही जान पा रहा हूँ। पूर्ण शक्ति स्वरूप ब्रह्म शक्ति को भी नहीं जानता हूँ। इस शरीर के पूर्व और पश्चात् की गति को भी नहीं जानता हूँ। केवल मैं शरणागत हूँ, यही मेरी एकमात्र चेतना है....।।2।।

मैं अनाथ और दरिद्र हूँ, जरा और रोग से ग्रस्त हूँ, मैं बिल्कुल आश्रयहीन हूँ तथा स्पष्ट रूप से बोल भी नहीं पाता हूँ, निरन्तर विपत्तिग्रस्त हूँ। आपकी आराधना करता हूँ, हे गुरुदेव! आपकी शरणागत हूँ, आप मेरी रक्षा करें....।।3।।

हे गुरुदेव! आप ही मेरे माता-पिता, आत्मा और प्राण हैं। आप चैतन्य स्वरूप हैं, देवाधिदेव हैं। मैं सदैव आपकी शरणागत हूँ, आप मेरी रक्षा करें....।।4।।

हे गुरुदेव! आप पूर्णस्वरूप हैं, देव स्वरूप हैं, आत्म स्वरूप हैं एवं ज्ञानमय हैं, चैतन्य स्वरूप एवं दिव्य चेतनामय हैं। मैं सदैव आपकी शरणागत हूँ, आप मेरी रक्षा करें....।।5।।

हे प्रभु! मेरे अश्रुओं का अर्घ्य आपको अर्पित है, यह देह ही पुष्प है, आपके आपके शरणागत हूँ। बारम्बार देह धारण करके पूर्णता प्राप्त कर सकूं, क्योंकि मैं आपके चरण शरण हूँ....।।6।।

हे प्रभु! आप मेरे हृदय में स्थापित हों, आपका आवाहन करता हूँ। हे नाथ! मेरी स्थिति से आप परिचित हैं, जीवन में मैं प्रसन्नता चाहता हूँ, मुझे अपनी शरण में ले लें....।।7।।

माता, पिता, भाई तथा कोई भी सम्बन्धी इस संसार में मेरे नहीं हैं। पुत्र, पुत्री, पति तथा सेवक आदि भी नहीं हैं। पत्नी, धन या जीवनयापन के किसी भी साधन को मैं अपना नहीं मानता हूँ। हे गुरुदेव! मैं आपके शरणागत हूँ....।।8।।

अजस्र प्रवाहमान अश्रु ही मेरे हृदय में स्थापित हैं, और ये ही आप के विमल स्वरूप का प्रमाण हैं। यह मेरा शरीर भी आप का ही है, जिसे सेवा के लिये चाहें तो आप उपयोग करें। पुनः-पुनः निवेदन है कि मैं आपकी शरण में ही रहूं....।।9।।

मैं आपकी ही शरणागत हूँ, आपके ही अधीन हूँ, आप ही मेरे रक्षक हैं, पालक हैं, आप ही मेरे एकमात्र आराध्य हैं, स्तुत्य हैं। आप सदा मुझे अपनी शरण में रखे रहें, ऐसी प्रार्थना करता हूँ....।।10।।

कोई भी वस्तु इस संसार में ऐसी नहीं है, जिसकी मुझे आपके समक्ष कामना हो। मैं कौन हूँ, यह भी नहीं जानता हूँ। इससे पूर्व मेरा कोई स्वामी था भी या नहीं, मैं नहीं जानता हूँ। मैं तो बस जानता हूँ कि आप ही मेरे सर्वस्व हैं और आपकी शरणागति की ही कामना करता हूँ....।।11।।

यह प्राण, देह तथा नेत्र आदि इन्द्रियां जिन्हें मैं अपना समझता था....ये अनित्य और तुच्छ हैं, नाशवान हैं, संसार में केवल आप ही सारभूत तत्व हैं। प्रभु! मैं आपकी ही शरण में हूं....।।12।।

सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व का मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं है। ये नर, नारी, पत्नी और पति का भाव कैसे हुआ—यह भी नहीं जानता, मैं कौन हूँ, कब से इस संसार चक्र में हूँ, कब तक ऐसा चलता रहेगा, यह भी नहीं जानता, केवल आपकी शरणागत हूँ, यही जानता हूँ....।।13।।

गुरु ही गति है, गुरु ही शक्ति है, गुरु ही स्तुति योग्य है, गुरु ही कथा योग्य है, गुरु ही दर्शन योग्य है, उनका ही मैं सदा स्मरण करता हूँ, उन्हीं की शरणागत चाहता हूँ....।।14।।

मैं आर्त हूँ, आँखों में अश्रु हैं, मैं प्रार्थना कर रहा हूँ कि आपके स्वरूप का मुझे ज्ञान हो, मैं पूर्णता प्राप्त करूं, गुरु का ही भजन करूं और एकमात्र उनकी शरण में रहूं....।।15।।

गुरुदेव! आप ही माता, पिता, बन्धु, सखा, विद्या और धन, आपसे अलग न मेरा कोई भाव है और न मैं चाहता हूँ, इसी रूप में आप मुझे पूर्णता प्रदान करें। हे प्रभु! आप ही मेरे सर्वस्व हैं, सर्वस्व हैं....।।16।।

सिद्धाश्रम प्रणीत यह स्तोत्र, मात्र एक स्तवन भर नहीं है। यह स्वयं में पूज्यपाद सद्गुरुदेव को सूक्ष्म रूप में उपस्थित कर लेने का प्राणों से किया गया एक आह्वान है, अतः इसका पठन-पाठन मर्यादा से किया जाना आवश्यक है। यूं भी कभी मस्ती में, बिस्तर में लेटे-लेटे, रास्ते चलते, बाथरूम में नहाते समय इसका उच्चारण किसी गीत की भांति करना अभद्रता है और सिद्धाश्रम की मर्यादा के अनुकूल नहीं है और ऐसा करना विपरीत फलदायक भी हो सकता है। शिष्यगण इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखें।

शिष्य के जीवन में गुरु ही सर्वस्व होता है। इसलिए देवी-देवताओं की साधना करने के साथ गुरु साधना को ही जीवन में प्राथमिकता देनी चाहिए।

शिष्य धर्म

शिष्य के जीवन में गुरु ही सर्वस्व होता है। इसलिए देवी देवताओं की साधना करने की अपेक्षा, गुरु साधना को ही सभी सफलताओं की कुंजी समझता है। किसी भी व्यक्ति के लिए जन्म लेना महान घटना नहीं है, ऐसा सद्गुरुदेव ने कई बार कहा है। जब हम दीक्षा लेते हैं तो एक घटना अवश्य घटती है क्योंकि पूर्व जन्म से छूटा हुआ सम्बन्ध सद्गुरु से पुनः स्थापित होता है। उस क्षण के साथ सद्गुरुदेव कहते हैं–'त्वं देह मम देह, त्वं प्राण मम प्राण त्वं चित्ते मम चित्ते।' इसके बाद शिष्य सद्गुरु चेतना से युक्त होकर उनके ज्ञान का प्रकाश जगत में फैलाता है और वही सच्चा शिष्य है।

- गुरु का पद अत्यंत गूढ़, दुर्लभ एवं देवताओं के लिए भी अप्राप्य है तथा गुरुत्व तो गन्धर्वों, किन्नरों, शिव के गणों द्वारा भी प्रपूजित होता है। देवता भी गुरुत्व के प्रभाव के कारण ही विभिन्न लोकों में जाकर पुण्यों का उपभोग करते हैं। यह गुरुत्व शाश्वत और जन्मादि क्रियाओं से परे है इसलिए शिष्य को सदैव गुरु चरणों में तन-मन-धन तीनों प्रकार से समर्पित बने रहना चाहिए।

- यह शरीर मल-मूत्र, दुर्गन्ध, लार, थूक, माँस-मज्जा, हड्डी के अलावा कुछ नहीं है, इसलिए इस शरीर पर गर्व न करते हुए या शरीर से उपार्जित यश, ख्याति पर गर्व न करते हुए श्रीगुरु चरणों में उपस्थित होना ही शिष्य की सार्थकता है। तभी वह गुरुत्व के रहस्य से परिचित हो सकता है।

- सद्गुरु का विग्रह (या चित्र) शिव के विग्रह के समान है, गुरु का चिन्तन शिव चिन्तन है, गुरु आरती जगदीश्वर की आरती है, गुरु पूजन ही इष्ट पूजन है और गुरु में ही सभी देवी-देवताओं का वास है, ऐसा उच्च चिंतन धारण करने में ही शिष्य का कल्याण है।

- सद्गुरु के चरण कमल का एक रज कण भी संसार सागर से पार उतार सकने में पूर्ण सक्षम है। गुरु चरणों की धूलि ही सर्वस्व प्रदान करने में समर्थ है। शिष्य को मन में इसी प्रकार का भाव रखना चाहिए। शिष्य जब भी गुरु के निकट जाए, तो हर क्षण सतर्क रहे, सजग रहे, क्योंकि गुरु के देह से निःसृत होने वाली रश्मियां भी शिष्य के ताप त्रय का हरण करने में पूर्ण सक्षम होती हैं। उनके दर्शन करते समय जितना ही शिष्य प्रबुद्ध और सजग रहेगा, उतना ही कृतार्थ होता चला जाएगा।

जो शिष्य अपने अहम, छल, कपट आदि को छोड़कर भौतिक श्रेष्ठताओं को भुलाकर गुरुचरणों में झुक जाता है वही सफल होता है।

- मनुष्य के जीवन में सबकुछ होते हुए भी वह कहता है कि कुछ अच्छा नहीं लग रहा है. . .ये सबकुछ है, फिर भी कुछ ऐसा है, कुछ खालीपन है, क्यों है यह पता नहीं पड़ रहा है? क्यों मैं बैचेन हूँ? क्यों मैं चिंतित हूँ? इसका कारण यह है कि जब तक अन्दर से आनन्द की अनुभूति नहीं होगी, अन्दर से चिंतन, विचार, एक धारणा नहीं बनेगी, तब तक सुख व्यर्थ है।
- संसार की सभी वस्तुओं और सभी भोगों के पीछे भय है। जब आसक्ति नहीं होगी, तब दु:ख नहीं होगा।
- अनासक्ति या वैराग्य का अर्थ यह नहीं है कि आप भगवा कपड़ा पहन लें। वैराग्य का मतलब है कि जहां राग नहीं है, वहां वैराग्य है। वैराग्य का मतलब जहां आसक्ति नहीं है, क्योंकि जहां आप आसक्ति करते हैं, वहीं तकलीफ हो जाती है।
- यदि हम यह सोच लें कि संसार में एक टिकट लेकर हम आये हैं, तो देखेंगे कि यह सब चलचित्र की तरह ही है। यह बहू है, बेटा है, बाप है, माँ है, मगर यह भी ध्यान है कि मैं केवल टिकट लेकर आया हूँ, देख रहा हूँ और मुझे वापिस जाना है। यह अनासक्ति है।
- अनासक्ति का अर्थ यह भी नहीं है कि दूसरे को पीड़ा है, तो हम पर कोई असर ही नहीं है। अध्यात्म इतना संकीर्ण नहीं हो सकता। अध्यात्म का मतलब है कि हमारे प्राणों का विस्तार पूरे संसार में हो, पूरे ब्रह्माण्ड में हो, हमारे लिये सब एक है। किसी की आँख में आँसू है तो हमारी आँख में आँसू है।
- अध्यात्म जो जीवन का विस्तार है, वह तभी प्राप्त हो सकेगा जब अन्दर से क्रोध और अहं समाप्त हो सकेगा।
- अहं और क्रोध की समाप्ति केवल समर्पण से ही आ सकती है और समर्पण की जो क्रिया है, वह बाहर से नहीं आ सकती, बाहर से ढोंग हो सकता है। हो सकता है कि मैं मन्दिर जाऊं और मन में उतनी श्रद्धा न हो, लेकिन अगर अन्दर से होगा तो मैं घर में भी बैठा होऊंगा, तब भी अपने इष्ट के साक्षात दर्शन कर सकूंगा। लगे ही और गृहस्थ छोड़ने से भी जरूरी नहीं कि पूर्णता प्राप्त हो ही जाये।

वज्र प्रस्तारिणी

जिससे सम्भव है प्रत्येक कार्य का सिद्ध होना,
चाहे वह कितना जटिल ही क्यों नहीं

**जीवन में विभिन्नताओं का समावेश है,
क्योंकि हर क्षण परिवर्तित होती प्रकृति जीवन को विविध रंगों से भर देती है**

**और इसी नितनूतन परिवर्तन से जीवन में उल्लास, आह्लाद
अपने लुभावने स्वरूप में विद्यमान रहता है।**

यदि जीवन में सम्पूर्ण रस न हों, तो जीवन कठिन हो जाता है।

जीवन में जहां एक ओर श्रृंगार, वात्सल्य, हास्य आदि अनिवार्य रस हैं, वहीं भय, जुगुप्सा आदि भी आवश्यक रस हैं, हर रस का जीवन में महत्व है।
किसी एक की भी अनुपस्थिति जीवन के संतुलन को बिगाड़ देती है।

यदि जीवन में भय, घृणा, असम्मान, अव्यवस्था हो, तो जीवन के संतुलन क्रम में विघ्न उत्पन्न हो जाता है या फिर सिर्फ रास-रंग ही हो, तो भी फीका सा ही लगता है।

आप अपने जीवन के अव्यवस्थित क्रम को व्यवस्थित कर सकते हैं इस 'वज्रप्रस्तारिणी साधना' से, क्योंकि यह साधना सम्पन्न करने पर साधक का जीवन संतुलित क्रम में आता ही है।

इसे करने से साधक स्वयं पर नियंत्रण स्थापित कर हर प्रकार की परिस्थितियों का सामना करने की सामर्थ्य प्राप्त कर उनको अपने अनुसार ढालने का सहज उपाय ढूंढ लेता है। उसके अन्दर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का अडिग विश्वास उत्पन्न हो जाता है, जिस कारण वह किसी भी कार्य को अत्यन्त सहजता से करने में समर्थ हो जाता है।

वज्र प्रस्तारिणी अपने साधक पर कृपा कर उसे जीवन में सफल बनने में पूरा सहयोग प्रदान करती है। युग के अनुसार समाज की कार्य विधि और चिन्तन में परिवर्तन आता चला गया।

जो कार्य सतयुग में सम्भव थे, वह त्रेता में नहीं हो सके, जो त्रेता में सम्भव थो, वह द्वापर में सम्भव नहीं हो सके और जो कार्य द्वापर में हो सकते थे अब वह इस युगमें सम्भव नहीं है, क्योंकि प्रत्येक युग के साथ समाज की विचारधारा परिवर्तित होती चली गई।

युग के अनुसार ही परेशाानियों के हल भी परिवर्तित होते चले गये। पुरातन युग के हल अब इस काल में प्रयुक्त नहीं हो सकते, इस युग के अपने ही प्रकार के हल हैं, जिन्हें इस काल में प्रयोग किया जा सकता है... और वज्र प्रस्तारिणी की यह साधना इस युग के अनुरूप ही फल देने वाली है।

कई बार बड़ी-बड़ी साधनाओं से भी जो कार्य सिद्ध नहीं हो पाते हैं, वहीं कार्य कभी-कभी किसी छोटी सी साधना विधि के द्वारा तुरंत गतिशील हो जाता है।

इसी उद्देश्य को ध्यान रखकर विभिन्न प्रकार की साधनाएं और प्रयोग यह पत्रिका आपके लिये प्रस्तुत करती रहती है, जिससे आप अपने अनुकूल तथा शीघ्र प्रभावी साधना का चयन कर, उस साधना को सम्पन्न करें और अपने जीवन को सफल बना सकें।

यह पत्रिका प्रत्येक व्यक्ति की विभिन्न समस्याओं, विभिन्न प्रश्नों का हल है, यह तो संग्रह है, उन विधियों का, उन प्रयोगों का, जो लुप्त हो रहे हैं।

यह साधना उसी क्रम में एक और प्रयास है।

- घर में किसी भी सदस्य को शारीरिक बाधा हो।
- सामाजिक जीवन में किसी प्रकार का व्यवधान आ रहा हो।
- व्यापारिक या राजकीय कोई भी बाधा हो।

तनाव से ग्रसित जीवन आनन्दप्रद नहीं हो सकता है। वज्र प्रस्तारिणी साधक पर अपनी कृपा का आवरण डालकर समस्त प्रकार की व्याधियों का नाश कर उसे जीवन के आनन्द से परिचित करवाती है। यह साधना किसी भी साधक के जीवन को ऊर्ध्वोन्मुखी बनाने में सहायक है।

साधना विधान

- यह साधना 16.07.22 को या किसी भी शनिवार को सम्पन्न की जा सकती है।
- यह एक दिवसीय साधना है तथा रात्रिकालीन साधना है, इसे रात्रि में ही करें।
- इस साधना में प्रयुक्त सामग्री – 'वज्र प्रस्तारिणी यंत्र' और 'वज्रमुख शंख' है।
- साधक स्नान कर शुद्ध स्वच्छ, श्वेत वस्त्र धारण करें।
- सर्वप्रथम गुरु पूजन सम्पन्न कर, मानसिक रूप से अपने गुरु से आशीर्वाद लें, कि यह साधना सफल हो।
- बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर उस पर ताम्रपात्र में यंत्र स्थापित करें।
- यंत्र का पूजन कुंकुम, अक्षत, पुष्प आदि से करने के बाद दायीं ओर चावल की ढेरी बनाकर शंख स्थापित करें।
- घी का दीपक जलाएं।

ध्यान करें–

रक्ताब्धौ रक्त-पोते रविदल कमलाभ्यन्तरे सन्निषणाम्
रक्ताक्षीं रक्त-मौलि स्फुरित-शशि कलां स्मेर वक्त्रां त्रिनेत्राम्
बीजापूरेषु पाशंकुश मदन-धनुः सत् कपालानि।

- यंत्र के चारों ओर चावल की बारह ढेरियां बनाकर बारह शक्तियों का पूजन करें–

ॐ हृल्लेखायै नमः। ॐ क्लेदिन्यै नमः।
ॐ क्लिन्नायै नमः। ॐ क्षोभिण्यै नमः।
ॐ मदनावत्यै नमः। ॐ मेखलायै नमः।
ॐ द्राविण्यै नमः। ॐ स्मेरायै नमः।
ॐ कपालोप्पलाय नमः। ॐ शक्तिभ्यो नमः।
ॐ रक्त विग्रहाय नमः। ॐ त्रिष्टुलभ्यो नमः।

- निम्न मंत्र का 75 बार उच्चारण करें–

मंत्र

।। ॐ क्लीं वज्र प्रस्तारिण्यै क्लीं फट्।।

- साधना सम्पन्न होने पर हलवा का भोग लगायें।
- पांच दिन तक घर में स्थापित रखने के बाद यंत्र और शंख को नदी में विसर्जित कर दें

साधना सामग्री- 500/-

28.07.22

आकस्मिक धनप्राप्ति प्रयोग

इस वर्ष श्रावण मास में एक अच्छा मुहूर्त है। इस दिन 28 जुलाई को सर्वार्थ सिद्धि योग,
गुरु पुष्य योग तथा हरियाली अमावस्या का विशिष्ट योग है।
इस दिन इस आकस्मिक धनप्राप्ति प्रयोग को प्रारम्भ करना है, यह तीन दिन की साधना है।

साधना सामग्री - स्फटिक शिवलिंग, 2 मोती शंख, लक्ष्मी माला

इसके लिए 28 जुलाई दिन गुरुवार की रात्रि को अपने सामने स्फटिक शिवलिंग स्थापित करें। उसके सामने दो मोती शंख स्थाापित करें। सामने घी का दीपक जलायें। फिर मोती शंख एवं स्फटिक शिवलिंग पर चन्दन या अष्टगंध से तिलक करें। अक्षत एवं पुष्प से पूजन करें। धूप, दीप दिखायें फिर एक मोती शंख में चावल भर कर बायें हाथ की ओर स्थापित करें तथा दूसरा मोती शंख चावल से भर कर अपनी दाहिनी जांघ के नीचे दबा दें।

तत्पश्चात् लक्ष्मी माला से उसी समय रात्रि में 51 माला मंत्र जप करें।

मंत्र

।। ॐ ह्रीं रत्नगर्भा सिद्धाय स्वर्णवर्षा प्रदाय ह्रीं ह्रीं फट्।।

मंत्र जप के बाद दोनों मोती शंख, स्फटिक शिवलिंग के सामने ही रख देने चाहिए।

इसी प्रकार तीन रात्रि को प्रयोग सम्पन्न करें। तीसरी रात्रि को मंत्र जप पूर्ण होने के बाद इन मोती शंखों को लाल वस्त्र में बांधकर घर की छत पर लटका दें, जिससे कि उनके ऊपर हवा प्रवाहित होती रहे तो निश्चय ही उसे मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है। यह एक तांत्रिक प्रयोग है व सिद्ध है। ऊपर छत पर यह मोती शंख १२ अगस्त श्रावण पूर्णिमा के दिन तक लटके रहना चाहिए। फिर इन्हें किसी शिव मन्दिर में जाकर चढ़ा देना चाहिए। वस्तुतः यह आशचर्यजनक सफलतादायक प्रयोग है।

साधना सामग्री' 660/-

क्या आपके भाग्योदय में अड़चने आ रही हैं

मैं अपने व्यवसाय का चुनाव नहीं कर पा रहा, मेरा भाग्योदय का काल कब प्रारम्भ होगा? मुझे नौकरी कब मिलेगी? क्या मकान का बंटवारा मेरे पक्ष में होगा? माता-पिता से नहीं बनती,

क्या मुझे जायदाद में हिस्सा मिलेगा–जैसे अनेक पत्र पत्रिका कार्यालय में मिलते ही रहते हैं और सुलझे हुए शब्दों में कहा जाए तो ये सभी बातें जीवन की अड़चनें ही हैं।क्या जीवन इन्हीं बातों में उलझ कर समाप्त कर दिया जाए या फिर किसी साधना का सहारा लेकर जीवन का सौभाग्य प्रारम्भ किया जाए।

एक साधक के जीवन में वह सबसे पुण्यदायी क्षण होता है जब वह अपने-आपको सामान्य पथ से हटाकर कुछ नवीन प्राप्त करने की ओर अग्रसर होता है।

यदि सामान्य रूप से देखा जाय तो लगभग पचहत्तर प्रतिशत साधक साधना मार्ग का अवलम्ब प्राथमिक रूप से किसी समस्या से मुक्ति पाने के लिए ही लेते हैं, जबकि शेष पच्चीस फीसदी में अधिकांशत: अपनी किसी इच्छा विशेष की पूर्ति के लिए साधना करने वाले साधक होते हैं। केवल एक या आधा प्रतिशत साधक ही साधना मार्ग में परम लक्ष्य को प्राप्त करने की इच्छा लेकर अथवा जीवन में कुछ नवीन घटित कर देने,कुछ विलक्षण खोज लेने की इच्छा लेकर गतिशील होते हैं।

एक साधक अपने साधनात्मक जीवन को किस बिन्दु से प्रारम्भ करता है, यह अधिक महत्वपूर्ण नहीं है, क्योंकि जन्म-जन्मान्तरों से साधना-परम्परा से अलग एवं एक प्रकार से अपने-आपको, अपने मूल स्वरूप को भुलाकर बैठा हुआ शिष्य या साधक एकाएक उच्च अध्यात्म पथ पर चलने की तैयारी कर भी नहीं सकता, किन्तु साधक के समक्ष कुछ पग साधनात्मक जीवन में चल लेने के बाद यह निर्धारित हो ही जाना चाहिए कि उसे सभी कुछ स्पर्श करते हुए, जीवन की प्रत्येक स्थिति से होकर गुजरने के बाद अपने जीवन का कल्याण स्वयं ही करना है। उसके जीवन का कल्याण या प्रचलित शब्दावली में 'मोक्ष' उसे कोई अन्य दिला भी नहीं सकता। जैसी कि एक ग्रामीण कहावत है कि 'अपने मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता'-वह ठेठ भाषा में कही गई एक सत्य उक्ति ही है।

जीवन का ताना-बाना जिस प्रकार से गुथा-बुना होता है उसको समझना सहज कार्य नहीं है और न व्यक्ति अपनी समस्त प्रवृत्तियों, इच्छाओं, आकांक्षाओं का मूल समझ सकता है।

उसकी दृष्टि के समक्ष जो कुछ होता है और जहां तक उसकी स्मृति उसका साथ देती है, वह एक छोटा-सा फलक होता है, जबकि जन्म की घटना तो इस जन्म से भी पीछे और दूर-दूर तक, कई जन्मों तक जाकर फैली होती ही है। उसको हम नकार नहीं सकते। इसका सीधा सा उदाहरण है कि व्यक्ति को अपने जीवन के प्रारम्भ के चार-पांच वर्षों की स्मृति नहीं होती, अपने बचपन की यादें धुंधली सी होती हैं या नहीं होती हैं, तो क्या इससे यह सिद्ध होता है कि हमारा बचपन ही नहीं था? उसी प्रकार यदि पूर्वजन्म की स्मृति नहीं है तो इस आधार पर पूर्वजन्म का अस्तित्व नकारा नहीं जा सकता।

अनेक जन्म की तृष्णायें, वासनायें, कर्म, पापराशि, पुण्य कार्य मिलकर ही एक नये जन्म का आधार बनते हैं और केवल व्यक्ति के अपने कर्म ही नहीं, साथ में जन्म-जन्मान्तरों के पूर्वजों के कर्म भी उसके साथ जुड़े होते हैं। इसी से जीवन में और साधना में व्यक्ति को अनेक प्रकार की बाधाएं, असफलताएं और अड़चनें देखने की बाध्यता होती है।

यहां ऐसा कहने का उद्देश्य यह नहीं है कि व्यक्ति अपने को पापी माने, अपराध बोध से ग्रस्त होकर अपने जीवन की चैतन्यता पर कुठाराघात कर ले, लेकिन बिना स्वयं को कोसे

अधूरे जिए जीवन के अंत में पीड़ा ही शेष रह जाती है कि मैंने तो कुछ और सोचा था, किसी के लिए कुछ-कुछ करना चाहा था पर क्यों खींच-तान कर अपना ही उदर पोषण जैसा कर सका यह प्रयोग इसी का उत्तर है....

'या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी'

भगवान शिव का ही स्वरूप हैं 'रुद्र'... भारतीय परम्परा के मूल देव, आर्य जीवन की पुष्टता के आधार, पाप मोचक, वरदायक और पूर्ण समाधि सुख देने में समर्थ....

और बिना अपने-आप को पीड़ित किए भी व्यक्ति यदि निष्पक्ष होकर सोचे तो अवश्य अनुभव कर सकेगा कि क्यों उसी के जीवन में बार-बार अड़चनें आती हैं। पत्नी से मन का मेल नहीं बन पाता, संतान उद्दण्ड हो जाती है, माता-पिता के द्वारा वह अधिकार या स्नेह नहीं मिल पाता, जो मिलना चाहिए या क्यों जीवन बिखरा-बिखरा ही समाप्त हो जाता है।

ऐसे जीवन के पश्चात् अन्त में पीड़ा ही शेष रह जाती है कि मैंने तो अपने जीवन के प्रारम्भ में कुछ और स्वप्न देखे थे, ऊंचा उठना चाहा था या किसी के लिए कुछ करना चाहा था, लेकिन केवल अपने उदर-पोषण तक ही किसी तरह खींच-तान कर जी सका। जीवन में यह बहुत भयावह स्थिति होती है। जिसने कुछ प्रारम्भ नहीं किया है उसके पास तो आशाएं हैं, स्वप्न हैं, लेकिन जिसने प्रारम्भ करके असफलता प्राप्त की हो उसे प्रेरणा या गति देने के लिए आशायें और स्वप्न भी नहीं होते।

जीवन के ऐसे क्षणों में टूटने और बिखरने की अपेक्षा उचित यही रहता है कि व्यक्ति एक क्षण के लिए अपने-आप को संजोये, विचार कर देखें, उसने क्या खोया है और अभी भी क्या सम्भावनायें शेष हैं। साथ ही उसके पास क्या मार्ग है जिस पर चलकर वह अभी भी कुछ अर्जित कर सकता है और क्षतिपूर्ति भी कर सकता है। यह मार्ग होता है साधना का, जो किसी अंधकार की ओर नहीं धकेलता। विसंगति केवल यह हो जाती है कि व्यक्ति को समस्या के लिए उचित साधना पद्धति नहीं ज्ञात हो पाती। यह उसे ज्ञात हो सकती है तो केवल गुरु-आश्रय लेते हुए गुरु-मार्ग का अवलम्ब लेते हुए, क्योंकि गुरुदेव ही वे माध्यम हैं जो अपने शिष्य या साधक को साधनाओं के अथाह समुद्र में से चुनकर सही समय के अनुरूप सही साधना का ज्ञान करा सकते हैं। उचित मुहूर्त के अवसर पर की गई साधना कभी भी निष्फल हो ही नहीं सकती।

आगामी दिवसों में एक ऐसा ही विशेष मुहूर्त उपस्थित हो रहा है जिस दिन एक लघु साधना के द्वारा साधक अपने जीवन के साथ-साथ चल रही विषमताओं की काली छाया को मिटा सकता है। यह दिवस है भाग्योदय जयंती जो 26.07.22 को पड़ रही है, जीवन की विषमताएं समाप्त करने के लिए यह वर्ष का एक विशिष्ट मुहूर्त है। जीवन में दुर्भाग्य की काली छाया और अज्ञानवश अर्जित किए गए पापों को समाप्त करने के लिए जो देव समर्थ हैं वे हैं भगवान रुद्र। भगवान शिव के वरदायक स्वरूप का ही दूसरा नाम है रुद्र। रुद्र न तो उग्र है, न क्रोधी, केवल शिव है। अपने भक्तों की कष्ट-बाधा दूर करने के लिए अग्नि स्वरूप बनकर, तीव्र स्वरूप, प्रज्ज्वलित स्वरूप में पूर्ण करुणामय भगवान रुद्र का स्वरूप तो अत्यन्त मनोहारी है। गौर वर्णीय, नीलकण्ठिय एवं गुलाबी आभा से युक्त प्रसन्नता से मुस्कराते हुए अतीव सुंदर ओष्ठद्वय के साथ भगवान रुद्र पूर्णरूप से आत्मलीन और समाधि में आनन्दमग्न देव हैं।

ऐसे भगवान रुद्र की आराधना-साधना ही वह उपाय है जिसके द्वारा साधक के जीवन में कोई नया अध्याय लिखा जा सकता है। वह स्वयं भी उनकी तप: अग्नि में तप कर खरे स्वर्ण की भांति निखर सकता है और आगे का जीवन उन्हीं के समान निर्मल एवं आनन्द की पराकाष्ठा से भरपूर करके व्यतीत कर सकता है।

भगवान शिव के रुद्र स्वरूप के विषय में वेदों में पर्याप्त वर्णन मिलता है और सिद्ध होता है कि हमारे पूर्वज मूलत: रुद्रोपासना करते रहने के कारण ही अपने जीवन में स्वस्थ, सबल, पुष्ट, तेजस्वी एवं पूर्ण समाधि सुख को प्राप्त करने वाले बन सके। भगवान शिव के रुद्र स्वरूप को वेदों में साक्षात् अग्नि ही माना गया, उनकी एक संज्ञा 'शर्वाग्नि' इस बात की पुष्टि करती है। ऐसी अग्नि का आश्रय लेकर, ऐसे अग्नि स्वरूप भगवान शिव की शरण लेकर साधना के माध्यम से उनकी प्रखरता को अपने रोम-रोम में

भगवान रुद्र की आराधना-साधना ही वह उपाय है जिसके द्वारा साधक के जीवन में कोई नया अध्याय लिखा जा सकता है। वह स्वयं भी उनकी तप: अग्नि में तप कर खरे स्वर्ण की भांति निखर सकता है और आगे का जीवन उन्हीं के समान निर्मल एवं आनन्द की पराकाष्ठा से भरपूर करके व्यतीत कर सकता है।

उतार कर जीवन को निर्मल, चैतन्य, पाप-रहित बनाकर ही वह सब कुछ अर्जित किया जा सकता है, जो हमारे जीवन में 'शिवत्व' प्राप्ति का आधार बने, क्योंकि भगवान रुद्र अपने सम्पूर्ण स्वरूप में पाप नाशक ही हैं-

या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी (यजुर्वेद)

इस वर्ष यह दिवस मंगलवार को पड़ रहा है, जो रुद्रावतार श्री हनुमान जी का तेजस्वी दिवस है। साधक प्रात: ब्रह्म मुहूर्त में उठकर ही स्नान आदि से शुद्ध होकर श्वेत वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठ जाए। अपने सामने सफेद वस्त्र पर गुरु चित्र स्थापित कर उसके दाहिनी ओर 'नर्मदेश्वर शिवलिंग' स्थापित करें। भगवान रुद्र की समस्त शक्तियों का प्रतिनिधित्व करता यह विशिष्ट शिवलिंग जो देखने में विविध वर्णीय होता है, उसकी स्थापना एवं उस पर सम्पन्न की गई साधना के द्वारा ही साधक के जीवन के पाप, दोष एवं ताप का निवारण हो सकता है। प्रथमत: संक्षिप्त गुरु पूजन करें, गुरु मंत्र की एक माला मंत्र-जप करें एवं शिवलिंग पर दुग्ध धार चढ़ाते हुए ॐ नम: शिवाय का उच्चारण करें, यदि गंगाजल हो तो उससे भी अभिषेक करें, शिवलिंग पर भेंट स्वरूप एक गौरी शंकर रुद्राक्ष भेंट चढ़ाकर गुलाब के पुष्पों, अबीर, कुंकुम, गुलाल व श्वेत चंदन से भी शिवलिंग व गौरी शंकर रुद्राक्ष का पूजन करें, इसके उपरान्त एक भाग्यबाधा निवारण यंत्र स्थापित कर रुद्राक्ष की माला से निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र-जप करें।

मंत्र

।। ॐ ब्लौं सदाशिवाय नम: ।।

मंत्र-जप सम्पूर्ण हो जाने पर पुन: संक्षिप्त शिव पूजन करें एवं गुरु पूजन कर इस साधना की सम्पूर्णता प्राप्त करें। इस साधना में प्रयुक्त भाग्यबाधा निवारण यंत्र, साधना की समाप्ति के तुरन्त बाद किसी शिव मंदिर में चढ़ा दें अथवा पवित्र नदी में जाकर समर्पित कर दें।

गौरी शंकर रुद्राक्ष को गले में धारण कर लें, जिससे इस साधना का पूर्ण लाभ प्राप्त हो सके और निरंतर उसके स्पर्श से शरीर की जड़ता, रोग, अशक्तता समाप्त होकर चैतन्यता बनी रहे। शिवलिंग को सम्मानपूर्वक अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें। यदि सिर्फ एक दिवस का ही प्रयोग करते हैं तो भाग्यबाधा निवारण यंत्र के साथ जिस रुद्राक्ष माला से उपरोक्त मंत्र-जप किया है उसे भी जल में विसर्जित कर दें। यद्यपि कुछ शास्त्रों में विवरण मिलता है कि यदि साधक इस प्रयोग को भाग्योदय जयंती से लेकर श्रावण अमावस्या तक सम्पन्न कर लेता है तो उसे आने वाले समय में भी पर्याप्त लाभ मिलता है और एक प्रकार से इस प्रयोग का लाभ स्थायी हो जाता है। साधक यदि चाहे तो इस एक दिवसीय प्रयोग को आगे के क्रम के रूप में 28.07.22 तक नित्य कर सकता है। प्रतिदिन पांच माला उक्त मंत्र की जपने के पश्चात् अंतिम दिन भी रुद्राक्ष की माला जल में विसर्जित कर सकता है।

साधना सामग्री- 700/-

शीतली कुम्भक प्राणायाम

इस प्राणायाम का अभ्यास ग्रीष्मकाल में विशेष रूप से उपयोगी और लाभप्रद है क्योंकि इसका अभ्यास करने से शरीर में शीतलता का अनुभव होता है। जिनके शरीर को प्रकृति शीतल हो, कफ कुपित रहता हो। उन्हें इस प्राणायाम का अभ्यास अपनी स्थिति को देखते हुए अनुकूल मात्रा में ही करना चाहिए। नियमित रूप से योगासन और प्राणायाम का अभ्यास करने से शरीर स्वस्थ और सुडौल बना रहता है।

विधि :

आसन बिछा कर सुखासन की मुद्रा में बैठ जाएं। जीभ की आकृति कौए की चोंच के समान बना कर मुँह से बाहर निकाल कर, जीभ के दोनों किनारों को उठा कर नाली जैसी बना लें। अब इस जीभ से प्राणवायु को धीरे-धीरे अन्दर ले और पेट को खूबभर कर यथाशक्ति सांस अंदर ही रोक कर कुम्भक करें। जब घबराहट होने लगे यानी सांस रोके रखना कठिन लगे तब नाक से धीरे-धीरे बाहर छोड़ दें। ऐसा बार-बार, जितनी बार करना चाहे, करें। शीतकारी प्राणायाम भी इसी विधि से, जरा से परिवर्तन के साथ किया जाता है। जीभ को नली के रूप में बाहर निकाल कर सीत्कार की ध्वनि करते हुए सांस अंदर लेकर, रोके (कुम्भक किये) बिना तत्काल नाक से बाहर वेग पूर्वक फेंक दें। इस प्रकार बार-बार करें।

लाभ

इन दोनों विधियों से होने वाले लाभों के विषय में घेरण्ड संहिता में कहा गया है - शीतली कुम्भक प्राणायाम करने से अजीर्ण व कफपित्त का शमन होता है, प्यास और पित्तविकार पैदा नहीं होते, शरीर में शान्ति, कान्ति और शीतलता का संचार होता है। उच्च रक्तचाप के रोगी के लिए यह प्राणायाम हितकारी है। इसी प्रकार शीतकारी प्राणायाम का अभ्यास करने से चेहरे के सौन्दर्य और तेज की वृद्धि होती है, पित्त शान्त रहता है और शीतली प्राणायाम से होने वाले लाभों में वृद्धि होती है। अम्लपित्त, अनिद्रा, दाह, उच्च रक्तचाप के रोगी के लिए, ग्रीष्मकाल में करने योग्य यह प्राणायाम विधियां बहुत उपयोगी सिद्ध होती है। शरीर को ठंडक पहुँचाता है। जिन व्यक्तियों का स्वभाव गर्म है, क्रोध शीघ्र आता है, उनके लिए विशेष लाभकारी है।

अपनाइये

योग

और भगाइये शारीरिक मानसिक रोग

कुम्भ स्नान चल रहा था। स्नान करने वाले घाटों पर भारी भीड़ लग रही थी। भगवान शिव पार्वती के साथ आकाश मार्ग से गुजरे। पार्वती ने इतनी भीड़ का कारण पूछा, भगवान आशुतोष ने कहा, कुम्भ स्नान चल रहा है। इस समय स्नान करने वाले लोग पापों से मुक्त होकर स्वर्ग जाते हैं, उसी लाभ प्राप्ति के लिए यह स्नानार्थियों की भीड़ जमा है। पार्वती का कौतुहल तो शांत हो गया परन्तु एक नया सन्देह उत्पन्न हो गया। 'इतने लोग स्वर्ग कैसे पहुंच सकते हैं।'-माँ पार्वती ने अपना संदेह प्रकट किया।

भगवान शिव बोले-'शरीर को गीला करना एक बात है और मन की मलीनता धोने वाला स्नान एक अलग बात है। मन को धोने वाले ही स्वर्ग जा पाते हैं और जो भी ऐसे लोग होंगे, उन्हीं को स्वर्ग की प्राप्ति होगी।'

पार्वती का सन्देह घटने के स्थान पर और बढ़ गया।

पार्वती बोली-'यह कैसे पता चले कि किसने सिर्फ शरीर गीला किया और किसने अपने मन को यथार्थ में धोकर पवित्र किया ?'

अब यह तो प्रत्यक्ष उदाहरण से ही समझाया जा सकता था अतः भगवान शिव उसी रास्ते में एक कुरूप कोढ़ी का रूप धर के लेट गये और पार्वती एक सुन्दर स्त्री का रूप बनाकर अच्छे वस्त्र धारण कर बैठ गई। दोनों रास्ते में बैठे थे, उसी रास्ते से स्नानार्थियों की भीड़ स्नान के लिए जा रही थी। भीड़ उन्हें देखने के लिए रुकती और उनकी अनमेल स्थिति के बारे में पूछती। पार्वती जी उन्हें एक रटा-रटाया हुआ विवरण सुनाती कि 'यह कोढ़ी मेरा पति है। गंगा स्नान की इच्छा से आए हैं। गरीबी के कारण इन्हें कंधे पर रखकर लाई हूँ। बहुत थक जाने के कारण विश्राम के लिए हम यहां बैठे हैं।'

अधिकांश स्नानार्थियों की नीयत डिगती हुई दिखती। वे उन्हें प्रलोभन देते और कोढ़ी पति को छोड़कर अपने साथ चलने की बात कहते। पार्वती यह सुनकर लज्जा से गढ़ गई कि 'भला ऐसे भी लोग स्नान करने आते हैं क्या?' यह सब सुनकर उनकी निराशा देखते ही बनती थी।

संध्या हो चली। एक उदार व्यक्तित्व आया, उसने भी कारण पूछा। पूरी बात सुनकर उसकी आँखों में आंसू आ गये। उसने कहा 'मां क्या मैं आपकी सहयता करूँ?' सहमति पाकर कोढ़ी को कन्धे पर लादकर तट तक पहुंचाया। उन्हें स्नान करवाया और साथ में जो सत्तू लाया था, उन दोनों को खिलाया, साथ ही उन्हें बार-बार नमन करते हुये कहा कि 'आप जैसी देवियां ही इस पृथ्वी की स्तम्भ हैं। धन्य हैं आप, जो इस प्रकार से अपना धर्म निभा रही हैं।'

प्रयोजन पूरा हुआ। भगवान शिव पार्वती के साथ उठकर कैलाश की ओर चले गये। रास्ते में पार्वती से कहा-'पार्वती इतनों में एक ही व्यक्ति ऐसा था जिसने मन धोया और स्वर्ग का मार्ग प्रशस्त किया।'

पार्वती समझ गई कि स्नान का महात्म्य सही होते हुये भी.... क्यों लोग उसके पुण्य फल से वंचित रह जाते हैं।

राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष - प्रारम्भ सुखप्रद नहीं होगा। मन अशांत रहेगा। कोई छोटी सी बात लड़ाई-झगड़े का कारण बन सकती है। इस समय सहयोग नहीं मिलेगा। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में लगा रहेगा। आप गरीबों की सहायता करेंगे। अटके हुए रुपये प्राप्त होंगे। किसी समस्या में उलझ सकते हैं। कैरियर को लेकर टेंशन रहेगी। माह के मध्य में समय हितकारी है। कर्मचारी वर्ग को उच्च पदों की प्राप्ति हो सकती है। शत्रु वर्ग को शांत रखने में सक्षम रहेंगे। कोई अनहोनी घटना भी सम्भव है। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। इस समय खर्च की अधिकता रहेगी। परिवार में सहयोग का वातावरण रहेगा। परिश्रम का फल मिलेगा। तीर्थ यात्रा हो सकती है। आखिरी तारीखों में आवेश में कोई गलत कदम न उठायें। आर्थिक नुकसान हो सकता है। आप इस माह सर्व रोग निवारण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 5, 6, 7, 14, 15, 23, 24, 25

वृष - प्रारम्भ सुखप्रद रहेगा। व्यापार में सफलता मिलेगी। पैतृक सम्पति में हिस्सा मिल जायेगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ हो सकता है। स्वास्थ्य का ख्याल रखें। शत्रु परेशान करेंगे। धीरे-धीरे परिस्थितियां अच्छी होंगी। मनचाहा कार्य मिलेगा। व्यापार में उन्नति होगी। घरेलू उलझनों एवं छोटी-छोटी बातों के कारण वाद-विवाद की सम्भावना है। अपने ही हानि पहुंचाने की कोशिश करेंगे। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। शत्रुओं से सावधान रहें। विपरीत परिस्थितियों में भी आत्मविश्वास बना रहेगा। खर्च करने में संयम रखें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें, व्यर्थ की यात्रा न करें, वाणी पर नियंत्रण रखें। सरकारी कर्मचारी वर्ग का प्रमोशन हो सकता है, सोचे गये कार्य पूरे होंगे। लॉटरी/सट्टे आदि पर धन न लगायें। फालतू के कार्यों में समय व्यतीत न करें। भैरव दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 8, 9, 16, 17, 25, 26, 27

मिथुन - माह का प्रारम्भ उचित परिणाम लायेगा। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। विद्यार्थी वर्ग प्रसन्न रहेगा। जोखिम भरी योजनाओं में धन लगाने से पूर्व अच्छी तरह सोच-विचार कर लें। नौकरी पेशा लोगों को वरिष्ठ अधिकारियों का आदेश न मानने पर दंडित किया जा सकता है।। धार्मिक पर्यटक स्थल की यात्रा सम्भव है। परिवार के सदस्यों का सहयोग मिलेगा। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर मिलेंगे। बाधायें रहेंगी, सोच-समझ कर निर्णय लें। कोई गलती बार-बार न दोहरायें। भौतिक सुखों में वृद्धि होगी। कोर्ट आदि के मामले सुलझेंगे। कोई छोटी बात दाम्पत्य जीवन में तनाव पैदा कर सकती है। परिवार में मतभेद हो सकते हैं। वाणी पर संयम रखें। आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। संतान पक्ष में सुधार होगा। गृहस्थ सुख दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 2, 10, 11, 18, 19, 20, 28, 29, 30

कर्क - प्रारम्भ का सप्ताह संतोषजनक रहेगा। व्यापार में प्रगति होगी। साथियों का सहयोग मिलेगा। जीवनसाथी के साथ आत्मीयता रहेगी। मित्रों का परामर्श आगे बढ़ने में सहायक होगा। बनाई गई योजना में भविष्य में लाभ मिलेगा। दूसरे सप्ताह में सतर्क रहें। कार्य बिगड़ सकते हैं। बिना वजह किसी से उलझें नहीं। पर्वतीय स्थल की यात्रा हो सकती है। स्वयं के प्रयास से कार्य सिद्ध होंगे। माह के मध्य में असफलता का मुंह देखना पड़ सकता है। अविवाहितों को विवाह के प्रस्ताव आयेंगे। आकस्मिक रास्तों से धन प्राप्ति सम्भव है। नौकरीपेशा लोगों की आय वृद्धि सम्भव है। विद्यार्थियों के लिए शुभ समय है। आप सूझ-बूझ से काम लें, अच्छे परिणाम मिलेंगे। पुराने मित्र से मुलाकात होगी। वाणी पर संयम रखें फालतू के कार्यों में न पड़ें। मनोकामनापूर्ति दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 3, 4, 5, 12, 13, 20, 21, 22, 30

सिंह - प्रारम्भ के दिन शुभ नहीं रहेंगे। दूसरों की भलाई में भी बदनामी मिल सकती है। सुख का अनुभव नहीं होगा। नया वाहन खरीदने से इस समय बचें, यात्रा में कष्ट उठाना पड़ सकता है। अचानक कोई अप्रिय समाचार मिल सकता है। परिवार में किसी बात पर मतभेद हो सकते हैं। गरीबों की सहायता में आनंद अनुभव करेंगे। आय के स्रोत बढ़ेंगे। नौकरीपेशा लोगों का ट्रांसफर इच्छानुसार हो सकता है। किसी मित्र का स्वास्थ्य खराब होने से चिंतित रहेंगे। शत्रुपक्ष परेशान करेगा। माह के अंत में आने वाले परिवर्तनों से वांछित लाभ की प्राप्ति होगी। मनचाहा रोजगार भी मिल सकता है। आप सर्व बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 5, 6, 7, 14, 15, 23, 24, 25

कन्या - माह का प्रारम्भ सुखद होगा। चित्त प्रसन्न रहेगा। पुराने मित्र से मुलाकात होगी। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। बेरोजगारों को ताने सुनने पड़ेंगे। गलत राह पर न जायें, रोजगार के अवसर मिलेंगे। मानसिक संतोष रहेगा। संतान की ओर से चिंतित न हों। चलते-फिरते किसी

उलझे नहीं। काम बिगड़ सकता है। माह का मध्य अनुकूल है। जिम्मेदारियां निभाने में सक्षम रहेंगे। किसी अपने की तबीयत खराब होने से परेशान रहेंगे। प्यार में सफलता मिलेगी। ऑफिस में परिश्रम से सभी का दिल जीत लेंगे। विद्यार्थी वर्ग की कम्प्यूटर के कार्य में रुचि रहेगी। माह की अन्तिम तारीख में प्रेम में गलतफहमियां पैदा होने से तनाव रहेगा। साझेदारी व्यापार में आर्थिक हानि हो सकती है। आप इस माह पूर्णत्व दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 8, 9, 16, 17, 25, 26, 27

तुला - सप्ताह की शुरुआत अच्छे कार्यों से होगी। मन प्रसन्न रहेगा। दूसरों की सहायता करेंगे। उच्च अधिकारियों से सम्पर्क बनेंगे। इस समय व्यापार उन्नति या नौकरी में पदोन्नति की सम्भावना है। आत्मविश्वास बनाये रखें, फालतू के कार्यों में ऊर्जा न खराब करें। व्यय पर अंकुश लगायें। दूसरे सप्ताह में समय श्रेष्ठ नहीं है, गलत कार्यों में लिप्त न हो, निर्णय बहुत सोच-समझ कर लें। कोई अनजान व्यक्ति से मुलाकात आप के जीवन में परिवर्तन लायेगी। कार्य के सिलसिले में यात्रा लाभदायक होगी। प्रेम में सतर्क रहें, धोखा मिल सकता है। राह भी भटक सकती है, आर्थिक तंगी रहेगी। स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। किसी से बेवजह वाद-विवाद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। काम में रुकावटें आयेंगी। आप भाग्योदय दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 2, 10, 11, 18, 19, 20, 28, 29, 30

वृश्चिक - प्रारम्भ का सप्ताह लाभदायक है। इस समय बनाई गई योजना भविष्य में लाभप्रद होगी। विदेश यात्रा का योग है। मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। दूसरे सप्ताह में थोड़ा सम्भल कर रहें। विरोधी नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। खर्च की अधिकता रहेगी। बुद्धि-विवेक से सभी का जवाब देने में सक्षम रहेंगे। किसी कर्मचारी से वाद-विवाद हो सकता है। परेशानी में मित्रों का सहयोग मिलेगा। विद्यार्थियों के लिए उन्नतिदायक समय है। पुराने मित्र से मुलाकात होगी, कम्प्यूटर के क्षेत्र में जॉब के अवसर हैं। खर्चों पर नियंत्रण रखें अन्यथा ऋण लेना पड़ सकता है। जीवनसाथी से अनबन हो सकती है। किसी व्यक्ति का साथ व्यापार में लाभ देगा। बेटी का रिश्ता हो सकता है। परिस्थितियाँ अनुकूल होगी। गृहस्थ सुख दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 3, 4, 5, 12, 13, 20, 21, 22, 30, 31

धनु - प्रारम्भ शुभ नहीं है। बिना कार्य के अनावश्यक यात्रा हो सकती है। मन में आत्मविश्वास कमजोर रहेगा। शत्रु पक्ष हावी रहेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए अच्छा समय है। दूसरे सप्ताह के प्रारम्भ में की गई प्लानिंग सफल होगी। बाद में छोटी सी किसी बात पर वाद-विवाद की स्थिति हो सकती है। जरूरत के समय कोई सहयोग नही देगा। अविवाहितों का विवाह सम्भव है। धर्मशास्त्रों के पठन में रुचि रहेगी। गुप्त रहस्यों को जानने की ओर झुकाव हरेगा। जो सपने संजोये थे, वह पूरे होते दिखाई देंगे। लॉटरी या सट्टे में पैसे न लगायें। माह के अंत में घर-परिवार में अनबन हो सकती है। फालतू के कामों में ध्यान न दें। महत्वपूर्ण व्यक्तियों से पहचान बढ़ेगी। आप कुण्डलिनी जागरण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 5, 6, 7, 14, 15, 23, 24, 25

मकर - माह प्रारम्भ के सप्ताह की शुरुआत सफलतादायक होगी। किसी अधिकारी के सहयोग से नौकरी मिलने के आसार हैं। कोर्ट केस में अनुकूलता मिलेगी। अचानक कोई शुभ सूचना मिलेगी। जमीन-जायदाद का बटवारा शांति से हो जाएगा। परिवार के सदस्य

सर्वार्थ सिद्धि योग	- जुलाई-6, 9, 15, 19, 21, 25, 28
अमृत सिद्धि योग	- जुलाई-25, 28
रवि योग	- जुलाई-2, 4, 9, 10, 12, 13, 19
गुरु पुष्य योग	- जुलाई-28 (प्रातः 7.05 से जुलाई 29 के प्रातः 6.05 तक)

प्रसन्न रहेंगे। व्यापार में प्रगति होगी। किसी पर भी सोच-समझकर विश्वास करें। कोई धोखा दे सकता है। नौकरीपेशा लोगों की ऑफिस में नोक-झोक हो सकती है। माह का मध्य थोड़ा प्रतिकूल है। बाद में व्यापार में लाभ के अवसर हैं। सभी सोचे कार्य पूर्ण करने में सफल होंगे, परिवार में कुछ अनबन का वातावरण बनेगा। जीवनसाथी का सहयोग रहेगा। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। विदेश यात्रा के अवसर हैं। आप अष्ट लक्ष्मी दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 8, 9, 16, 17, 25, 26, 27

कुम्भ - माह का प्रारम्भ शुभप्रद है। दिक्कतें दूर होकर काम पूर्ण होंगे। कर्ज से मुक्ति मिलेगी, आत्मविश्वास बढ़ा रहेगा। सही निर्णय लेने में समक्ष होंगे। प्रोपर्टी के कार्य में लाभ होगा, आय के स्रोत बढ़ेंगे। दूसरे सप्ताह में किसी मुसीबत में फंस सकते हैं। चेहरे पर उदासी छा जायेगी। अब पुत्र व्यापार में आपकी मदद करेगा। बेटी का रिश्ता हो सकता है, बाहर घूमने का प्रोग्राम बनेगा। कोई ऐसा कार्य न करें, जिससे शक के दायरे में आयें। तीसरे सप्ताह में आपके हित में घटनाएं होंगी। स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखें। घर के नौकर पर अधिक विश्वास न करें, आर्थिक नुकसान हो सकता है। दाम्पत्य जीवन में तनाव का वातावरण रहेगा। आप पूर्ण गृहस्थ सुख दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 2, 10, 11, 18, 19, 20, 28, 29, 30

मीन - प्रथम सप्ताह उत्साहवर्द्धक रहेगा। कम्प्यूटर के क्षेत्र में नौकरी मिल जायेगी। प्यार में सफलता मिलेगी। यात्रा से व्यापार के कार्य में वृद्धि होगी। आपकी मेहरत रंग लायेगी। अपनों से सावधान रहें, हानि पहुंचा सकते हैं। अविवाहितों का विवाह हो सकता है। कोई कारण आपके चेहरे पर उदासी लायेगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मास शुभ है। पुराने मित्रों से मुलाकात प्रसन्नता देगी। विद्यार्थियों की रुचि अध्ययन में बढ़ेगी। आखिरी के सप्ताह में कोई महत्वपूर्ण कार्य बिना सोचे किसी और को न सौंपे अन्यथा हानि हो सकती है। इस समय शत्रु पक्ष हावी हो सकता है। यात्रा से लाभ होगा। मन दान-पुण्य में लगेगा। आखिरी तारीख आपको आर्थिक लाभ दिलायेगी। आप भाग्योदय दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 3, 4, 5, 12, 13, 20, 21, 22, 30, 31

इस मास व्रत, पर्व एवं त्यौहार

06.07.22	बुधवार	विवस्वत सप्तमी
07.07.22	गुरुवार	महिषासुर मर्द्दिनी दिवस
10.07.22	रविवार	हरिशयनी एकादशी
13.07.22	बुधवार	गुरु पूर्णिमा
16.07.22	शनिवार	व्रजेश्वरी दिवस
19.07.22	मंगलवार	शीतला सप्तमी
24.07.22	रविवार	कामिका एकादशी
26.07.22	मंगलवार	भाग्योदय जयंती
31.07.22	रविवार	मधुस्रवा हरियाली तीज

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रात: 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (जुलाई-3, 10)	दिन 06.00 से 08.24 तक 11.36 से 02.48 तक 03.36 से 04.24 तक रात 06.48 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 06.00 तक
सोमवार (जुलाई-4, 11)	दिन 06.00 से 07.36 तक 09.12 से 11.36 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.48 से 03.36 तक
मंगलवार (जुलाई-5, 12)	दिन 10.00 से 11.36 तक 04.30 से 06.00 तक रात 06.48 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 05.12 से 06.00 तक
बुधवार (जुलाई-6, 13)	दिन 06.48 से 10.00 तक 02.48 से 05.12 तक रात 07.36 से 09.12 तक 12.24 से 02.48 तक
गुरूवार (जुलाई-7)	दिन 06.00 से 07.36 तक 10.00 से 11.36 तक 04.24 से 06.00 तक रात 09.12 से 11.36 तक 02.00 से 04.24 तक
शुक्रवार (जुलाई-1, 8)	दिन 06.00 से 06.48 तक 07.36 से 10.00 तक 12.24 से 03.36 तक रात 07.36 से 09.12 तक 10.48 से 11.36 तक 01.12 से 02.48 तक
शनिवार (जुलाई-2, 9)	दिन 06.00 से 06.48 तक 10.30 से 12.24 तक रात 08.24 से 10.48 तक 02.48 से 03.36 तक 05.12 से 06.00 तक

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (जुलाई-17, 24, 31)	दिन 06:00 से 10:00 तक रात 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 06:00 तक
सोमवार (जुलाई-18, 25)	दिन 06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (जुलाई-19, 26)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (जुलाई-20, 27)	दिन 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरूवार (जुलाई-14, 21, 28)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (जुलाई-15, 22, 29)	दिन 06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (जुलाई-16, 23, 30)	दिन 10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

जुलाई-22

11. प्रातः गुरु मंत्र की 8 माला मंत्र जप करके ही जाएं।
12. हनुमान चालीसा का एक पाठ करें।
13. आज गुरु पूर्णिमा है, प्रातः गुरु पूजन विधि-विधान से करें एवं पत्रिका में प्रकाशित साधना करें।
14. आज से श्रावण मास प्रारम्भ है। भगवान शिव पर जल चढ़ायें।
15. तुलसी के पौधें में जल अर्पित करें।
16. आज प्रातः पूजन के बाद किसी असहाय को अन्न दान करें।
17. भगवान सूर्य को अर्घ्य दें।
18. आज श्रावण का प्रथम सोमवार है, भगवान शिव का अभिषेक करें।
19. किसी देवी मन्दिर में एक दीपक जलायें, मनोकामना पूर्ण होंगी।
20. आज प्रातः पूजन के बाद निम्न मंत्र का 5 मिनट जप करें-ॐ ह्रीं ॐ।
21. आज सद्गुरुदेव जन्मदिवस पर गुरु गीता का एक पाठ करें।
22. मां दुर्गा का मंत्र ॐ दुं दुर्गाय नमः का 21 बार जप करके जाएं।
23. आज सरसों का तेल कुछ दक्षिणा के साथ दान करें।
24. आज कामिका एकादशी पर भगवान श्रीकृष्ण का पूजन करके जाएं।
25. श्रावण सोमवार पर ॐ नमः शिवाय का 1 माला जप करके जाएं।
26. बजरंग बाण का एक पाठ करके कार्य पर जाएं।
27. घी का दीपक लगायें एवं 'श्रीं' बीज मंत्र का 108 बार जप करें।
28. श्रावण अमावस्या पर किसी गरीब को भोजन करायें।
29. आज श्रावण सोमवार पर पत्रिका में प्रकाशित साधना सम्पन्न करें।
30. आज शनि शांति के लिए शनि मुद्रिका धारण कर सकते हैं।
31. आज मां गौरी के मन्दिर में एक दीपक जलायें एवं पुष्प अर्पित करें।

अगस्त-22

1. भगवान शिव का दुग्ध मिश्रित जल से अभिषेक करें।
2. आज नाग पंचमी पर पत्रिका में प्रकाशित साधना सम्पन्न करें।
3. भगवान विष्णु का पूजन करें एवं प्रसाद चढ़ाकर बच्चों में बांट दें।
4. आज केसर का तिलक करके घर से जाएं।
5. 'तांत्रोक्त नारियल' पर सरसों के तेल एवं कुंकुम का लेप करके निर्जन स्थान पर गाड़ दें, बाधाएं समाप्त होंगी।
6. आज भं भैरवाय नमः मंत्र का 21 बार उच्चारण करके जाएं।
7. आज प्रातःकाल उच्चरित वेद ध्वनि सी.डी. का श्रवण करें।
8. आज घर में पारद शिवलिंग पर अभिषेक करें और जल पूरे घर में छिड़कें।
9. हनुमान मन्दिर में बेसन के लडडू का भोग लगाकर बच्चों में बांटें।
10. गाय माता को रोटी खिलायें।

येनोदात्त तपः चयेन सततं सन्यस्तमाभूषितम्, ब्रह्मानन्द रसेनषिक्त मनसा शिष्याश्च संभाविताः।
ब्रह्माण्डं नवरागरंजित वपुः हस्तामलवद् धृतम्, सोऽयं भूतिविभूषितः गुरुवरः निखिलेश्वरः पातु माम्।।

जिसने अपने उदात्त तपः पुंज से संन्यास धर्म को विभूषित किया, ब्रह्मानन्द में निरंतर अभिशिक्त जिसने अपने अनन्त शिष्यों को अमृत सिंचन किया, नई-नई विभिन्न कलाओं से जिसने ब्रह्माण्ड को 'हस्तामलकवत्' धारण किया है, ऐसे अनन्त विभूतियों से भूषित परम पूज्य गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द मेरी रक्षा करें।

श्री निखिलेश्वरानन्द कवचम्

साधक के लिए अमृत घट स्वरूप

सिद्धाश्रम के सर्वश्रेष्ठ योगी श्रीधरानन्द जी ने इस कवच को ब्रह्माण्ड से प्राप्त किया। सिद्धाश्रम के प्रत्येक योगी बाहरी बाधाओं और तंत्र प्रयोगों से रक्षा हेतु तथा साधना में सिद्धि प्राप्त करने के लिए अपने सामने परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का चित्र स्थापित करके तथा अपनी भुजा पर श्री निखिलेश्वरानन्द कवच धारण कर इस पाठ का प्रयोग करते हैं, जिससे वे निरंतर सभी दृष्टियों से उन्नति की ओर अग्रसर होते हैं।

ठीक इसी प्रकार साधक और शिष्य भी निरंतर अपने पूजा क्रम में इस कवच का पाठ करें तो वह साधक और उसका परिवार शरीर बाधा, राज्य बाधा एवं सभी बाधाओं से मुक्त रहता है।

ॐ अस्य श्री निखिलेश्वरानन्द कवचस्य, श्री मुद्गल ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्री गुरुदेवो निखिलेश्वरानन्द परमात्मा देवता। 'महोस्त्वं रूपं च'' इति बीजम्। ''प्रबुद्धं निर्नित्यमिति'' कीलकम्। ''अथौ नैत्रं पूर्ण'' इति कवचम्। श्री भगवतो निखिलेश्वरान्द प्रीत्यर्थं पाठे विनियोगः।

करन्यास

श्री सर्वात्मने निखिलेश्वराय - अंगुष्ठाभ्या नमः
श्री मंत्रात्मने पूर्णेश्वराय - तर्जनीभ्यां नमः
श्री तंत्रात्मने वागीश्वराय - मध्यमाभ्यां नमः
श्री यंत्रात्मने योगीश्वराय - अनामिकाभ्यां नमः
श्री शिष्यप्राणात्मने सच्चिदानन्द प्रियाय - करतल कर पृष्ठाभ्यां फट।

अंग न्यास

श्रींशेश्वरः हृदयाय नमः,
ह्रीं शेश्वरः शिरसे स्वाहा।
क्लींशेश्वरः शिखायै वषट्,
तपसेश्वरः कवचाय हुम्
तापेश्वरः नेत्रत्रयाय वौषट्
एकेश्वरः करतल पर पृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्।

रक्षात्मक देह कवचम्

शिरः सिद्धेश्वरः पातु, ललाटं च परात्परः
नेत्रे निखिलेश्वरानन्दः, नासिका नरकान्तकः।।1।।

कर्णौ कालात्मकः पातु, मुखं मंत्रेश्वरस्तथा।
कण्ठं रक्षतु वागीशः भुजौ च भुवनेश्वरः।।2।।

स्कन्धौ कामेश्वरः पातु, हृदय ब्रह्मवर्चसः।
नाभिं नारायणो रक्षेत् उरू ऊर्जस्वलोऽपि वै।।3।।

जानुनी सच्चिदानन्दः पातु पादौ शिवात्मकः
गुह्यं लयात्मकः पायात् चित्तं चिन्तापहारकः।।4।।

मदनेशः मनःपातु, पृष्ठं पूर्णप्रदायकः
पूर्वं रक्षतु तंत्रेशः यंत्रेशः वारुणीं तथा।।5।।

उत्तरं श्रीधरः रक्षेत् दक्षिणं दक्षिणेश्वरः
पातालं, पातु सर्वज्ञः ऊर्ध्वं मे प्राणसंज्ञकः।।6।।
कवचेनावृतो यस्तु यत्र कुत्रापि गच्छति
तत्र सर्वत्र लाभः स्यात् किंचिदत्र न संशयः।।7।।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितं
धनवान् बलवान् लोके जायते समुपासकः।।8।।
ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः
नश्यन्ति सर्वविघ्नानि दर्शनात् कवचावृतम्।।9।।
य इदं कवचं पुण्यं, प्रातः पठति नित्यशः
सिद्धाश्रम पदारूढः ब्रह्मभावेन भूयते।।10।।

कवच पाठ पूर्ण करने के बाद साधक नित्य पूजा क्रम पूर्ण करके गुरु आरती सम्पन्न करें।

निखिलेश्वरानंद कवच-1100/-

नाग अथवा सर्प की पूजा का स्वरूप पूरे भारतवर्ष में मिलता है,

प्रत्येक गांव में ऐसा स्थान अवश्य होता है, जिसमें नाग देव की प्रतिमा बनी होती है और उसका पूजन किया जाता है,

नागपंचमी के दिन को तो एक उत्सव रूप में मनाया जाता है,

इसके पीछे ठोस आधार है, कारण है, समय के अनुसार मूल स्वरूप को अवश्य भुला दिया गया है।

क्या नाग देवता हैं?

जिस प्रकार मनुष्य योनि होती है, उसी प्रकार नाग योनि भी होती है, पहले नागों का स्वरूप मनुष्य की भांति होता था, लेकिन नागों को विष्णु की अनन्य भक्ति के कारण वरदान प्राप्त हो कर इनका स्वरूप बदल गया, और इनका स्थान विष्णु की शय्या के रूप में हो गया, नाग ही ऐसे देव हैं, जिन्हें विष्णु का साथ हर समय मिलता है, भगवान शंकर के गले में शोभा पाते हैं, सूर्य के रथ के अश्व नाग का ही स्वरूप हैं।

भय एक ऐसा भाव है, जो कि बली से बली व्यक्ति, बुद्धिमान से बुद्धिमान व्यक्ति की शक्ति को भी नष्ट कर देता है, कोई अपने शत्रुओं से भय खाता है, कोई अपने अधिकारी से भय खाता है, कोई भूत-प्रेतों से भयभीत रहता है, भयभीत व्यक्ति उन्नति की राह पर कदम नहीं बढ़ा सकता है, भय का नाश, भय पर विजय प्राप्त करने से ही संभव है और नाग देवता, सर्प देवता भय के प्रतीक हैं, इसीलिए इनकी पूजा का विधान हर जगह मिलता है।

आजकल नागपंचमी के पर्व को स्त्रियों का पर्व ही माना जाता है, जो कि बिल्कुल गलत है, नाग वास्तविक रूप से कुण्डलिनी शक्ति के स्वरूप हैं, इस विशेष पर्व पर छोटा सा प्रयोग कर व्यक्ति किसी भी प्रकार की भय बाधा को दूर कर सकता है, इसका विधान भी अत्यन्त सरल है।

नागपंचमी के दिन प्रातः जल्दी उठकर सूर्योदय के साथ सबसे पहले शिव पूजा सम्पन्न करनी चाहिए, शिव पूजा का विधान यदि मालूम न हो तो शिवजी का ध्यान कर शिवलिंग पर दूध मिश्रित जल चढ़ाएं और एक माला **'ॐ नमः शिवाय'** मन्त्र जप अवश्य करें।

नाग पूजा में साधक अपने स्थान पर भी पूजा कर सकता है, और किसी देवालय अथवा अपने गांव के स्थान पर भी पूजा सम्पन्न कर सकता है, एक सफेद कागज पर नागदेव का चित्र बनाएं, उस चित्र में विशेष बात यह होनी चाहिए कि नाग देव के मस्तिष्क पर दो आँखें तथा तिलक अवश्य बनाएं, जीभ दो हिस्सों में बंटी हो, इसे अपने पूजा स्थान में स्थापित कर सामने सिंदूर से रंगे चावलों पर **'नागराज मुद्रिका'** स्थापित करें और एक पात्र में दूध नैवेद्य स्वरूप रखें।

सर्वप्रथम अपने गुरु का ध्यान कर, अपनी भय-पीड़ा की शान्ति हेतु प्रार्थना करें, तत्पश्चात् नागदेव का ध्यान करें, कि–

''हे नागदेव! मेरे समस्त भय, मेरी समस्त पीड़ाओं का नाश करो, मेरे शरीर में व्याप्त पीड़ा रूपी विष को दूर करो, मेरे शरीर में व्याप्त विष मेरी रक्षा का कारण बने, न कि मेरी ही क्षति का।''

इसके पश्चात् नागदेव के चित्र पर सिन्दूर का लेप करें, तथा इसी सिन्दूर से अपने स्वयं के तिलक लगायें तथा सिन्दूर का लेप नागराज मुद्रिका पर भी करें, इसके पश्चात् दोनों हाथ जोड़कर निम्न मन्त्र का 21 बार जप करें–

मन्त्र

जरत्कारुर्जगद्गौरी मनसा सिद्धयोगिनी।
वैष्णवी नागभगिनी शैवी नागेश्वरी तथा।।
जरत्कारुप्रिया स्तीकमाता विषहरेति च।
महाज्ञानयुता चैव सा देवी विश्वपूजिता।।
द्वादशैतानि नमानि पूजाकाले तु यः पठेत्।
तस्य नागभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्।।

जब यह मन्त्र जप पूर्ण हो जाय तो नागराज मुद्रिका को अपने दांये हाथ में धारण कर लें और थोड़ी देर शान्त हो कर बैठ जायं तथा लगभग 15 मिनट तक गुरु मन्त्र का जप करते रहें, इससे भय का नाश होता है, और बड़ी-बड़ी बाधा से लड़ने की शक्ति प्राप्त होती है।

पूजन के पश्चात् नागदेव के सम्मुख रखे दूध को प्रसाद स्वरूप स्वयं ग्रहण करें, यदि यह दूध किसी अस्वस्थ व्यक्ति को पिलाया जाय, तो उसके स्वास्थ्य में दिन-प्रतिदिन अनुकूलता प्राप्त होती है।

यदि स्वयं भी किसी पुरानी बीमारी को दूर करना है अथवा परिवार के किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में उपाय करना है, तो यह प्रयोग 7 दिन तक करें, लेकिन पूजन से पहले अस्वस्थ व्यक्ति के नाम से संकल्प अवश्य लें।

नागराज मुद्रिका का प्रभाव इतना अधिक तीव्र रहता है, कि यदि आप प्रबल से प्रबल शत्रु के पास भी यह मुद्रिका धारण कर चले जाते हैं, तो वह शत्रु आपसे संयत व्यवहार ही करेगा, हानि देने को तो बात ही दूर रहती है, किसी विशेष कार्य पर जाते समय नागदेव का ध्यान कर, मुद्रिका अपने ललाट के मध्य भाग पर तीन बार स्पर्श कर, धारण कर रवाना हों तो कार्य सिद्धि निश्चित रूप से प्राप्त होती है।

साधना सामग्री-210/-

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

गुरु स्तवन

ॐ नमस्ते नाथ भगवन् शिवाय गुरुरूपिणे।
विद्यावतारसंसिद्धये स्वीकृतानेकविग्रह।।1।।

नारायणस्वरूपाय परमार्थैकरूपिणे।
सर्वाज्ञानतमोभेदभाविने चिद्घनाय ते।।2।।

स्वतन्त्राय दयाक्लुप्तविग्रहाय शिवात्मने।
परतन्त्राय भक्तानां भव्यानां भव्यरूपिणे।।3।।

विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनां।
प्रकाशानां प्रकाशाय ज्ञानिनं ज्ञानदायिने।।4।।

पुरस्तात् पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्यादुपर्यधः।
सदा सच्चितस्वरूपेण विधेहि भवदासनम्।।5।।

हे परम पूज्य नाथ! भगवन सद्गुरु रूप धारी शिव!! आपको नमस्कार!!! इस चराचर जगत में विविध ज्ञान-विद्या के उद्भव हेतु, सिद्धि हेतु आपने यह स्वरूप ग्रहण किया है, आप साक्षात् नारायण स्वरूप हैं, परमार्थ, सेवा, परमार्थ ध्यान ही आपका शुद्धतम श्री विग्रह रूप है, सम्पूर्ण अज्ञान रूपी अन्धकार दोष का भेदन करने वाले, चिद्घन स्वरूप आपको नमो नमः! आप परम स्वतन्त्र हैं, केवल शिष्यों, साधकों, जीवों पर कृपा, करुणा करने हेतु ही शरीर धारण किये हैं, स्वतन्त्र होते हुए भी प्रेमवश अपने भक्तों, शिष्यों के आधीन हैं, कल्याणों के भी कल्याण, मंगलों के भी मंगल, भव्यों के भी भव्य, आपके रूप को नमस्कार, आप ही विवेकियों के विवेक, विचारकों के विचार, प्रकाशकों के प्रकाश हैं, ज्ञानियों को ज्ञान देने वाले आप ही श्री स्वरूप हैं, बार-बार नमस्कार, आपको! आपका यह शिष्य हर दिशा में आपको हर ओर से प्रणाम करता है, केवल इतना ही निवेदन है, कि सदा मेरे चित्त को आसन बनाएं, और मुझे कृतार्थ करें।

जो साधक-शिष्य यदि किन्हीं कारणोंवश इस गुरु पूर्णिमा के अवसर पर उपस्थित न हो सके वे इस दिन सद्गुरुदेव एवं माताजी का पूजन कर मंत्र जप सम्पन्न करें। फिर निखिलेश्वरानन्द स्तवन या गुरु गीता का पाठ करें एवं अन्त में उपरोक्त स्तवन का पाठ कर गुरु आरती सम्पन्न कर प्रसाद वितरित करें। सम्भव हो तो गरीबों को भोजन करायें। इस प्रकार इस गुरु पूर्णिमा पर्व को उल्लास के साथ मनाते हुए सद्गुरुदेव से उनकी कृपा हेतु प्रार्थना करनी चाहिए।

आयुर्वेद सुधा

प्याज

नाम-हिन्दी-प्याज, कांदा, लाल प्याज। बंगाल-पेंयाज। मराठी- कांदा। गुजराती-डूंगरी।

वर्णन-प्याज साग-भाजी की तरह प्राय: सारे भारतवर्ष में उपयोग में लिया जाता है। इसलिए इसके विशेष वर्णन की आवश्यकता नहीं है। इसकी लाल और सफेद के भेद से 2 जातियाँ होती हैं।

गुण, दोष और प्रभाव-आयुर्वेदिक मत-आयुर्वेद के मत से प्याज चरपरी, बलकारक, कफपित्तनाशक, भारी, वृष्य, रोचक, स्निग्ध और वमन के दोष को हरने वाला है।

इस वनस्पति के अंदर कामोत्तेजक धर्म भी पाया जाता है। इसको कच्ची हालत में खाने से यह ऋतुस्राव नियामक भी होती है। जहरीले कीड़ों के काटने पर इसका रस मसलने से उसकी जलन मिट जाती है। इसके ताजा कन्द का रस गरम कर कान में डालने से कर्णशूल मिटता है।

इसका बाहरी उपयोग अर्थात् इसके रस को मसलने से बिच्छु के विष की जलन में शान्ति होती है।

प्याज का रस एक भाग, दो भाग शहद में मिलाकर हल्का पकावें। इसमें 10 ग्राम रोज खाने से मनुष्य की कामशक्ति भी बहुत बढ़ती है।

अगर किसी जगह के बाल उड़ गये हों तो उस जगह को खूब रगड़कर प्याज के रस को शहद में मिलाकर लगाने से नये बाल जमने लगते हैं।

प्याज के खाने से पाचन शक्ति बढ़ती है।

प्याज के बीज अत्यंत कामशक्ति वर्धक होते हैं। ठंडी प्रकृति वाले की कामशक्ति को ये बहुत बढ़ाते हैं।

यह आयुर्वेदिक औषधि है

कई लोग प्याज-लहसुन को वर्जित व त्याज्य समझते हैं, परन्तु इसके पीछे स्पष्टीकरण नहीं है, हां यह अवश्य है कि ऐसा कर वे प्रकृतिप्रदत्त आरोग्यकारी पदार्थों के लाभ से वंचित रह जाते हैं। गर्मी में प्याज शीतलता प्रदायक हैं, हृदय के लिये हानिकारक कालेस्ट्रॉल को कम करने वाला है, बलकारक और वीर्यवर्द्धक है। अधिकतर लोग कच्चा प्याज उसकी बदबू के कारण नहीं खाते। इसके लिये प्याज को काट कर उसमें थोड़ा नमक मिलाकर धोकर प्रयोग करें, इससे थोड़ी दुर्गन्ध कम हो जाती है। प्याज को नींबू के रस में या दही में मिलाकर भी खा सकते हैं। मुंह में प्याज की महक हटाने के लिए भोजन के बाद लौंग या इलायची खायी जा सकती है।

प्याज द्वारा कुछ सामान्य उपचार

अनिद्रा : यदि शीत ऋतु हो, तो प्याज को भून कर/उबाल कर खायें। गर्मी का मौसम हो तो कच्चे प्याज को दही/नींबू के रस के साथ रोज भोजन के साथ लें, तली चीजों का सेवन कम कर दें। कुछ दिनों में अच्छी नींद आने लगेगी।

अतिसार (दस्त लगाना) - इस रोग के लिये प्याज व दही के साथ चावल खायें। प्याज, नींबू, पोदीना एवं अदरक का रस निचोड़ कर उसमें सेंधा नमक, भुना जीरा और शक्कर डालकर एक गिलास पेय बनायें। इस प्रकार से दिन में तीन बार पीने से एक दिन में ही लाभ नजर आयेगा।

कान का दर्द - प्याज व लहसुन को बराबर मात्रा में लेकर उसका रस निकाल लें। इस रस में इतना ही सरसों का तेल मिलाकर पका लें और फिर छान लें। इस तेल की बूंदे कान में डालने से दर्द मुक्ति होती है।

कब्ज - कब्ज को सब रोगों की जड़ कहा गया है। एक प्याज काट कर उसमें चार-पांच लहसुन की कलियां मिलावें, थोड़ी काली मिर्च व काला नमक, व एक नींबू का रस निचोड़ कर दोनों समय इस प्रकार भोजन के साथ सेवन करें। नशीली चीजों का सेवन न करें, दही या छाछ का प्रयोग करें।

कोलेस्ट्रॉल - अधिक तेल, घी आदि का प्रयोग करने से हृदय रक्त में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे हृदय गति कई बार मंद पड़ जाती है। एक प्याज को चार-पांच लहसुन की कलियों के साथ सेंधा नमक व नींबू डालकर दोनों समय भोजन के साथ लेना लाभकारी है।

हृदय रोगों के लिये एक अन्य परीक्षित प्रयोग है। इसके लिये

20 ग्राम प्याज का रस, 10 ग्राम लहसुन का रस, 20 ग्राम शहद, 5 ग्राम अर्जुन की छाल के चूर्ण को मिला कर चाटें। (संभव हो तो थोड़ी मुक्तापिष्टी भी मिला लें) कुछ दिन में शीघ्र लाभ होगा।

प्रमेह – स्वप्नदोष, वीर्यपात आदि के उपचार के लिये पिसी हल्दी में दो गुना शहद और दस गुना मात्रा में प्याज का रस मिला कर रख दें। नित्य सुबह-शाम इस मिश्रण को दो-तीन चम्मच चाट लें। दो माह तक सेवन करने से परिणाम नजर आता है। इसके अतिरिक्त तेल, खटाई, तली वस्तुएं, चाय, पान, बीड़ी, जर्दा व नशे का प्रयोग न करें। रात्रि की अपेक्षा भोजन सूर्यास्त के पहले-पहले ही कर लें और भोजन में कच्चे प्याज का प्रयोग अवश्य करें।

बाल झड़ना – इसके उपचार हेतु 50 ग्राम प्याज के रस में 10 ग्राम आंवला चूर्ण, 10 ग्राम बहेड़ा चूर्ण, 10 ग्राम आम की गुठली का चूर्ण मिला लें। इसमें थोड़ा छाछ मिलाकर सिर में लगाएं। सूखने पर काली मिट्टी में छाछ मिलाकर सिर धोवें। बाद में ब्राह्मी आंवला तेल सिर में लगायें।

मुहांसे व झाईं – नींबू का रस, प्याज का रस, ग्लिसरीन, हल्दी चूर्ण इन सबको दस-दस ग्राम लेकर पेस्ट बना लें। रात को सोते समय चेहरे पर मलें। प्रातः मुंह धोकर चेहरे पर कपूर मिले हुए नारियल तेल को लगाएं, लाभ होगा।

वायु – वायु के कारण शरीर में कई लोगों को दर्द रहता है।

उपचार – प्याज का रस, लहसुन की कली और अरण्डी का तेल बराबर मात्रा में लेकर उसकी चटनी बना लें। इसे हल्की आंच पर भून कर उसमें नमक, काली मिर्च, जीरा, हींग मिलाकर इस चटनी को दोनों समय भोजन के साथ लें।

मासिक धर्म की रुकावट – असमय में रुका हुआ मासिक धर्म कच्चे प्याज को खिलाने से फिर जारी हो जाता है। प्याज का ताजा रस पीने से भी मासिक धर्म साफ होता है।

बाजीकरण – प्याज के रस में घी मिलाकर पीने से पुरुषार्थ बढ़ता है।

मंदाग्नि – प्याज को सिरके के साथ पका कर खाने से मंदाग्नि मिटती है।

खूनी बवासीर – प्याज का 4 भाग और मिश्री 1 भाग मिलाकर दिन में 3 बार पीने से बवासीर में लाभ होता है।

नेत्ररोग – प्याज का रस आँख में लगाने ने नेत्र पीड़ा मिटती है। प्याज के रस में शहद मिलाकर अंजन करने से नेत्र पीड़ा और नजला मिटकर आँख की ज्योति बढ़ती है।

वमन/उल्टी – कई बार भोजन ठीक से न पचने पर उल्टियां शुरु हो जाती हैं।

उपचार – प्याज, नींबू, पोदीना, अदरक का रस बराबर मात्रा में लेकर उसमें भुना जीरा, काली मिर्च, सेंधा नमक मिलाकर दो बताशे (शक्कर के) के साथ रोगी को चटावें। उल्टी रुक जायेगी।

गंज–सिर पर कहीं से बाल उड़ जाने को 'गंज' कहते हैं। गंज के स्थान पर प्याज का रस रगड़ते रहने से बाल दुबारा पैदा होने लग जाते हैं और बाल झड़ना भी बन्द हो जाते हैं।

अजीर्ण–लाल प्याज काटकर उस पर नीबूं निचोड़ कर भोजन के साथ खाने से अजीर्ण दूर होता है।

शक्तिवर्द्धक–एक चम्मच प्याज का रस, दो चम्मच शहद में मिलाकर चाटें।

स्वप्नदोष–दस ग्राम सफेद प्याज का रस, आठ ग्राम अदरक का रस, छः ग्राम शहद और तीन ग्राम गाय का घी मिलाकर रात्रि को सोते समय लेने से स्वप्न दोष नहीं होता।

गर्मी में तेल धूप एवं तापक्रम की अधिकता से लू (गर्म हवा) लग जाती है। इससे शरीर का ताप बढ़ जाता है, प्यास अधिक लगने लगती है, मुंह सूखा रहता है, घबराहट होने लगती है, दस्त लग जाते हैं, सिर दर्द होने लगता है।

लू से बचाव – लू लगे ही नहीं इसके लिये गर्मी में बाहर जाते समय जेब में एक प्याज रखें और दोनों समय भोजन में कच्चा प्याज व पोदीना खाना चाहिये। घर से बाहर जाते समय खूब पानी या छाछ पीकर जाना चाहिये।

लू लग जाने पर उपचार – यदि लू लग ही जाये तो रोगी पर निम्न उपचार किये जा सकते हैं –

१. चार कच्चे आम को पानी में उबालकर उसका रस निकाल कर उसका पना (शर्बत) बना लें। इसमें थोड़ा नमक, भुना जीरा, पिसा पोदीना मिलाकर पिला दें। लू का असर समाप्त हो जाता है, उल्टी भी बंद हो जाती है।
२. कटिवस्त्र के अलावा अतिरिक्त कपड़े निकाल दें। फिर पूरे शरीर पर पानी में कपड़ा भिगो कर फिरायें। शीतल व हवादार स्थान में लेट जायें, कूलर आदि हो तो अनुकूल है।
३. प्याज का रस हाथों की हथेलियों और पैरों के तलुओं पर मलें।
४. प्याज, पोदीने व नींबू के रस को नमक व शक्कर के साथ मिलाकर पिलाने से भी शरीर की क्षति पूर्ति होती है और यह जीवन रक्षक घोल की तरह कार्य करता है।
५. भूख लगने पर खिचड़ी के साथ दही और नींबू युक्त प्याज के टुकड़े खाने को दें।

(प्रयोग से पूर्व वैद्य की सलाह अवश्य लें)

शरीर स्वस्थ रखना हम सभी का कर्त्तव्य है

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है

गतांक से आगे

कई व्यक्ति प्रश्न करते हैं कि अन्य व्यायाम जैसे सैर, दंड-बैठक, मुग्दर, मल्ल-युद्ध, पश्चिमी देशों के खेलों आदि में क्या दोष है और योगासनों में ऐसी क्या विशेषता है, जो उसे ही जीवन का अंग बनाया जाए? इसका उत्तर निम्नलिखित है-

1. अन्य जितने भी व्यायाम हैं, वे मुख्यतः मांसपेशियों पर ही प्रभाव डालते हैं, जिससे बाहरी शरीर ही बलिष्ठ दिखाई देता है, अंदर काम करने वाले यंत्रों पर उतना प्रभाव नहीं पड़ता, जिससे व्यक्ति अधिक देर तक स्वस्थ नहीं रह पाता जबकि योगासनों से व्यक्ति की आयु लम्बी होती है, विकारों को शरीर से बाहर करने की अद्‌भुत शक्ति प्राप्त होती है और शरीर के सेल बनते अधिक व टूटते कम हैं।
2. अन्य व्यायाम व खेलों के लिए स्थान व साधनों की आवश्यकता पड़ती है। खेल तो साथियों के बिना खेले ही नहीं जा सकते, जबकि योगासन अकेले ही दरी व चादर पर किए जा सकते हैं।
3. दूसरे व्यायामों का प्रभव मन और इंद्रियों पर बहुत कम पड़ता है, जबकि योगानों से मानसिक शक्ति बढ़ती है और इंद्रियों को वश में करने की शक्ति आती है।
4. दूसरे व्यायामों में अधिक खुराक की आवश्यकता पड़ती है, जिसके लिए अधिक खर्च करना पड़ता है, जबकि योगासनों में बहुत कम भोजन की आवश्यकता पड़ती है।
5. योगासनों से शरीर की रोगनाशक शक्ति का विकास होता है, जिससे शरीर किसी भी विजातीय द्रव्य को अंदर रुकने नहीं देता, तुरंत बाहर निकालने का प्रयत्न करता है, जिससे आप रोग मुक्त होते हैं।
6. योगासनों से शरीर में लचक पैदा होती है, जिससे व्यक्ति फुर्तीला

शरीर के प्रत्येक अंग को सुडौल बनाना आवश्यक है
मन को हर समय जवान रहना आवश्यक है तो अपनाइये

और

भगाइये शारीरिक मानसिक रोग

योगासनों से शरीर की रोगनाशक शक्ति का विकास होता है, जिससे शरीर किसी भी विजातीय द्रव्य को अंदर रुकने नहीं देता, तुरंत बाहर निकालने का प्रयत्न करता है, जिससे आप रोग मुक्त होते हैं।

रहता है, शरीर के हर अंग में रक्त का संचार ठीक होता ळै, अधिक आयु में भी व्यक्ति युवा लगता है अक्षैर काम करने की शक्ति बनी रहती है। अन्य व्यायामों से मांसपेशियों में कड़ापन आ जाता है, शरीर कठोर हो जाता है और बुढ़ापा जल्दी आता है।

7. जिस प्रकार नाली की गंदगी को झाड़ू लगाकर, पानी फेंकर साफ करते हैं, उसी प्रकार अलग-अलग आसनों से रक्त की नलिकाओं व कोशिकाओं को साफ करते हैं, ताकि उनमें रवानगी रहे और शरीर रोगमुक्त हो। यह केवल योगासन क्रियाओं से ही हो सकता है, अन्य व्यायामों से नहीं। अन्य व्यायामों से तो ह्रदय की गति तेज हो जाती है और रक्त पूरी तरह शुद्ध नहीं हो पाता।
8. फेफड़ों के द्वारा हमारे रक्त की शुद्धि होती है। योगासनों व प्राणायाम द्वारा हम अपने फेफड़ों के फैलने व सिकुड़ने की शक्ति को बढ़ाते हैं, जिससे अधिक से अधिक ओषजनक वायु फेफड़ों में भर सके और रक्त की शुद्धि कर सके। दूसरे व्यायामों में फेफड़े जल्दी-जल्दी श्वास लेते हैं, जिससे प्राण वायु फेफड़ों मके अंतिम छोर तक नहीं पहुंच पाती, जिसका परिणाम होता है, विकार और विकार रोग का कारण है।
9. वर्तमान समय में गलत रहन-सहन व अप्राकृतिक भोजन के कारण पाचन संस्थान के यंत्रों का कार्य सुचारू रूप से नहीं चल पाता। उन्हें क्रियाशील रखने में योगासन बहुत सहायक सिद्ध होते हैं, जबकि दूसरे व्यायामों से पाचन क्रिया बिगड़ जाती है।
10. मेरुदण्ड पर हमारा यौवन निर्भर करता है। सारा रक्त संचार व नाड़ी संचालन, इसी से होकर शरीर में फैलता है। जितनी लचक रीढ़ की हड्डी में रहेगी, उतना ही शरीर स्वस्थ होगा, आयु लम्बी होगी, मानसिक संतुलन बना रहेगा। यह केवल योगासनों से ही सम्भव है।
11. दूसरे व्यायामों से आपको थकावट आएगी, बहुत अधिक शक्ति खर्च करनी पड़ेगी, जबकि योगासनों से शकित प्राप्त की जाती है, क्योंकि योगासन और धीरे-धीरे और आराम से किए जाते हैं, इन्हें अहिंसक और शान्तप्रिय क्रियाएं कहा जाता है।
12. अन्य व्यायामों से मनुष्य के चरित्र पर कोई खास प्रभाव नही पड़ता। योगासन स्वास्थ्य के साथ-साथ चरित्रवान भी बन जाते हैं। यौगिक क्रियाओं से मानसिक व नैतिक शक्ति का विकास होता है, मन स्थिर रहता है। मन के स्थिर रहने से बुद्धि का विकास होता है, सत्वगुण की प्रधानता होती है, और सत्वगुण से मानसिक शक्ति का विकास होता है। ये सब लाभ केवल योगासन और प्राणायाम से ही प्राप्त हो सके हैं।
13. हमारे शरीर में अनेक ग्रंथियां हैं, जो हमें स्वस्थ व निरोग रखने में महत्वपूर्ण कार्य करती हैं। इन ग्रंथियों का रस रक्त में मिल जाता है, जिससे मनुष्य स्वस्थ व शक्तिशाली बनता है। गले की थाइराइड व पैराथाईराइड ग्रंथियों से निकलने वाले रस पर्याप्त मा़ा में न होने से बालकों का पूर्ण विकास नहीं हो पाता और युवकों के असमय में ही बाल गिरने लगते हैं तथा शरीर में प्रसन्नता नहीं रहती। शरीर की विभिन्न ग्रंथियों को सजग करके पर्याप्त मात्रा में रस देने के योग्य बनाने के लिए योगासन पद्धति बड़ी कारगर है। अन्य व्यायामों का प्रभाव इस दिशा में नगण्य है।
14. शरीर के रोगों को दूर करने में, प्राणायाम और षट्कर्म राम-बाण का काम करते हैं। जब विजातिय द्रव्यों के बढ़ जाने से शरीर के अंग उन्हें बाहर निकाल पाने में समर्थ नहीं होते, तो रोग का आरम्भ होता है। इन विजातीय द्रव्यों को बाहर निकालने के लिए इन क्रियाओं का सहारा लिया जा सकता है और अपने आपको स्वस्थ तथा शक्तिशाली बनाया जा सकता है।
15. शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक विकास के लिए योग पद्धति सर्वोत्तम पद्धति है। इसका मुकाबला और कोई पद्धति नहीं कर सकती।

ध्वनि योग

स्थिति

पद्मासन या सिद्धासन लगाकर ज्ञान मुद्रा की स्थिति में बैठें। सिर का पिछला भाग, गर्दन और रीढ़ की हड्डी एक सीध में हो। कोहनियां थोड़ी मुड़ी हुई, आंखें हल्की बंद, चेहरे पर प्रसन्नता।

विधि

पहले कुछ क्षण श्वास को शांत कर स्वाभाविक स्थिति में लाएं। मन व चित्त को एकाग्र करें। लंबा गहरा श्वास भरें। श्वास को सहस्रार चक्र से भर मूलाधार चक्र तक ले जाएं। ॐ के उच्चारण को दो भागों में बांटना है। दोनों भागों में लय एक ही रहे। ध्यान को पूर्णतया अपनी ध्वनि पर केन्द्रित करें। अब स्वर में मधुरता लाते हुए आधे भाग में 'ओ' की ध्वनि मूलाधार चक्र से सुषुम्ना नाड़ी में छोड़ते हुए अनाहत चक्र तक काल्पनिक तार बनाते हुए आएं। यहां मुख को बंद कर 'म' की ध्वनि भ्रमर की तरह करते हुए सहस्रार चक्र तक ले जाकर पूरा श्वास छोड़ दें, इस ध्वनि को अधिक से अधिक लंबा करने का अभ्यास करें।

लाभ

यह नादयोग है, जो मन व नाड़ी संस्थान को शांत करता है। इससे एकाग्रता आती है और सुषुम्ना नाड़ी प्रभावित होती है। आज्ञा चक्र को जाग्रत करने में यह योग विशेष रूप से सहायता करता है।

ओम

26-07.22 or Any Sunday

Bhagyoday Sadhana

Rising Sun of Fortunes

Some years back as I stood in the small garden over-looking Gurudev's house, I saw a white ambassador pull over next to the gate and a middle aged man emerge from it something told me that he was a high-ranking government official. There was nothing odd about high-ranking officials, politicians and businessmen visiting Gurudev except that it was eleven in the night and time for Gurudev to call it a day. The harassed look on his face and his insistence however saw him into the house. I too followed.

Failing into Gurudev's feet he introduced himself and then started his tale of woes. It was clear that he was a very dedicated and honest official, yet according to him in spite of his achievements in the face of all odds, he had been superseded by his subordinates who continued to get promotions and important posts, while he was denied what was due to him. And this meant not just stagnation in status but also deprivation of pay perks.

Gurudev silently meditated on his words for sometime and when he spoke his voice was grave. "Your stars are not favouring you. Hard work won't get you anywhere. You better go in for **"Bhagyoday Sadhana."** It was a new world opening up for the officer as Gurudev elucidated the Sadhana in details and assured him of success. With the Yantra and rosary the officer returned home and it came as no surprise to me when a few weeks later he called on the phone to relate the joyous news that he had been given a double promotion and a very lucrative post. It sure was news for him but not for me, for this was not the first time I had seen this magic work.

And yet when I remember all those success stories, those sighs of reliefs, my mind also boggles at the cut-throat competition that has proved to be a boon for some but a bane for the majority of people, more so for the youth who are easily disillusioned once their dreams fade in the harsh glare of reality. And then they fall easy prey to drugs, drinks, terrorism and wrong company.

Or if it is a mature person who has been disfavoured by the stars he or she becomes depressed, worried, angry and frustrated leading to disharmony, loss of health, enmity and jealousy. There are very few who are lucky enough financially and otherwise to pursue their dreams; rest are condemned to a life of hard, back-breaking labour to provide for one's family. And the needs never seem to end except when one has breathed one's last. Yet this vicious cycle does not really end here, it goes on and on crushing other victims from on generation to the other and the next. Childhood bloom into youth and youth withers away into old age and then death, yet the dreams remain what they are-just dreams!

If hard work and honesty were everything then how come an unlettered man wallows in millions, the proud owner of luxurious houses and vehicles, while a very highly educated man can't save enough even to buy a small flat or a scooter? It's this discrepancy that leads one to look for the cause elsewhere - in the stars and the planets that can make or mar one's fortunes.

It's very common today to get horoscopes cast and natal charts studied but these exercises prove futile when it comes to remedying the evil influence of planets. Moreover there can be more than just baleful planets behind one's bad luck. Bad Karmas from previous births, wrong use of Tantra by adversaries, genetic drawbacks or even evil influence over the place where your home stands can be behind your failure to make it bit in life or fulfill your dreams. And

you don't know what competition and enmity can lead people to do-adopts ways to ruin one's life, use evil power and intentions to harm one and even hinder one's progress in life.

But anger or retaliation won't get you anywhere. There is a better and more potent way to ensure the rising of the sun of your fortunes and this Sadhana ensures no less than fourteen certain boons besides fulfilling any specific wish which you might have and which might not be covered by them. These are a healthy, handsome physique riddance from disease wealth and prosperity fearlessness and manliness property and vehicles, sons and daughters, beautiful spouse victory over enemies, prevention of untimely death, monetary gains, respect in the society, foreign travels, fulfilment in life and a peaceful end.

If you are severely lacking in any of these know it that the Gods of fortune are not favouring you and the best way of removing all obstacles from life is this Sadhana. Our Rishis were the first to recognise the fact that without nullifying the negative influences in life due to evil planets or other causes one cannot get rid of paucity, poverty and unfulfilment and if these are not remedied they can continue to haunt lifelong. for this they devised this wonderful Sadhana which, as I have myself experienced, if accomplished once in a year can ensure 365 days of success, fulfilment, peace and joy. That's the only way of enjoying life to the full. It's a divine gift for everyone, whatever your age, sex, caste or religion.

The best day for this practice is Sunday. You need a ***Bhagyoday Siddhi Yantra, consecrated Bhagyoday Mala and two Sukh-shanti Gutikas.***

Rise early in the morning at 4 o'clock. Take a bath and get into yellow dhoti/saress. The worship place must be cleaned and a yellow worship-mat spread. Sit on it. Place a wooden seat before yourself and cover it with a yellow cloth. On it place the Yantra and Gutikas in a copper plate. On the right side of the plate place the Guru's picture. Light a ghee lamp and incense.

Pavitrikaran (consecration of the self)

Take water in the cup of your right hand and chant ***Om Apavitrah Pavitro Va Sarvaavasthaam Gatopi Vaa Yah Smaret pundareekaaksham Sa Baahyaabhyantar Shuchih.***

Sprinkle this water over your body.

Aachman (inner consecration)

Take water in a copper spoon and chant Om **Amritopastarannmasi swaha.** Drink the water and fill the spoon again and chant **Om Amritaapidhaanamasi Swaha.** Take a spoon full of water and chant - **Om Satyam Yashah Shreermayi Shreeh Shrayataam Swaha. Drink it.**

Put your right hand on your head and chant ***Chidroopinni Mahaamaaye Divya Tejah Samanvite. Tishtth Devi! Shikhaamadhye Tejo Vriddhim Kurushva Me.***

Take some rice grains in the right hand. While chanting the following verses throw them in all directions.

Om Apsarpantu ye Bhootaah Te Bhootaa Bhoomisansthitaah. Ye Bhootaah Vighnakartaaraste Nashyantu Shivaagyaa. Apkraamantu Bhootaani Pishaachaah Sarvato Disham. Sarveshaamvirodhen Poojaa Karma Samaarabhe.

Thereafter pound hard on the ground with your left heel. Next make a mark of vermilion on your forehead chanting thus —

Kaantim Lashmeem Dhritim Soukhyam Soubhaagyamtulam Dhanam Dadaatu, Chandanam Nityam Satatam Dhaarayaamyaham.

Take water in the hollow of right palm and pledge thus - I (name) am accomplishing this Bhagyoday Sadhana for a successful, wealthy and healthy life.

Chant one round of the Guru Mantra or simply pray to the Guru for success. Next chant 51 rounds of the under given Mantra with the ***Bhagyoday Mala.***

MANTRA

Om Ayeim Soubhaagya Siddhim Rog Dosh Naashay Phat.

After the ritual place the Yantra, rosary and the two Gutikas in the worship place or at your work place. Let them remain there for 11 days after which disperse them in a river or pond.

While doing the Sadhana do not let your spirit flag. Chant the Mantra with full devotion and sure enough positive results shall begin to accrue within some time.

Sadhana Samgri- 550/-

Wealth Unlimited

Any Amavasya or Sunday

KUBER SADHANA

Kuber is said to be the Lord of all the treasures that are on earth. Not just this he even rules over the riches that lie buried and unclaimed inside the surface of our planet. He is chiefly worshipped and propitiated for quick financial gains, unexpected gain of money through lotteries etc and a prosperous business. Even Lord Vishnnu believes Kuber to be the basis of gain of unlimited wealth and prosperity.

The great Tantra expert Ravan when he wished to convert Lanka into a city of gold sought the help of Kuber. In fact Kuber was the true owner of Lanka and the magnificent city came into existence due to his powers. Kuber was in fact the brother of Ravan, but in his early childhood he took to worship of Lord Brahma through whose grace the became the ruler of all wealth on earth.

All ancient texts encourage the use of kuber Sadhana for the gain of wealth. In fact several texts state that true and lasting prosperity is possible only through the grace of Kuber.

There are three chief gains from Kuber Sadhana. Firstly Kuber is pleased and blesses one with material success and wealth. Secondly the chances of coming into wealth unexpectedly and suddenly through lotteries etc increase. Thirdly no matter how much one spends, money keeps flowing in provided of course one uses the wealth for constructive purposes and not for destructive or antisocial activities.

It might well seem to be a simple and short Sadhana but its effect is simply amazing if one tries it with true belief and faith. One can even try this ritual with one's spouse.

It is best to try this ritual on **Amavasya** day (day preceding the moonless night) **or a Sunday**. Rise early morning well before sunrise. Have a bath and wear clean yellow clothes. Then sit on a yellow mat facing North. Cover a wooden seat with yellow cloth. In a plate draw a Swastik with saffron. On it make a mound of rice grains. On the rice grains place a **Kuber Yantra**. Around the Yantra place **four Mahalakshmi Phals**. Then light a ghee lamp with four wicks.

16	1	14	7
6	4	5	3
15	9	2	8
15	11	7	13

Take a plate and in it with vermilion draw the undergiven Yantra of numbers. Place it on the right side of the plate containing the Kuber Yantra. Then offer prayers to Lord Ganpati chanting **Om Gam Ganpataye Namah** five times. Thereafter chant one round of Guru Mantra and pray to the Guru for sucess in the Sadhana.

Thereafter chant thus meditating on the form of Kuber.

Manuj Baahya Vimaanparishtitim
Garud Ratna Nibham Nidhi Naayakam.
Shiva Sakhaa Mukutaadi Vibhooshitam Var
Gade Dadhatam Bhaj Tundilam.

Then with a **rock crystal (sfatik) rosary** chant 8 rounds of the following secret Mantra —

Om Yakshaay Kuberaay Dhan
Dhaanyaadhipataye Akshaya Nidhi
Samriddhim Me Dehi Daapay Swaahaa.

After this make 108 oblation with ghee in the holy fire (Yagna fire) eacth time chanting the above Mantra. After Sadhana tie all worship articles rosary, Yantra and the four Phals in a yellow cloth and place it in the place where you keep your money or valuables at home. It is said that if one tries this Sadhana on each Amavasya every month for a year then one attains to life long prosperity and affluence.

Sadhana Articles : 600/-

11-12 -13 जुलाई 2022

गुरुपूर्णिमा महोत्सव साधना शिविर

शिविर स्थल : रामाधीनसिंह उत्सव भवन, बाबूगंज निकट आई.टी. चौराहा, **लखनऊ** (उ.प्र.)

आयोजक मण्डल - अजय कुमार सिंह-9415324848, डी.के. सिंह-9336150802, सन्तोष नायक-9125238612, जयंत मिश्रा-7008259050, पंकज दुबे-9450156879, दान सिंह राणा-9415766833, विजयसिंह पिंकू-9450434195, सन्तोष सिंह अनू-7390051177, अरुणेश गुप्ता, मधुलिका श्रीवास्तव, रश्मि श्रीवास्तव, हरीशचन्द्र पाण्डेय, टी.एन. पाण्डे, मनीष पारुल श्रीवास्तव, निधि नवनीत शर्मा, अवधेश श्रीवास्तव, अनिल श्रीवास्तव, मनीष शेखर, कल्पना शुक्ला, डॉ. प्रवीण सिंह, सुनील कुमार मल्होत्रा, स्वाती त्रिपाठी, एस.के. वासने, कुशा मिश्रा, शैलेश टंडन, कृष्णा सिंह राठौर, अजीत सोनकर, आशीष सिंह राठौर, उर्मिला राय, शरद यादव, गायत्री देवी, जगदीश पाण्डे, अवधेश शर्मा, जितेन्द्र साहू, अनुराग साहू, अमित वर्मा, रामप्रकाश, मोनू, के. जितेन्द्र कुमार, महेश कुमार अग्रवाल, रामप्रकाश रावत, उन्नाव-सुरेश सिंह, अमित सिंह, सूरजसिंह, बृजेश सिंह, धर्मपाल सिंह, कानपुर-शैलेन्द्र सिंह, सुरेश पाण्डेय, अशोक सोनी, श्रीकान्त गुप्ता, अभिषेक त्रिपाठी, राहुल यादव, राकेश त्रिपाठी, कायमगंज-अरुण कुमार शाक्य, रमाकान्त, रागिनी भारद्वाज, सुनील पाल, सन्तोष शर्मा, महेश वर्मा कामोद, प्रदीप शाक्य, अन्नू शर्मा, दयाराम शाक्य, बबेरू-नरेन्द्र अवस्थी, सुनील मिश्रा (राजा), मणिशंकर गुप्ता, श्रवण सुभरे, समरशेन सिंह, लखीमपुर खीरी-सन्तोष सिंह, सुशीला सिंह, आशू सिंह, तारासिंह चौहान, तुषार सिंह चौहान विजयसिंह, मीना सिंह, सुल्तानपुर-रवनजय मिश्रा, अशोक कुमार पाण्डेय, पवन तिवारी, महंत तिवारी, राजेश मिश्रा, गजरौला-अमरोहा-पुष्पेन्द्रसिंह, खिलेन्द्र सिंह, विकास अग्रवाल, नितिन अग्रवाल, कृष्णा कुमार मिश्रा, श्यामवीर सिंह, लाटघाट-आजमगढ़-डॉ. सुमन प्रसाद चौरसिया, दुर्गेश प्रसाद मौर्या, व्यास मिश्रा, हेमन्त दुबे, दिनेश सिंह

17 जुलाई 2022

शिवशक्ति महामृत्युंजय साधना शिविर

शिविर स्थल : महाकाल परिसर, मनोरमा गार्डन, हीरा मील की चाल, प्रकाश पेट्रोल पम्प के सामने, **उज्जैन (म.प्र.)**

आयोजक-जगदीश चन्द्र मकवाना-8989573008, रूपेंद्र चावड़ा -9755896505, सुरेश खत्री-9300060104, 9340040767, डी.एन. नीमे, एस वी एन त्रिवेदी, दिलीप सेन, बंडू पद्म, सरिता गिरी, अमित निखिल, अमित हरियाणी, हिमांशु नागर, सुभाष चंद्र खत्री, शारदा दीदी, चिंतन दीदी, अनिल कुंभारे, रूपेश साहू, अभिषेक देवड़ा, डॉ. मानसी सोलंकी, नोवेंदू बारस्कर, बागसिंह पंवार, रामनाथ सिंह देवड़ा, रवि सोलंकी, विष्णु तेजपुरी, डॉ. हितेश नीमा, डॉ. मनीष कुरील, गोपाल वशिष्ठ, दिलीप सेन, विरल सोनी, सुनील सोनी, श्यामलाल जी, आकाश वर्मा, नारायण जी चारण, जगदीश चन्द्र तंवर, विजय दनगाया, सुनिल पडियार, शांति लाल पाटीदार, सीताराम पटेल, भवानीराम वर्मा, दिनेश कतिजा, रोहित लववंशी, मनोज भिलाला, विमल उपड़िया, संजय निंगवाल, मुकेश भूरीया

24 जलाई 2022

श्रीसद्‌गुरुदेव कृपा युक्त सर्व मनोकामनापूर्ति साधना शिविर

शिविर स्थल : मां कमला उत्सव हॉल, मीठापुर बस स्टैण्ड, बाईपास मोड़, विग्रहपुर, **पटना (बिहार)**

आयोजक मण्डल - इंद्रजीत राय-8210257911, 9199409003, महेन्द्र शर्मा-9304931127, संजय सिंह-9934682563, टुनटुन यादव- 99050 22385, अनुराग शर्मा-7834999000, मुन्ना सिंह, पंकज, दिव्यांश- 9608241286, मनोज मिश्रा, कौशलेन्द्र प्रसाद, डॉ. संजय जी, डॉ. मधुरेन्द्र कुमार, रंजनकुमार गुप्ता, खगौल-तारकेश्वर, एकंगर सराय-मुकेश विश्वकर्मा, अरविन्द, गया-उमाशंकर यादव, सुरेश पण्डित, रविन्द्र कुमार, निखिल, धर्मेन्द्र कुमार, औरंगाबाद-कामता प्रसाद सिंह, धनंजयसिंह, कुदरा-शिवशंकर गुप्ता, आ.सि.साधक परिवार बिदुपुर के समस्त गुरु भाई-बहन, आ.सि. साधक परिवार मुजफ्फरपुर-पंकज कुमार, रजनी रंजन त्रिवेदी, रमन झा, प्रकाश कुमार, धीरज झा, धर्मेश, आ.सि. साधक परिवार दरभंगा-अभय कुमार सिंह, ताजपुर-प्रभुजी, लगनिया-संजीव चौधरी, राजकुमार दास, मोतिहारी-सुरेश भारती, रामेश्वर भगत, हत्था कलौंजर -अरुण कुमार सिंह, रामसियार भंडारी, आ.सि. साधक परिवार बेगुसराय, अनिल पासवान, ढोली-प्रवीण कुमार, पुसा-प्रेमलाल पासवान, परबत्ता-अनिरुद्ध झा, आ.सि. साधक परिवार मुरलीगंज के समस्त गुरु भाई-बहन मुंगेर-निवास सिंह, मंजु देवी, तोई मजरोई (बरबीगाह)-तरुण कुमार प्रभाकर, विपिन कुमार सिंह, डॉ. रमाकान्तसिंह, पप्पूजी, बरबीगाह-देवेन्द्र कुमार, सुभाष पण्डित, डॉ. बिरमनी कुमार, प्रवेश दास, सुधीर कुमार, प्रभानन्द पासवान, नवादा-दिनेश कुमार पण्डित, नादिर गंज (राजगीर) -बारहन विश्वकर्मा, रामअवतार चौधरी, शम्भूजी, शेखपुरा- प्रवीण कुमार और चंदन, अ.सि. साधक परिवार लक्खीसराय के समस्त गुरु भाई-बहन, बाढ-प्रह्लाद सिंह, मोकामा-रोजकानंद बत्स, कटिहार-शैलेष सिंह, मधेपुरा-आनंद निखिल, पुरनिया-दयानंद शमी, आदित्य, भागलपुर- शिवानंद झा, सुनील यादव

30 जुलाई 2022

श्रीसद्‌गुरुदेव कृपा युक्त सर्व मनोकामनापूर्ति साधना शिविर

शिविर स्थल :

अग्रवाल भवन कमल पोखरी, **काठमाण्डू (नेपाल)**

आयोजक मण्डल - 977-9840016498, 977-9841025067 (रितेश कार्की), 977-9801818785 (सुभाष कार्की), गोविन्द नेपाल, विश्व कुमार गोर्खाली, विष्णु नेउपाने, रमेश राजबाहक, नरेन्द्र शाह,

मनोज शर्मा, दमबहादुर घले, यशोदा कार्की, अनिल अर्याल, मेलिना बुढाथोकी, राम लाखन शर्मा, पुष्पलता तिवारी, राकेश कुशाह, नरेन्द्र रंजन दास, ओमनारायण शर्मा, राजीव रंजन दास, सीता शर्मा, माला नेउपाने, शान्ति श्रेष्ठ, बेखानारायण शाही, हीरा बहादुर श्रेष्ठ, शम्भु प्रसाद ज्ञवाली, रंजन राज अर्याल, श्याम शर्मा, सुदर्शन कुंवर, अम्बिका भट्टराई, सुबिन्द्र मालाकार, मंगेश चन्द्र राई, कामोद चौधरी, गौरव राम तिमील्सिना, समझना श्रेष्ठ, किरणसिंह ठकुरी, दिनेश राईगाई, आशीष रेग्मी, आनन्द कर्ण, विष्णु श्रेष्ठ, बैकुण्ठ मुल्मी, प्रकाश गौतम, हेमन्त रिजाल, सूर्यतिवारी, कृष्ण श्रेष्ठ, सुबिन अर्याल, सन्दीप रिमाल, नारायण अर्याल, अनन्त जि., अनुष सिंह, अशोक राजबन्शी, घनश्याम, जयन्ती खनाल, पबित्र सापकोटा, प्रविन ठाकुर, सालीकराम पोखरेल, सम्राट थापा, नबिन पुडासैनी, प्रकाश जि., शान्ति खड्का कार्की, गीता कार्की, आरती गुप्ता

31 जुलाई 2022

दस महाविद्या साधना शिविर

शिविर स्थल :

रोज पार्टी पैलेस, जोगी कुटी, बुटवल (नेपाल)

आयोजक मण्डल - महेन्द्र शर्मा-9857042642, सुधिर क्षेत्री-9857029745, सन्तोष केसी-9847027823, बाबुराम आचार्य-9847024228, गोविन्द चौधरी-9857048824, सन्तराम चौधरी-9847051680, जागेश्वर चौधरी-9847078335, पंचराम चौधरी, काशी चौधरी, नयन सिंह चौधरी, विष्णु पाण्डे, माधव पोखरेल, पुष्पा थापा- 9847078569, केश कुमारी चौधरी, भगवती चौधरी, मुना पढत, भगवती तिवारी, निर्मला पुन, पुष्पा देवी पोखरेल, सुलोचन ढकाल, मनीष ढकाल, शर्मिला ढकाल, दुर्गा देवी अधिकारी, शेषराम गुप्ता, कमला विष्ट, गिरेन्द्र शाही, तिला भण्डारी, लक्ष्मी पछाई एवं मां भगवती नारायण सिद्धाश्रम साधक परिवार नेपालगंज, नारायण भुसाल निखिल चेतना केन्द्र अस्नैया

7 अगस्त 2022

सर्वत्र जीवन उन्नति प्रदायक
भगवती भुवनेश्वरी साधना शिविर

शिविर स्थल : उत्सव महेश्वरी समाज, जनोपयोगी भवन, अल्फ़ा सिनेमा वाली रोड, विद्याधर नगर थाने के सामने, जयपुर (राजस्थान)

आयोजक मण्डल–रघु शर्मा-9351508118, कैलाश चन्द्र सैनी-99284 02426, सत्यनारायण शर्मा-9352010718, पूरणमल सैनी-7737588044, अनिल शर्मा-9414467062, महावीर टेलर-93140 76003, सुरेश चौधरी-9829087426, दामोदर शर्मा-9828866969, गोपाल कुमावत-9982204583, शंकर सिंह नरूका-8058496254, धनुषधारी उपाध्याय -9829189384, दीनदयाल सैन-9636654386, राजेन्द्र टेलर-81044 81607, डॉ. दीपक टेलर-8233573490, कल्याण सहाय शर्मा, रामलाल चौधरी-9351889052, सुभाष पारीख-9161874006, सौरभ शर्मा-9461973963, महेश चौधरी-9414922770, ब्रजमोहन शर्मा-99292 20055, राजेन्द्र पारीख-9829620621, सुनाराम सैनी-9314074515, किशन सैनी-9351307189, बाबुलाल शर्मा-9950704254, ओमप्रकाश कुमावत-9351414123, चन्द्रप्रकाश सैनी-7737683920, मदनलाल सैनी-9314801912, भगवान सहाय शर्मा-9314930879, नाथुलाल चौधरी-9828182098, कजोड़मल सैनी-8875555955, जितेन्द्र सैन-9950254357, मांगीलाल-9828284321, पुखराज प्रजापति-87699 63427, डॉ. धीरेन्द्र सिंह सोलंकी-93522 40065, हरिसिंह चौधरी-9829034361, एडवोकेट मीनाक्षी पारीख-8696089300, शंकरलाल सैनी-9785810909, रत्न गुप्ता-96368 86554, रामावतार प्रजापत-9403070988, नितेश अग्रवाल-89478 32871, चन्द्रसिंह ओला-9001482203, बजरंग लाल गावड़िया-9929677699, गुमान सिंह (गुढ़ा गौड़जी)-9928267353, धर्मेन्द्र शर्मा-9694659167, राजेन्द्र यादव-8385947615, बनवारी कुमावत-9351437497, कैलाश चन्द्र सैनी-9414055123, सूरज गोस्वामी-9571632326, कैलाशचन्द्र प्रजापति-9352516599, जगदीश चौधरी-9694333339, हुकमचन्द्र शर्मा-9314873617, मोहनलाल शर्मा-9214000778, सुरेश शर्मा-95874 51923, गंगापुर सिटी–ओमप्रकाश शर्मा-8890606832, तरुण, पवनकुमार सैन, मोहनलाल सैनी, सरोज सैनी, लक्ष्मीनारायण स्वामी, रामसिंह, रिया अग्रवाल, रामवतार सैनी, रमेशचन्द्र कुमावत, राजेन्द्र कुमावत, श्रवण कुमार शर्मा, संजय शर्मा, बाबुलाल सैनी, बाबुलाल कुमावत, चित्तौड़गढ़–राजेन्द्र वैष्णव, भगत कुमार वैष्णव, गोपाल वैष्णव, अजमेर–सुशीला देवी, उदयपुर–बंशीलाल मैनारिया, लक्ष्मण माली, परम शिवम शर्मा, चम्पालाल लुहार, नानालाल माली, लोगरमल माली, रमेश वैष्णव, राकेश अग्रवाल, शंकर लाल रावत, रतन लाल सेनी, पुष्कर–रतन, सिद्धाश्रम साधक परिवार महुआ–शिवराम मीणा, दिलीप कुमार सैन, मंगलचंद सैनी, आलोक, अरुण श्रीवास्तव, पवनसिंह चौहान, भिवाड़ी–रमेश राठौर, विनोद जैन, राजा सैन (भरतपुर), रामरतन शर्मा, जीतू मीणा, राजेश गोयल, गजानन्द प्रजापत, सरिता शर्मा, मुरारी लाल शर्मा, रमेश्वर यादव, रेखा यादव, रामबाबु सैनी, विनोद सैनी, आशीष व्यास, ताराचन्द्र (कविता जांगिड़), नन्दकिशोर भाटिया, सज्जन सिंह, विजय शास्त्री (नारनोल), नन्द किशोर शर्मा, जितेन्द्र सोनी, दिनेश सोनी, रामप्रकाश शर्मा, प्रेमप्रकाश शर्मा, कृष्णकान्त शर्मा, विजय शर्मा, पुरुषोत्तम शर्मा, अपर्णा गुप्ता (कुण्डगांव), उम्मेद शर्मा (खण्डार), विमलेश शर्मा (खण्डार), गौरव शर्मा, दीनदयाल शर्मा (करणपुर), सुरेश सोनी, मुकेश सोनी, सुरेश जोशी, रामस्वरूप मीणा, गजानन्द शर्मा, रजनीकान्त शर्मा, रामावतार प्रजापत-9403070988, नितेश अग्रवाल-8947832871, चन्द्रसिंह ओला-9001482203, बजरंग लाल गावडीया-9929677699, गुमान सिंह (गुढ़ा गौड़ जी)-9928267353, कृष्ण कुमार-9828206898 मनकेश मीणा, नेमी चन्द सैन (रोड नं. 17), कुलदीप जोशी, मुकेश-सुमन (कोटा), प्रमोद जी व्यास (कोटा), मुकेश सारस्वत (भीलवाड़ा), कृष्ण कुमार (गुढ़ा गौड जी), भागवत सोनी

15 अगस्त 2022

गुरु साधना शिविर

शिविर स्थल :

जिजाऊ गार्डन, दाताळा रोड, चंद्रपुर (महाराष्ट्र)

आयोजक मण्डल-चन्द्रपुर-वासुदेव ठाकरे-9764662006, पंकज घाटे-7620862677, वतन कोकास-9422114621, विलास खांडरे-9922775530, सुनिल आखाडे-9421717359, अजय वांढरे- 94231 17876, प्रविण नागरकर-9766019983, पवन कांडलकर-9860331210, विजय जैस्वाल-9421724202, अशोक जानवे, अजय कुरानकर, राहुल सोनटक्के, नरेश गिरी, नरेश सोनकुसरे, कुलदीप ढोके, अरुण रहांगडाले, अजय डारलींगे, श्रीकांत बावणे, शरद मडावी, संजय वरभे, पंकज नागरकर,

पुंडलिक निंदेकर, सुनिल मांउवकर, सचिन डोंगरे, सौ. जिजाबाई, प्रविण डफाडे, वामण श्रिरसागर, ओम वैद्य, दिगांबर कुरानकर, राम सोनकर, राजेंद्र वैद्य, राजु नागरकर, **बल्लारपुर**-साई विलास बासनकर, **वडसा**-डॉ. रूपेश सक्सेना, **कुरखेडा**-मनीष शर्मा, **ब्रह्मपूरी**-प्रा. केळझरकर, हेमंत माळवे, **नागपुर**-किशोर वैद्य-9371710599, छत्रपालसिंग गौर, आकाश गुप्ता, गुलाबसिंह बेस, गणेश भोयर, **भंडारा**-देवेन्द्र काटेखाये-7744946669, नरेंद्र काटेखाये, तिलकचंद कापगते, चंद्रकांत खंडाईत, **वर्धा**-चंद्रकान्त दोड-83790808067, शिवा गव्हाणे, आकाश बुरले, धीरज वाघाडे, हरीश अनावडे, राजेश बावणे, अनिकेत उरकुडे, अर्पित कोतटकार, **गडचिरोली**-दल्लुराज उईके-9422615423, नेताजी कुणघाळकर, उत्तम पिंपरे, पतिराम मडावी, अरविंद पेद्दीवार, विजय कुमार राम, सिकंदर दुर्योधन, **बालाघाट**-नरेन्द्र बोम्परे-9406751186, सुरेश रावते, संतोष परिहार, अखिलेश श्रीवास्तव, कृष्णकुमार ठाकरे, **यवतमाळ**-श्रीकांत चौधरी-9822728916, विनोद कापसे-9421852897, देवांशु दीपक येण्डे, सचिन इंगळे, नंदकिशोर भागवत, कैलाश शेबे, राजेश मैदमवार, विनायक निवल, **अकोला**-राजेश सोनोणे-9823033719, रविंद्र अवचार-9423468059, भास्कर कापडे, शाम दायमा, पुंजाजी गावंडे, देशमुख गुरुजी, विष्णु जायले, **अमरावती**-रोहित काले-8554068558, हरीश गिरी, ललित भेंडेकर, **गोंदिया**-डी.के. डोय-9226270872, संजय पिल्लारे, सुरेंद्र लिल्हारे, कमलजी देवेंद्र देशमुख, पांडूरंग पिल्लारे

19 अगस्त 2022

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव साधना शिविर

शिविर स्थल : **लेमन ट्री प्रीमियर, नियर इस्कान गेट, नागेश्वर रोड,** द्वारका (गुजरात)

सम्पर्क-हरेश भाई जोशी-7016108433, सुनील भाई सोनी-9925555035, हेमन्त भाई-9426285578, चिराग माहेश्वरी-9725323930, विजय भाई पटेल- 99251 04035, विवेक कापड़े-7984064374, जयनीश पानवाला-7984248480, हितेश भाई शुक्ला-7048171555, पी.के. शुक्ला-9426583664, विजयनाथ साहनी-9898032172, श्यामलाल राजपूत-9327648601, विजयालक्ष्मी बेन-8401763630, प्रमीत मेहता -7990980150, प्रग्नेश भाई (डाकोर)- 9904922935, राजेश अग्रवाल (राजकोट)-9824391747, धवल भाई (द्वारिका)-98984 90019, दीपेश गाँधी-886612400, देवेन व्यास- 95588 07927, रमेशभाई तम्बतकर -7770872022, अतुल भाई जानी (सुरेन्द्र नगर)-8469334185

21 अगस्त 2022

भुवनेश्वरी साधना शिविर

शिविर स्थल : शिक्षण संगीत आश्रम, स्वामी श्रीवल्लभ दास मार्ग, निअर गुरुकृपा हॉटल, प्लॉट नं. 6, सायन (पूर्व), **मुम्बई**

(सायन स्टेशन से 5 मिनट की दूरी पर)

आयोजक मण्डल - तुलसी महतो-9967163865, डॉ. संतलाल पाल-97680 76888, यशवंत देसाई-9869802170, नागसेन पवार -9867621153, अजय मांचरेकर, मानव, पीयूष, सुनील साल्वी, श्रीनिवास, गुरु, रोहित शेट्ठी, मनोज झा, राकेश तिवारी, हमप्रसाद पाण्डे, बुद्धिराम पाण्डे, गंगा, जिया, सीता, सोनू, दिलीप झा, उपाधे, पूर्णिमा (नेपाल), प्रकाश सिंह, संजय गायकवाड़, गोरखनाथ, बसन्ती, पीताम्बर (नेपाल), रामेश्वर, अनयसिंह, जी.डी. पाटिल, रवि पाटिल, मोहनी सैनी, हरिभाई विश्वकर्मा, सुहासिनी दयालकर, गायत्री दयालकर, अजय कुमार सिंह, प्रवीण राय, वीरेन्द्र, श्यामसुन्दर, भावप्रसाद पाण्डे, रवि साहू, राकेश तिवारी, भाव प्रकाश, निर्मल कुमार, राघवेन्द्र प्रताप, प्रवीण भारद्वाज, प्रीतम भारद्वाज, संतोष अम्बेडकर, राजकुमार मिश्रा, अनीता हंसराज भारद्वाज, अरविन्द अरोड़ा, राहुल पाण्ड्या, विवेक पवार, गीता, ममता, राजेश उपाध्याय

28 अगस्त 2022

भगवती भुवनेश्वरी साधना शिविर

शिविर स्थल :

राँची (झारखण्ड)

दुख का कारण

एक व्यापारी था, वह ट्रक में चावल के बोरे लिए जा रहा था। तभी एक बोरा खिसक कर सड़क पर गिर गया....

कुछ चींटियां आयीं और चावल के लगभग 10-20 दाने ले गयीं, कुछ चूहे आये और लगभग 100-150 ग्राम चावल के दाने खाये और चले गये, कुछ पक्षी आये और चावल के थोड़े से दाने खाकर उड़ गये, कुछ गायें आयीं और 2-3 किलो चावल के दाने खाकर चली गयीं। एक मनुष्य आया और वह चावल का पूरा बोरा ही उठा ले गया।

अन्य प्राणी पेट के लिए जीते हैं, लेकिन मनुष्य तृष्णा में जीता है। इसीलिए इसके पास सब-कुछ होते हुए भी वह सर्वाधिक दुखी है।

आवश्यकता पूरी होने के बाद इच्छा को रोकें, अन्यथा यह अनियंत्रित बढ़ती ही जायेगी और दु:खों का कारण बनेगी।

पालमपुर (हि.प्र.) में आयोजित साधना शिविर के दृश्य

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 June, 2022
Posting Date : 21-22 June, 2022
Posting office At Jodhpur RMS

RNI No. **RAJ/BIL/2010/34546**
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2022-2024
Licensed to post without prepayment
Licensed No. RJ/WR/WPP/14/2022
Valid up to 31.12.2024

माह : जुलाई एवं अगस्त में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
21 **जुलाई**
25 **अगस्त**

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)
09-10 **जुलाई**
13-14 **अगस्त**

प्रेषक –
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039, 0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002